जापु साहिब

विचार व्याख्या

दुकालं प्रणाशी दिआलं सरूपे।।
सदा अंगसंगे अभंगं बिभूते।।

डॉ. मनजीत कौर

੧ੳ

जापु साहिब विचार व्याख्या

डॉ. मनजीत कौर

D:\Manjeet Kaur\Jaap Sahib 2nd Book\Jaap Sahib Vichar Vyakhya Message

जापु साहिब : विचार व्याख्या

लेखिका : डॉ. मनजीत कौर

2/104, जवाहर नगर, जयपुर – 302004 (राज.)

दूरभाष : 0141-2650370

मोबाइल : 99297 62523

ई–मेल : drkaurmanjeet@rediffmail.com

प्रकाशक :

स. भुपिन्दर सिंह

डॉ. मनजीत कौर

प्रथम संस्करण : जनवरी, 2012

मूल्य : 175.00 रुपये

मुद्रक: मलिक प्रन्ट्रिस

सीविल लाईन्स, लुधियाना

मो. : 98141 27582

੧ਓ वाहिगुरू जी की फतह।।

गुरमति ज्ञान

हिंदी मासिक

फोन : 0183-2553956-57-58-59

एक्सटेंशन नंबर | संपादकीय विभाग 304 | वितरण विभाग 303

फैक्स : 0183-2553919

E-mail: sgpc@vsnl.com; info@sgpc.net

धर्म प्रचार कमेटी (शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी), श्री अमृतसर-143006

सन्देश

एक प्रतिभावान कलम-साधिका द्वारा भावावेश में की गई विचार-व्याख्या

बहिन डॉ. मनजीत कौर के साथ **'गुरमति ज्ञान'** पत्रिका के सबब से जान-पहचान हुई। प्रथम चरण में पत्रिका के लिए आलेख लिखने-लिखवाने के विषय पर फोन पर बातचीत हुई तो इनके हृदय की गहराइयों से निकले बोल सुनकर हम संपादकीय मंडल के सभी सदस्य इनके अच्छे व्यक्तित्व तथा मानवीय गुणों से भरपूर स्वभाव से प्रभावित हुए बिना न रहे। पत्रिका अभी नयी-नयी आरंभ हुई थी। हमको साकारात्मक प्रतिउत्तर देने वाले और विशेष रूप से हमारी पत्रिका की मूल आवश्यकताओं तथा इसकी मूल नीति को समझने वाले गुरमति की मूल धारा के लेखकों-लेखिकाओं की गहन तलाश थी। डॉ. मनजीत कौर हमारी पत्रिका के लिए लिखने वाले उन कमलकारों में से एक हैं जिन पर हमें उनके मूल धारा के साथ पूर्णतः जुड़े रहने पर शत-प्रतिशत विश्वास है और जो स्वयं इतनी सुचेतनता, सजगता से स्वाभाविक भाव-प्रवाह से इतना अच्छा लिखते हैं कि उनकी भेजी कृतियों पर हमको अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता। डॉ. मनजीत कौर जैसे अच्छे लेखकों-लेखिकाओं से मिले प्रतिउत्तर और पर्याप्त सहयोग के कारण ही आज **'गुरमति ज्ञान'** पाठकों की सुप्रिय पत्रिका बन सकी है। हम सही अर्थों में अपनी बहिन के हार्दिक धन्यवादी हैं।

बहिन डॉ. मनजीत कौर के व्यक्तित्व तथा उनके स्वभाव का सबसे अधिक आकर्षक गुण है उनका अत्यंत मिष्ठभाषी होना और यह गुण उनके हृदय तथा अंतर–आत्मा की गहराइयों से प्रकट होने के कारण अधिक मूल्यवान है। बहिन जी की नम्रता कोई बाहरमुखी अथवा पदार्थक तथा सांसारिक उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए नहीं धारण की हुई, यह इनके अच्छे संस्कारों, अच्छी परवरिश, नेक माता–पिता तथा सभ्य परिवार के प्रभाव से सहज–भाव से विकसित हुई नम्रता है। बहिन जी जब कलम चलाती हैं तो यह गुण स्वतः संचारित हो जाता है जिस कारण अच्छा लिखना यकीनी बन जाता है। आज बहुत से कलमकार हैं जो मात्र लिखने की खातिर या छपने की खातिर लिखते हैं। वे हृदय की गहराइयों से लिखने से काफी दूर रहते हैं, इसी लिए तो पाठकों का ऐसी कृतियों से प्रभावित होना संभव नहीं हो पाता। फिर आज जान–बूझकर कठिन शैली या शब्दावली में लिखने की प्रवृत्ति भी काफी भारी पड़ रही है। हमारे बहिन जी का गुण 'नम्रता' समकालीन लेखकों की ऐसी अनचाही लेखनी की कमियों से उनको अधिक से अधिक बचाकर रखता है। हिन्दी भाषा में पी.एच.डी. करने के उपरांत उनकी लेखनी में सरलता, नम्रता एवं मिठास और भी बढ़ गई है। **वस्तुतः फल से लदा हुआ वृक्ष नीचे की ओर ही झुकता है।**

हमारे देश में स्त्रियों का कलमकार होना पारिवारिक और सामाजिक क्षेत्रों में अभी भी इतना आसान नहीं है। यह निश्चय ही बहिन जी का जहाँ अनेकों गुणों से मालामाल व्यक्तित्व उनकी लेखनी के रूपमान होने के पीछे प्रतीत किया जा सकता है वहीं उनके ससुराल और विशेषतः उनके पति की ओर से मिला सहयोग भी है। मेरी जानकारी में कई ऐसी बहिनें तथा बेटियां हैं जो मायके परिवार में होते हुए अच्छी कलम चलाती रहीं लेकिन ससुराल में आते ही उनकी कलम रुक गई। वैसे भी हमारे भारतीय समाज में स्त्री जाति का प्रतिनिधित्व करते हुए महिला लेखिकाओं का अनुपात

पुरुष लेखकों के मुकाबले काफी कम है। 'गुरमति ज्ञान' के माध्यम से हमारा अपनी अत्यंत सीमित दायरे वाली क्षमता के होते हुए एक छोटा-सा प्रयास अवश्य है कि पुरुष और स्त्री लेखक-लेखिकाओं के बीच देर से चल रहा अंतर अधिक से अधिक कम किया जा सके। सही सच्चे रूप में सामाजिक समतोल तभी बन पायेगा जब हमारे देश अथवा समाज में सभी क्षेत्रों में स्त्रियों को उचित नुमाइंदगी मिल सकेगी।

हमारे अज़ीज बहिन जी मात्र कलम के माध्यम से ही नहीं वे छात्रों-छात्राओं तथा सिक्ख संगत के रू-ब-रू गुरबाणी तथा गुरमति विषयों पर दिए जाते अपने व्याख्यानों के माध्यम से भी होते हैं। मेरे हिसाब से इसका भी अच्छा प्रभाव इनकी लेखनी पर पड़ा है। फिर ये सेमीनारों में भी सक्रिय भाग लेती रहती हैं और यह सहभागिता भी इनकी लेखनी पर निश्चय ही अपना प्रभाव रखती है। इनको कई क्षेत्रों में एक साथ कार्यरत देखकर आश्चर्य भी होता है कि ये उन सभी कार्यों के चलते अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ कैसे कदम मिलाती होंगी। फिर मुझे भाई वीर सिंह जी का काव्य-कथन स्मरण हो आता है कि :

सीने खिच्च जिन्हां ने खाधी, उह कर अराम नहीं बहिंदे।
नेहुं वाले नैणां की नींदर (?), उह दिने रात पए वहिंदे।
इक्को लगन लग्गी लई जांदी, है टोर अनंत उन्हां दी;
वसलों उरे मुकाम ना कोई, सो चाल पए नित्त रहिंदे।

बहिन डॉ. मनजीत कौर की "जापु साहिब की विचार-व्याख्या" से पूर्व "जपु जी साहिब की विचार-व्याख्या" भी "गुरमति ज्ञान" में प्रकाशित हो चुकी है। यह हमारे लिए विशेष संतुष्टि की बात है कि ये दोनों विचार-व्याख्याएं "गुरमति ज्ञान" में शृंखलाबद्ध रूप में प्रकाशित होने का सम्मान प्राप्त कर चुकी हैं। इस पुस्तक में शामिल व्याख्या सितम्बर,

2007 से आरंभ होकर मई, 2009 तक संपूर्ण हुई थी। वैसे हमारी विनती को मानते हुए उन्होंने नित्तनेम की सभी पांच की पांच बाणियों पर विचार–व्याख्या का कार्य किया हुआ है। जिसको आने वाले समय में वे गुरु–कृपा से अवश्य प्रकाशित कराकर हिन्दी–भाषीय गुरमति साहित्य में और अधिक वृद्धि करेंगी।

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के पवित्र मुखारबिंद से उच्चारण की हुई बाणी **''जापु साहिब''** निःसंदेह एक बहुत ही महत्वपूर्ण आध्यात्मिक निधि है, जिसके विचार–तत्व की गहराइयों तक पहुंचना हरेक धार्मिक कलमकार के वश की बात नहीं। बहिन जी पर निश्चय ही सतगुरु पातशाह की बख्शिश भरी दृष्टि है जिससे यह अत्यंत गहन कार्य इन्होंने सहज भाव से संपूर्ण किया है, परंतु इसका भाव यह कदापि न लिया जाए कि इसके लिए इन्होंने परिश्रम नहीं किया अथवा कम किया है। यह विचार–व्याख्या लिखने से पूर्व इन्होंने हिन्दी–पंजाबी दोनों भाषाओं में इस पावन बाणी पर उपलब्ध सटीकों का गहन दृष्टि से अध्ययन करने का उद्यम किया लेकिन लिखा इन्होंने अपनी मौलिक भाषा तथा शैली–शब्दावली में ही है। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास भी है कि इस रमणीय, सरल तथा भावावेश से प्रवाहित विचार–व्याख्या से हिन्दी पाठक अधिक से अधिक लाभ लेते हुए दशमेश पिता की रूहानी अनुभव तथा उनकी मानवतावादी दृष्टि को समझते हुए देश, कौम व मानवता पर उनके इस उपकार को हृदय से महसूस कर सकेंगे।

सुरिंदर सिंघ निमाणा

(सुरिंदर सिंह निमाणा)

सहायक संपादक, गुरमति ज्ञान/गुरमति प्रकाश,

धर्म प्रचार कमेटी (शिरोमणि गु:प्र: कमेटी), श्री अमृतसर।

भूमिका

संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कंमु करावणि आइआ राम।।
धरति सुहावी तालु सुहावा विचि अम्रित जलु छाइआ राम।।
अम्रित जलु छाइया पूरन साजु कराइआ सगल मनोरथ पूरे।।
जै जै कारु भइआ जग अंतरि लाथे सगल विसूरे।।
(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी, पन्ना 783)

अकाल पुरख वाहिगुरु रहमतों का सागर है। उसकी रहमतों की वर्षा हर पल हो रही है। जो जीव केवल उस परमेश्वर का ही आसरा लेकर जीवन में विचरण करते हैं, उनके प्रत्येक कार्य में प्रभु पिता आप सहाई होकर उसके समस्त कार्यों को सम्पूर्णता बख्शता है। क्योंकि वह अनंत ताकतों का मालिक हैं तथा सब कुछ करने एवं करवाने में समर्थ है जैसा कि पावन बाणी का फरमान है –

करन करावन करने जोगु।। जो तिसु भावे सोई होगु।।
खिन महि थापि ऊथापनहारा।। अंतु नहीं किछु पारावारा।।
(पन्ना 276–77)

सब कुछ उस परमेश्वर के हुक्म में घटित हो रहा है। सब जीव उसी के हाथ की कठपुतलियां हैं वह जैसा जिस जीव से करवाना चाहता है उसे उसी ओर प्रवृत कर देता है। वाहिगुरु की अपार कृपा से घर में संस्कार ऐसे मिले कि जब होश सम्भाला अपनी पूजनीय दादी जी को हर समय बाणी पढ़ते सुना, सहज स्वभाव उनसे जानना

चाहा कि आप जो बाणी पढ़ते हो उसके अर्थ क्या हैं ? उनका सहज जवाब था बेटा, मैं तो कभी पाठशाला नहीं गई। मुझे तो बाणी पढ़नी भी नहीं आती और ना ही इसका अर्थ मालूम है। मैंने तो अपने बुजुर्गों से और सतसंग में जो सुना वही पाठ करती हूं बस लगन वहां से लगी। अपनी परम सत्कार योग माता जी को गुटके से पाठ करते देखा तो उनके पास बैठकर गुरमुखी पढ़नी आ गई। शाम का नितनेम बना गुरुद्वारे जाने का। अपनी दादी मां की अंगुली पकड़ कर मैं रोज गुरुद्वारे जाती। मुझे याद है जब मैं तीसरी कक्षा में पढ़ती थी तब अपनी बड़ी बहन के साथ हम संध्या के समय गुरुद्वारे साहिब में रहरासि साहिब का पाठ करते। अर्थ नहीं मालूम थे फिर भी एक सकून मिलता।

हरियाणा के छोटे से गांव बवानी खेड़ा, जिला भिवानी में मेरा जन्म हुआ था। वहां स्कूलों में पंजाबी नहीं पढ़ाई जाती थी और न ही कोई गुरुबाणी के अर्थ बताने वाला था। मेरी लगन को देखते हुए घर में कुछ पोथियां तथा सटीक नितनेम के गुटके ला दिए गए। मेरे बापु जी बड़े प्यार से रात को सोने से पूर्व साखियां सुनते और अपने जीवन के अनुभव बताते। सदैव प्रोत्साहित करते।

मुझे बचपन से ही पढ़ने व लिखने का बहुत शौक था। अपनी कक्षा में हमेशा प्रथम रहती। पढ़ाई का माहौल व साधन न होने के बावजूद भी मैंने ग्रेजुएशन शहर जा कर की। **हिन्दी ऑनर्स में यूनिवर्सिटी में प्रथम स्थान प्राप्त किया।** इसी दौरान मेरा विवाह हो गया।

ईश्वर की अपार कृपा से जीवन साथी सरदार भुपिन्दर सिंह जी जिनका त्याग, प्यार एवं मुझे आगे बढ़ाने की उनकी अभिलाषा के फलस्वरूप मैंने राजस्थान यूनिवर्सिटी से हिन्दी साहित्य में एम.ए., एम.फिल. तथा पी.एच.डी. की। एम.फिल. का लघु शोध प्रबन्ध

"श्री गुरु नानक देव जी और उनका जपुजी साहिब एक अध्ययन" विषय की अनुमति से एक बार फिर इस पावन बाणी के गूढ़ अर्थ जानने की जिज्ञासा प्रबल हुई। **पी.एच.डी.** का शोध प्रबंध का विषय भी धार्मिक रहा। **कबीर काव्य एवं नानक वाणी में मानव धर्म एवं मूल्य बोध : एक तुलनात्मक अध्ययन** – इस सन्दर्भ में मेरे भाइयों ने पंजाब से पुस्तकें भेजकर मेरी बहुत मदद की तथा माता–पिता की हरपल आशीषें तथा इस परिवार का भरपूर आशीर्वाद एवं प्यार गुरु पातशाह की पावन बाणी अनुसार मेरे लिए जीवनाधार बना यथा –

पूता माता की आसीस।। निमख न बिसरउ।।
तुम कउ हरि हरि सदा भजहु जगदीस।।

(पन्ना 496)

साथ ही मेरी बेटी तरूणदीप कौर जो कि मेरी सच्ची समालोचक भी है उसकी सहजता तथा धैर्य मेरे लिए प्रेरणा स्त्रोत है। बेटा नवजोत सिंह जो कि रात को हमेशा कहता कि मम्मी आप अपनी पढ़ाई कर लो। दोनों के लिए शुभाशीष।

बचपन से ही स्टेजों पर बोलने का अवसर मिला। 2003 से सतगुरु की अपार बख्शिशों सदका **श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी** की लड़ी वार विचार व्याख्या करने का सुअवसर मिला। निष्काम सेवाएं देकर जो संगतों का अपार प्यार एवं आशीषें मिल रही हैं वह मेरी वास्तविक पूंजी है। इस दौरान कई लेख और कविताएँ विविध पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी थी लेकिन **'शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी श्री अमृतसर'** द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका **गुरमति ज्ञान** में मेरा एक लेख **अप्रेल 2003** में प्रकाशित हुआ। मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा और जब मैंने धन्यवाद पत्र के साथ जपुजी साहिब की विचार व्याख्या लड़ी

वार प्रकाशित करने हेतु बेनती भरा पत्र लिखा, मेरी जिन्दगी में वह पल सबसे भाग्यशाली था जब मुझे इस पावन बाणी को "**गुरुबाणी चिन्तनधारा**" कालम से प्रकाशित होने की प्रवानगी का पत्र मिला। अनेक बार पत्र को पढ़ा, नेत्र सजल हो गए। बार-बार धन्य-धन्य श्री गुरु रामदास जी का पावन शब्द स्मरण हो आता –

हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता
गुर सतिगुर संगि कीरे हम थापे ।।

(पन्ना 167)

कोटि-कोटि शुक्राना परवरदिगार का धन्य-धन्य सतगुरु श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का जिनकी रहमतों सदका यह सब मुमकिन हुआ।

जापु साहिब की पावन बाणी की विचार व्याख्या के सन्दर्भ में इतना स्पष्ट कर देना चाहती हूँ कि जैसे ही 'गुरमति ज्ञान' में 'जपुजी साहिब' की विचार-व्याख्या सम्पूर्ण होने वाली थी अगली बाणी के प्रकाशन के सम्बन्ध में परम सत्कार योग 'गुरमति ज्ञान' के सहसम्पादक ज्ञानी सुरिन्दर सिंह जी निमाणा वीर जी से जब विचार-विमर्श हुआ तो वीर जी ने "जापु साहिब" जी की विचार-व्याख्या हेतु आदेश किया, तो मैंने बेनती की कि इस बाणी की व्याख्या कठिन साधना है अतः कृपया मुझे कोई और बाणी की विचार-व्याख्या हेतु प्रवाणगी प्रदान करें। आज भी मेरे कानों में परम श्रद्धेय निमाणा वीर जी के आशीर्वाद से परिपूर्ण शब्द गूंजते हैं कि "आप तो बस यह व्याख्या करना शुरू करें, वाहिगुरु ने रहमत करके आपसे यह व्याख्या करवा लेनी है यह हमारा विश्वास है।"

वाहिगुरु जानता है यह आदरणीय वीर जी के प्रेरणा स्पद आशीर्वचन थे जिनकी बदौलत यह व्याख्या प्रारम्भ होकर सम्पूर्ण हुई तथा गुरमति ज्ञान

में इक्कीस महीनों तक निरन्तर प्रकाशित होती रही। सचमुच – ''**साधु बोले सहज सुभाय**'' और साधु के वचन वृथा नहीं जाते। यह पुस्तक इसका पुख्ता प्रमाण है। इस सन्दर्भ में यह भी निवेदन करना चाहूँगी जिनकी प्रेरणा से यह व्याख्या हुई उन्होंने ही अर्थात् **परम आदरणीय निमाणा वीर जी** ने ही इसे पुस्तक रूप के साकार होने पर स्नेहिल पावन हृदय से इतना सुन्दर संदेश लिख कर जहाँ इस पुस्तक की शोभा को बढ़ाया है वहीं अपनी इस बहन को कृतार्थ किया है। सचमुच मेरे पास शब्द नहीं है जिनसे मैं प्रेरणा स्तम्भ वीर जी का शुक्रिया अदा कर सकूँ।

इसी शृंखला में ''**गुरमति प्रकाश**'' एवं ''**गुरमति ज्ञान**'' के **मुख्य सम्पादक परम सत्कार योग स. सिमरन जीत सिंह जी सह–सम्पादक स. जगजीत सिंह वीर जी** जिनकी प्रेरणा एवं सहयोग निरन्तर मिल रहा है। अतः यह कहना अति कथनी ना होगी कि यह सब वाहिगुरु की रहमत, सतगुरु की बक्शिश के साथ–साथ गुरमति ज्ञान की पूरी टीम के अतिशय स्नेह एवं मार्गदर्शन का ही सुखद परिणाम है जो इसे पुस्तक रूप में साकार कर आप जी के करकमलों तक पहुँचाने में सफलता मिली है।

इस सन्दर्भ में महान विद्वानों, टीकाकारों विशेष रूप से ''**प्रो. साहिब सिंह**'' जी को नतमस्तक हो शुक्रिया अदा करती हूँ जिनसे गूढ़ शब्दों का अर्थ समझने में मदद मिली। साथ ही ''**गुरमति ज्ञान**'' के प्रबुद्ध और स्नेहिल पाठकों का सहृदय से अभिनन्दन एवं शुक्रिया अदा करती हूँ। सचमुच ''**गुरमति ज्ञान**'' पत्रिका ने हमारा परिवार इतना विशाल बना दिया है। सुधी पाठकों के निरन्तर फोन तथा पत्रों से इतना प्रोत्साहन मिलता है जिन्हें शब्दों द्वारा अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। आत्मीय रिश्ते कायम करने एवं विश्वकुट्म्बकम् भाव को दृढ़ करने में पूर्णतया सक्षम पत्रिका की पूरी टीम एवं सुहृद पाठकों का तहे दिल से शुक्रिया, धन्यवाद, जिन्होंने

जपुजी साहिब के पश्चात् "**जापु साहिब : विचार व्याख्या**" को पुस्तक रूप में प्रकाशित करवाने हेतु प्रेरित किया।

यह पावन बाणी अनन्त गुणों के मालिक श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के पावन मुखारबिंद से उच्चरित अकाल पुरख की उसतति है। परम् पिता परमेश्वर का अंत कोई नहीं पा सकता, इस तथ्य को "**वचित्र नाटक**" में अति विनम्रता से उजागर करते हुए गुरु साहिब ने कलयुगी जीवों का मार्ग प्रशस्त किया है। इस संदर्भ में गुरुदेव का फ़रमान है :-

मैं हो परम पुरख का दासा।। देखन आयो जगत तमासा।।

अतः अंत में सुहृद पाठकों के चरणों में सनम्र बेनती है कि उस अकाल पुरख की उसतति में उच्चरित गुरु पातशाह की पावन बाणी "**जापु साहिब की विचार व्याख्या**" की पुस्तक रूप में प्रस्तुति एक तुच्छ-सा प्रयास मात्र है। गुरबाणी आशयानुसार पारब्रह्म परमेश्वर के चरणों में अनुनय विनय करते हुए बस यही अरदास है :-

गुण निधान मेरा प्रभु करता उसतति कउनु करीजै राम।।
संता की बेनंती सुआमी नामु महा रसु दीजे राम।।

(पन्ना - 784)

वाहिगुरु रहमत करें, हम भी उस अनन्त गुणों के मालिक का गुणगान करते हुए अपना बेशकीमती जीवन सफल कर सकें।

सधन्यवाद।

डॉ. मनजीत कौर
2/104, जवाहर नगर, जयपुर
फोन : 0141-2650370
(मो.) : 99297 62523

जापु साहिब : विचार व्याख्या

जापु साहिब : एक परिचय

साहिब–ए–कमाल, संत–सिपाही, अमृत के दाते, सरबंशदानी, दुष्ट–दमन, महान् दार्शनिक, 52 महान् कवियों के संरक्षक, वीर रस एवं ओज गुण के अद्वितीय प्रस्तुतकर्त्ता, कलगीधर पातशाह, दसवीं पातशाही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पावन मुखारबिंद से उच्चरित बाणियों में से प्रमुख बाणी है– **'जापु साहिब'**।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की प्रारम्भता जैसे श्री गुरु नानक देव जी कृत **'जपु जी साहिब'** से हुई है ठीक वैसे ही **'दशम ग्रन्थ'** की प्रारम्भता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी कृत **'जापु साहिब'** से हुई है। यह नित्यनेम की क्रमवार दूसरी बाणी है। अमृत संचार के समय भी **'जपु जी साहिब'** के उपरान्त **'जापु साहिब'** का उच्चारण किया जाता है। रहितनामों में आदेश है :

जपु जापु पढ़े बिना जो जेवै प्रसाद।
सो विसटा का क्रिम होइ, जनम गवावे बाद।

(रहितनामा, भाई देसा सिंघ जी)

इस पावन बाणी की व्याख्या से पूर्व यह जान लेना जरूरी है कि इसकी रचना कब और कहां हुई ? श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा

उच्चरित बाणी **'जापु साहिब'** में 199 बंद हैं, जिन्हें 10 प्रकार के छंदों में लयबद्ध किया गया है। छंद, काव्य में कविता के मीटर अथवा इसकी पंक्तियों के विशेष वजन और तुकांत से अस्तित्व में आते हैं। प्रयुक्त 10 छंद निम्नलिखित हैं :–

1. छपै छंद	2. भुजंग प्रयात छंद
3. चाचरी छंद	4. रूआल छंद
5. भगवती छंद	6. हरिबोलमना छंद
7. चरपट छंद	8. मधुभार छंद
9. रसावल छंद	10. एक अछरी छंद

ऐसा माना जाता है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी रियासत नाहन में सन् 1684 ई. में गए तथा वहां पर 3 वर्ष तक रहे। इसी दौरान सन् 1684 से 1687 में उस रियासत में यमुना नदी के किनारे पाउंटा साहिब के रमणीक स्थान पर **'जापु साहिब'**, **'सवय्ये'** तथा **'अकाल उसतति'** आदि बाणियों का उच्चारण किया। अतः 1699 की वैसाखी पर जब खालसा पंथ की स्थापना हुई तो अनेक सिंघों को ये बाणियां कंठस्थ हो चुकी थी।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बहुआयामी तथा बेमिसाल व्यक्तित्व एवं कृतित्व में जो उनका दुष्ट–दमन स्वरूप है, विद्वानों के चिन्तनानुसार उनके इसी रूप (मिशन) की सार्थक कड़ी है **'जापु साहिब'**।

वीर–रस एवं ओज गुण से ओत–प्रोत यह रचना मुर्दा दिलों में भी प्राण फूंकने वाली है। इस ओजस्वी बाणी का पाठ जब कोई एकाग्रता से करता है, विशेष तौर पर जब संगत में मिलकर इस बाणी का उच्चारण किया जाता है, तो ऐसा प्रतीत होता है मानो जीवात्मा,

परमात्मा की स्तुति, उसकी महिमा का गान करते-करते उसी में ही विलीन हो गई है और यही अभेदता जीव का परम लक्ष्य है।

इस बाणी में संस्कृत, ब्रज, अरबी, फारसी, साध-भाषा आदि भाषाओं का सुन्दर समन्वय है। भाषा प्रवाहमयी है। छंदों का सुन्दर प्रयोग है। इस ओजस्वी बाणी का नित्य पाठ करने वाला जीव एक अलौकिक आनंद को अनुभव करता है।

डॉ. अजीत सिंघ अमृतसर के चिन्तनानुसार **'जापु साहिब'** की बाणी तेज बहते दरिया की तरह स्वतः एवं फौज जैसे मार्च करती हुई पूर्णतया वेग (गति) एवं जोश से बहती जाती है।

इसमें प्रयुक्त छंद इसे और भी तेजस्वी बनाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इस बाणी को गुरु साहिब ने किसी विशेष अवस्था में बैठकर रचा है।

जापु साहिब का मूल भाव

जापु साहिब का मूल भाव जपु जी साहिब के सदृश्य है। जैसे जपु जी के मूल मंत्र में सम्पूर्ण बाणी की व्याख्या निहित है ठीक वैसे ही जापु साहिब के प्रथम छंद- **'तव सरब नाम कथै कवन, करम नाम बरनत सुमति'** कहने का अभिप्राय है, हे अकाल पुरख ! तेरी हस्ती को पूर्णतया बयान करने वाला कोई नाम नहीं है। महापुरुषों ने उस ईश्वर के कर्मों को देखकर ही उसको पूर्णतया जाना है। गुरबाणी में अन्यत्र भी फरमान है :

आपु आपनी बुधि है जेती।
बरनत भिंन भिंन तुहि तेती।।

(चौपई पाः 10)

अतः ईश्वर के वास्तविक रूप को न तो बाहरी शब्दों द्वारा जाना जा सकता है, न उसकी कोई तस्वीर बन सकती है और न ही किसी बाह्य प्रक्रिया द्वारा उसे जाना जा सकता है। हां, उसे प्रेम भाव से अवश्य जाना जा सकता है, तभी तो गुरदेव का फरमान है :

साचु कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ।।

(त्व प्रसादि सवय्ये पाः 10)

उस परवरदिगार के हुक्म से ही सारी रचना हुई तथा उसी के हुक्म से ही दो विरोधी स्वभाव वाले जीवों की उत्पत्ति हुई जिसे **'जमाल'** अर्थात् प्रेम रूप तथा **'जलाल'** अर्थात् भयानक रूप कहा जाता है। यही नहीं ईश्वर सगुण एवं निर्गुण दोनों रूपों में विद्यमान है। फिर भी गुरबाणी अवतारवाद का समर्थन नहीं करती और न ही मूर्ति-पूजा की समर्थक है क्योंकि उस प्रभु की कोई मूर्ति बन ही नहीं सकती। ये तो समस्त जीवों के स्वयं के उद्गार हैं कि वे जिस रूप में ईश्वर को साकार कर लेते हैं फिर उसी की उपासना में उन्हें आनंद की अनुभूति होती है।

वस्तुतः एक अकाल पुरख ही इस संसार का सृजनकर्त्ता, पालक एवं संहारक है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी उस मालिक के अनन्त गुणों का गान करते-करते उसके एक विशिष्ट गुण का जिक्र करना अति आवश्यक समझते हैं कि जीव कितना भी मंदकर्मी क्यों न हो, वह ईश्वर किसी का रिज़क बन्द नहीं करता। वह सदैव सबसे प्यार करता है। उस प्यार के अथाह सागर से प्रेम करने वाला जीव भी उसी सागर का रूप हो जाता है। उसी की सिफत-सलाह करता हुआ वह प्यार के झूले में हिलोरे लेता हर-पल आनन्द-मग्न रहता है।

आओ ! सतिगुरु से कृपा–याचना करते हुए **जापु साहिब** की **विचार–व्याख्या** करने का प्रयास करते हैं। इस कार्य में सतिगुरु जी अपनी कृपा करें।

ੴ सतिगुरु प्रसादि ॥

एक अद्वितीय परमात्मा, सतिगुरु की कृपा से प्राप्त होता है।

'जापु' इस बाणी का नाम है, जिस का अर्थ है – स्मरण कर।

श्री मुखवाक पातिसाही 10 ॥

दशम पातशाह के पावन मुख से उच्चारण की गई बाणी।

छपै छंद॥ त्व प्रसादि॥

'छपै' छंद का नाम है। **'त्व प्रसादि'** अर्थात् तेरी कृपा से। हे अकाल पुरख ! तेरी रहमत से यह बाणी उच्चारण करता हूं।

चक्क्र चिहन अरु बरन जाति अरु पाति नहिन जिह॥
रूप रंग अरु रेख भेख कोऊ कहि न सकत किह॥
अचल मूरति अनभउ प्रकास, अमितोजि कहिज्जै॥
कोटि इंद्र इंद्राण साहु साहाणि गणिजै॥
त्रिभवण महीप सुर नर असुर नेत नेत बन त्रिण कहत॥
तव सरब नाम कथै कवन करम नाम बरनत सुमति॥1॥

गुरु कलगीधर पातशाह उस अकाल पुरख की सिफत–सलाह करते हुए फरमान करते हैं कि हे अकाल पुरख ! हे वाहिगुरु ! तेरा स्वरूप अकथनीय है अर्थात् तेरे स्वरूप को मुकम्मल रूप से कोई बयान नहीं कर सकता। हे परवरदिगार ! तू तो मानो ऐसा है, जिसके कोई चक्र अर्थात् गोल रेखाएं भी दिखाई नहीं देती। समस्त प्राणियों के शरीर पर कुछ रेखाएं अंकित होती हैं। विशेष तौर पर मनुष्य के

पैरों तथा हाथों की उंगलियों पर जो गोल लकीरें होती हैं उन्हें चक्र कहते हैं। पर केवल तू ऐसा है जिसका कोई ऐसा लक्षण दिखाई नहीं देता। इस पंक्ति पर विचार करें। एक आम कहावत प्रचलित है। **'होनहार बिरवान के होत चिकने पात'** अर्थात् प्रारम्भिक लक्षणों से ही किसी व्यक्तित्व या कृतित्व की पहचान होती है। पर हे प्रभु ! तेरा तो कोई प्रारम्भिक लक्षण भी दिखाई नहीं देता। अतः स्पष्ट है कि तेरा पूर्णतया वर्णन करने में कोई कैसे समर्थ हो सकता है ? अक्सर समस्त वस्तुओं का, प्राणियों का कोई न कोई रंग अवश्य होता है। पर हे प्रभु ! तेरा तो कोई रंग भी नहीं है जिससे तुझे पहचाना जा सके। सबकी कोई जाति, नस्ल है, पर तू तो इन सबसे परे है। कोई भी यह कहने में समर्थ नहीं कि तेरा स्वरूप कैसा है; तेरा रंग, तेरी रूप–रेखा कैसी है तथा तेरा पहरावा कैसा है ?

तेरी हस्ती अटल अर्थात् हमेशा कायम रहने वाली है। **'अनभउ'** अर्थात् स्वयं से प्रकाशवान। तू स्वयं के नूर से नूरी हुआ है जैसा कि गुरु नानक देव जी ने मूलमंत्र से **'सैभं'** शब्द का प्रयोग किया है जिसका अर्थ है स्वयं से प्रकाशवान।

तुझे किसी ने प्रकट नहीं किया, तूं स्वयं से होंद में है। तेरा बल असीम है, किसी पैमाने से तेरी शक्ति मापी नहीं जा सकती। समस्त जीव यही कहते प्रतीत होते हैं कि तेरी ताकत का अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता। तू इन्द्रों का इन्द्र तथा करोड़ों बादशाहों का बादशाह है अर्थात् तेरा बल सर्वोपरि है। तू तीनों भुवनों का मालिक है अर्थात् आकाश, पाताल तथा मातलोक तेरे ही अधीन हैं। देव, मानव तथा दैत्य अर्थात् देवता, मनुष्य तथा राक्षस ही क्या समूची वनस्पति भी तुझे **'नेत–नेत'** अर्थात् अनंत–बेअंत कहती है अर्थात् सभी जीव यही कहते प्रतीत होते हैं, तू ऐसा नहीं, तू वैसा भी नहीं

अर्थात् संसार में तेरे जैसा कोई है ही नहीं जिससे तेरी तुलना की जा सके। हे प्रभु ! तेरी हस्ती को पूर्णतया बयान करने वाला कोई नाम भी नहीं है, केवल एक ही बात समझ में आती है। हे ईश्वर! विद्वानजनों ने तेरे क्रिया-कलापों, तेरे कारनामों को देखकर ही तेरे कुछ नाम रख लिए हैं, लेकिन आज तक कोई भी तेरी पूर्ण हस्ती को स्पष्ट करने वाला तेरा नाम नहीं कह सका।

यहां विचारणीय तथ्य जैसा कि माना जाता है कि शेषनाग की सहस्त्र (हजार) जिह्वाएं हैं और ऐसी मान्यता है कि शेषनाग अपनी प्रत्येक ज़ीभ से हर-पल ईश्वर के नए नाम का उच्चारण करता है पर आज तक वह भी पूर्णतया तेरी हस्ती को स्पष्ट करने वाला तेरा नाम उच्चारण नहीं कर सका, तो एक जीभ वाला बेचारा प्राणी तेरा क्या वर्णन कर सकेगा ? जैसा कि गुरबाणी का फरमान है :

सेखनागि तेरो मरमु न जानां॥

(पन्ना 691)

भुजंग प्रयात छंद॥

नमसत्वं अकाले॥ नमसतं क्रिपाले॥

नमसत्वं अरूपे॥ नमसतं अनूपे॥2॥

हे प्रभु ! तुझे मेरी नमस्कार है कि तू अकाल स्वरूप है अर्थात् मृत्यु रहित है। हे ईश्वर। तू रहमत का सागर है अर्थात् दया का घर है। तेरा कोई विशेष रूप नहीं तथा तेरे जैसा और कोई नहीं। तू अनूप है अर्थात् उपमा रहित क्योंकि तेरे ज़ैसा या तेरे जितना और कोई नहीं जिससे तेरी उपमा की जा सके। उसके विलक्षण दयालु रूप को एक तथ्य द्वारा समझने का यत्न किया जा सकता है।

हुआ यूं कि एक बार एक भक्त ने ईश्वर से प्रार्थना की कि मुझे केवल एक दिन के लिए जीवों को रिज़क पहुंचाने की आज्ञा दे दो।

ईश्वर का जवाब था कि यह कार्य मैं किसी को नहीं दे सकता। अनेक बार अनुनय-विनय करने पर इस आदेश के साथ कि ठीक है, 24 घण्टों के लिए यह कार्य तुम्हारा हुआ, पर ख्याल रहे, प्रत्येक जीव को हर हाल में रिज़क पहुंचना चाहिए।

भक्त की खुशी की सीमा न रही और वह वचन देकर अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करने चल पड़ा। वह चूक गया। उसने एक इन्सान को खूंखार जानवरों से भी बद्तर निकृष्ट कार्य करते देखा और उसे रिज़क नहीं पहुंचाया। जब समय पूरा होने पर ईश्वर ने भक्त से पूछा कि क्या सब कुछ ठीक-ठाक हो गया, सबको रिज़क पहुंच गया तो भक्त का जवाब था कि केवल एक इन्सान जिसे इन्सान कहते हुए भी मुझे शर्म महसूस होती है, उसे छोड़कर समस्त जीवों को रिज़क पहुंचाया है। अगर आप भी उसे इस रूप में देखते तो आप भी उसे रिज़क न देते !

भगवान का जवाब था, मैं तो हर पल कितने ही जीवों को अत्यन्त घिनौने कृत्य करते देखता हूं, फिर भी उनका रिज़क बन्द नहीं करता। तूने अपने कर्त्तब्य का ठीक से पालन नहीं किया।

कहने से अभिप्राय, वह ऐसा कृपालु है कि वह जीवों के कोटिश पापों व दुष्कृत्यों को भी क्षमा कर नजर-अन्दाज कर देता है। वह जीव के अन्तिम श्वास तक भी उससे निराश या हताश नहीं होता। वह ऐसा दयालु है कि वह हमेशा अपनी रचना में परिष्कृत रूप की गुंजाइश देखता है, पर वाह रे कृतघ्न इन्सान ! तू उसके एक उपकार को भी नहीं मानता।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ पातशाह जी **'नमसत्वं क्रिपाले'** उस परमात्मा के दयालु स्वरूप को अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए बार-बार उस परवरदिगार को नमन करते हैं।

नमसतं अभेखे।। नमसतं अलेखे।।
नमसतं अकाए।। नमसतं अजाए।।3।।

हे वाहिगुरु ! तुझे इसलिए भी नमस्कार है कि तू अभेख अर्थात् वेशरहित है, तेरा कोई पहरावा नहीं। तेरी कोई तस्वीर नहीं बन सकती। तू अलेख है। तेरा कोई चित्र नहीं बनाया जा सकता। सांसारिक जीवों के शरीरों की भांति तेरा कोई शरीर नहीं। तू कायारहित है क्योंकि तू जीवों की तरह स्त्री की कोख से पैदा नहीं हुआ। जैसा कि **'आसा की वार'** में श्री गुरु नानक देव जी ने भी इसी तथ्य को स्पष्ट किया है :

भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ।।
नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ।।

(पन्ना 473)

समस्त जीव यहां तक कि स्त्री को जन्म देने वाली भी स्त्री ही है। केवल एक परमात्मा ही है जो गर्भ में नहीं आता अर्थात् तुझे स्त्री ने पैदा नहीं किया तू स्वयं से ही प्रकाशवान है। तेरे ऐसे स्वरूप को नमन।

नमसतं अगंजे।। नमसतं अभंजे।।
नमसतं अनामे।। नमसतं अठामे।।4।।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का फरमान है कि हे वाहिगुरु ! तुझे इसलिए भी नमस्कार है क्योंकि तू अजित है अर्थात् जिसे सिद्धि के द्वारा भी जीता न जा सके। तुझ पर कोई भी विजय प्राप्त नहीं कर सकता। किसी भी गुण में कोई भी तुझसे आगे नहीं हो सकता। तुझे कोई तोड़ नहीं सकता अर्थात् नष्ट नहीं कर सकता। क्योंकि तुझे किसी ने बनाया ही नहीं तो तोड़ेगा कैसे, नष्ट कैसे करेगा ? जो

स्वरूप किसी के द्वारा निर्मित ही नहीं हुआ वह नाश कैसे होगा ? क्योंकि **'घड़न भंजन समरथ'** अर्थात् सब कुछ बनाने वाला व नष्ट करने वाला तो ईश्वर आप ही है। गुरदेव आगे फरमान करते हैं कि हे ईश्वर ! न तेरा कोई विशेष नाम है, न विशेष धाम अर्थात् ठिकाना है। जैसे दुनियावी व्यक्ति की पहचान उसके, नाम व निवास के पते, स्थान, ठिकाने आदि से होती है, तेरे साथ तो ऐसा कुछ भी नहीं। तू घट–घट वासी है, तू सर्वव्यापी है, जैसे कि आम धारणा है :

घट–घट में है झाँकी भगवान की,
किसी सूझ वाली आँख़ ने पहचान की।

वह ईश्वर किसी विशेष स्थान पर ही न होकर प्रकृति के कण–कण में विद्यमान है। उसके इस सर्वव्यापी रूप को भी नमन।

नमसतं अकरमं।। नमसतं अधरमं।।
नमसतं अनामं।। नमसतं अधामं।।5।।

हे प्रभु ! तुझे इसलिए भी नमस्कार है कि तू कर्मों के बंधन से परे है अर्थात् तू कर्म रहित है। अतः तुझे प्राप्त करने हेतु किसी खास धार्मिक कर्म करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। तू वर्णों–आश्रमों के बन्धनों से भी परे है और तेरा निर्माण पांच भौतिक तत्वों अर्थात् जल, वायु, अग्नि, आकाश तथा पृथ्वी से नहीं हुआ। तू समस्त तत्वों, धार्मिक रस्मों से मुक्त है। तेरा न ही कोई विशेष नाम और न ही कोई विशेष स्थान है।

आओ ! इस तथ्य को एक आम उदाहरण से समझने का यत्न करें। जैसा कि कहा जाता है कि हे पानी ! तेरा रंग कैसा है ! पानी को जिसमें भी मिला दो, उसी जैसा लगने लगता है ! ठीक पानी ही की तरह प्रभु का कोई विशेष रंग नहीं, उसे जिसमें मिला दो वैसा

ही दिखाई देने लगता है। ईश्वर का भी कोई विशेष नाम नहीं। उसे जिस भी नाम से पुकारो वह उसी नाम से प्रकट हो जाएगा। श्रद्धा-भाव से जहां भी खोजो वहीं प्रत्यक्ष हो जाएगा। वस्तुतः वह समस्त बन्धनों से मुक्त होते हुए भी प्यार के बन्धन में है, वह निराकार होते हुए भी श्रद्धा-भावनावश साकार स्वरूप है। अनाम होते हुए भी समस्त नाम उसी के हैं। अधाम होते हुए भी कण-कण में उसी का निवास है।

नमसतं अजीते।। नमसतं अभीते।।
नमसतं अबाहे।। नमसतं अढाहे।।6।।

हे अकाल पुरख ! तुझे नमस्कार है। तू अजित है। तुझे जीता नहीं जा सकता। तू निर्भय स्वरूप है अर्थात् तुझे किसी का भी भय नहीं। डर किसका होता है ? जो उससे शक्तिशाली हो। ईश्वर से बलवान कोई नहीं, अतः उसे किसी का डर नहीं। न तो उसे कोई हिला सकता है और न ही उसकी सत्ता को कोई डुला सकता है। उसे कोई गिरा भी नहीं सकता।

यदि किसी दुनियावी व्यक्ति को आज कोई मान-सम्मान मिलता है तो कल उसके मान-सम्मान को ठेस भी पहुंच सकती है। आज जो बुलंदी पर है कल परिस्थितिवश वह नीचे भी गिर सकता है। ईश्वर इन सब परिस्थितियों से परे है। अतः ईश्वर के इस विलक्षण स्वरूप को भी गुरदेव नमस्कार करते हैं।

नमसतं अनीले।। नमसतं अनादे।।
नमसतं अछेदे।। नमसतं अगाधे।।7।।

हे अकाल पुरख ! तुझे नमस्कार है। तू अनिल अर्थात् हवा (हवा से अभिप्राय प्राणवायु) है। जैसे प्राण-वायु के बिना किसी के जीवन

की कल्पना नहीं की जा सकती वैसे ही तेरे बिना किसी अस्तित्व की कल्पना तक नहीं हो सकती, जैसा कि गुरबाणी का फरमान है :

तुझ बिनु कवनु हमारा।।
मेरे प्रीतम प्रान अधारा।।

(पन्ना 206)

हे ईश्वर ! तू सबके प्राणों का आधार है। तू अनादि है अर्थात् मूल (जड़) रहित है। तेरी प्रारम्भता का कोई अन्दाजा भी नहीं लगा सकता। **'नमसतं अछेदे'** अर्थात् तेरे वजूद को कोई खंडित नहीं कर सकता। तू अगाध स्वरूप है, तू गहराइयों वाला सागर है। सागर की गहराई को मनुष्य बेचारा क्या मापेगा ! हे प्रभु ! तेरी गहराई को मापने का कोई पैमाना निर्मित नहीं हुआ और न ही कभी ऐसा सम्भव हो सकेगा। गुरबाणी–आशय के अनुसार इतना ही माना जा सकता है– **जिन खोजा तिनि पाइआ गहरे पानी पैंठ'** अर्थात् जितनी एकाग्रता व पवित्र हृदय से जितनी गहराई में जाकर उसे खोजने का यत्न कोई करता है उसे उतने कीमती मोती प्राप्त होते हैं अर्थात् उसकी समीपता का एहसास होता है।

नमसतं अगंजे।। नमसतं अभंजे।।
नमसतं उदारे।। नमसतं अपारे।।8।।

हे वाहिगुरु ! तुझे नमस्कार है। तुझे कोई जीत नहीं सकता। तुझे कोई खंडित नहीं कर सकता अर्थात् तोड़ नहीं सकता। तू उदारदिल वाला है अर्थात् सखी है। तू अनुदार अर्थात् कंजूस नहीं है, क्योंकि कितने खुले दिल से तू दातें बख्श रहा है। उतनी ही उदारता से तूने यह रचना की है। तू अनंत, बेअंत है, तेरी रचना भी अनंत है, तेरा अंत पाना नामुमकिन है।

नमसतं सु एकै।। नमसतं अनेकै।।
नमसतं अभूते।। नमसतं अजूपे।।9।।

हे ईश्वर ! तुझे नमस्कार है, तू एक आप ही आप है अर्थात् सारी सृष्टि का रचयिता तू आप ही है। तू स्वयं ही एक रूप से अनेक रूपों वाला है, जैसा कि धनासरी राग में श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है :

सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ
सहस मूरति नना एक तुोही।।
सहस पद बिमल नन एक पद गंध
बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही।।
सभ महि जोति जोति है सोइ।।
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ।।

(पन्ना 13)

तेरी हस्ती पाँच तत्वों से निर्मित नहीं है। अजूपे अर्थात् तू समस्त बन्धनों से मुक्त है। **'अजूपे'** शब्द का अर्थ प्रो. साहिब सिंघ जी के चिन्तनानुार विचार में ला सकते हैं। **'जूप'** अर्थात् वह किला जिसके साथ बलि दिए जाने वाले पशु को बाँधा जाता है और मारा जाता है। अतः वह ईश्वर अजूप है, उसे कोई चाहत नहीं कि कोई उसके समक्ष किसी पशु की बलि दे, क्योंकि उस जीव में भी ईश्वर स्वयं ही है। कहने से अभिप्राय, ईश्वर पशु-बलि जैसे किसी भी बाहरी कर्म-काण्ड आदि से प्रसन्न नहीं होता। गुरबाणी के आशयानुसार तो **'अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु'** हैं, उसके दर पर तो जीवों पर दया करने वाले स्वीकृत हैं।

नमसतं त्रिकरमे।। नमसतं त्रिभरमे।।
नमसतं त्रिदेसे।। नमसतं त्रिभेसे।।10।।

हे वाहिगुरु ! तुझे नमस्कार है। हे ईश्वर ! तुझे मिलने के लिए कोई धार्मिक कर्मकाण्ड, रस्में आदि नहीं करनी पड़तीं। तू कर्मों के बन्धनों एवं जंजालों से परे है। अतः तू किसी भ्रम जाल में नहीं फंसता। तेरा कोई एक देश नहीं है अर्थात् तू किसी विशेष स्थान का निवासी नहीं है और न ही तू कोई विशेष पहरावा पहनता है। हे वाहिगुरु ! तू भ्रमों से मुक्त है तथा देश और वेश से रहित है।

नमसतं त्रिनामे।। नमसतं त्रिकामे।।
नमसतं त्रिधाते।। नमसतं त्रिघाते।।11।।

हे अकाल पुरख ! तुझे इसलिए भी नमस्कार है कि तेरा कोई एक नाम नहीं। तुझे किसी विशेष नाम से नहीं जाना जा सकता और न ही तुझे कोई कामना है, तू निष्काम है। दुनिया के प्रत्येक जीव की कोई न कोई कामना है। विचारणीय तथ्य यह है कि इन कामनाओं के कारण ही जीव बन्धनों में फंसे हैं। जिसकी कामनाओं का दायरा जितना विशाल है उतना ही अधिक वह प्राणी दुःखों में ग्रसित है और इन्हीं कामनाओं की दलदल उसे बार–बार चौरासी के चक्र में धकेलती है। गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि कामना से रहित परमात्मा जगत जीवों की तरह पाँच तत्वों – 'पृथ्वी, जल, अग्नि, हवा तथा आकाश' और इन पांच तत्वों के गुण हैं – 'रूप, रस, गंध, स्पर्श तथा शब्द।' तेरे **निघ्रात** स्वरूप को भी नमस्कार है क्योंकि तुझ पर कोई वार नहीं कर सकता अर्थात् तुझे कोई किसी तरह भी चोट नहीं पहुंचा सकता।

नमसतं त्रिधूते।। नमसतं अभूते।।
नमसतं अलोके।। नमसतं असोके।।12।।

हे परवरदिगार ! तुझे इसलिए भी नमस्कार है कि तुझे कोई तेरे स्थान से हिला नहीं सकता क्योंकि किसी में इतनी सामर्थ्य नहीं है

जो तेरी हस्ती को टस से मस भी कर सके। तेरा वजूद जगत–रचना वाले पाँच तत्वों से निर्मित नहीं है। हे ईश्वर ! तू ज्ञानेन्द्रियों की पहुंच से परे है इसलिए इन नेत्रों द्वारा तुझे देखा नहीं जा सकता, अतः तेरे दर्शनों हेतु ज्ञान–चक्षुओं की जरूरत पड़ती है, ज्ञान रूपी अंजन की आवश्यकता होती है, इसीलिए तो सुखमनी साहिब के 23वें श्लोक में फरमान है :

गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु।।
हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु।।

(पन्ना 293)

गुरबाणी में अनेक स्थानों पर यही भाव दृष्टिगत होता है जैसे कि :

तिमर अगिआनु गवाइआ गुर गिआनु अंजनु गुरि पाइआ राम।।
गुर गिआन अंजनु सतिगुरु पाइआ अगिआन अंधेर बिनासे।।

(पन्ना 573)

ये ज्ञान–चक्षु, यह ज्ञान का अंजन गुरु की रहमत सदका प्राप्त होता है। जिसे अकाल पुरख की रहमत से पूर्ण गुरु मिल जाए उसे ही पूर्ण गुरु की रहमत से उस अकाल पुरख के दीदार की समर्थता अर्थात् उसमें एक रूप होने की युक्ति प्राप्त होती है।

हे परमेश्वर ! तुझे कोई फिक्र या चिन्ता, दुःख, क्लेश, संताप छू भी नहीं सकता। हे चिन्ता रहित परमात्मा ! तुझे नमस्कार है। श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज उस सर्वगुण, सर्वशक्तिमान परमात्मा के प्रत्येक रूप को नमन करते हैं। कलयुगी जीवों का मार्ग प्रशस्त करते हुए गुरदेव सारी मानवता को उस अकाल पुरख की सिफत–सलाह

करते–करते उस परमात्मा के गुणों को हृदय में बसाने की युक्ति बताते हैं। अतः गुरदेव के उपदेशों पर चल कर आओ, हम भी उसी ईश्वर का श्वास–ग्रास सुमिरन करें।

नमसतं त्रितापे ।। नमसतं अथापे ।।
नमसतं त्रिमाने ।। नमसतं निधाने ।।13 ।।

हे अकाल पुरख ! तुझे नमस्कार है। हे प्रभु ! तू तीनों तापों से रहित है। **प्रो. साहिब सिंघ जी** के चिन्तनानुसार तीन ताप ये हैं :– **आध्यात्मिक ताप** – वे ताप जो 'मन' से उठते हैं। **आधिदैविक ताप** – वे ताप जो इंसान की किस्मत में आते हैं। **आधिभौतिक ताप** – जो मनुष्य को एक–दूसरे से मिलते हैं।

पर हे प्रभु ! तू उपरोक्त तीनों तापों से अर्थात् क्लेशों से परे है। कहने से भाव, तू निर+ताप अर्थात् तापों से रहित है। ये संताप तुझे छू भी नहीं सकते। हे ईश्वर ! तुझे नमस्कार है। तू अथाप है अर्थात् देवताओं की मूर्तियों (प्रतिमाओं) की तरह तुझे किसी मन्दिर आदि में स्थापित नहीं किया जा सकता। हे प्रभु ! तीनों ही लोकों के जीव तुझे प्रणाम करते हैं। तू गुणों का निधान है अर्थात् समस्त गुणों, पदार्थों तथा सुखों का भण्डार है। हे ईश्वर ! तुझे नमस्कार है।

नमसतं अगाहे ।। नमसतं अबाहे ।।
नमसतं त्रिबरगे ।। नमसतं असरगे ।।14 ।।

हे परमेश्वर ! तुझे नमस्कार है। तू अथाह एवं अगाध है, अतः तेरी थाह नहीं ली जा सकती अर्थात् तू सागर की तरह गहरा है। तुझे नापा नहीं जा सकता। तेरी गहराई का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। तू मानो एक ऐसा पर्वत है जिसे हिलाया नहीं जा सकता। तू पर्वत की तरह अडिग है। दुनिया के जीवों हेतु तीन प्रमुख पदार्थ

अर्थात् दुनियावी जीवन के तीनों पदार्थ (धर्म, अर्थ तथा काम) तुझसे ही प्राप्त होते हैं। हे प्रभु ! तू उत्पत्ति से रहित है। तुझे कोई पैदा नहीं कर सकता। तेरी कोई रचना नहीं कर सकता। अतः तुझे नमस्कार है।

नमसतं प्रभोगे॥ नमसतं सुजोगे॥
नमसतं अरंगे॥ नमसतं अभंगे॥15॥

हे प्रभु ! तुझे नमस्कार है। तू जगत के समस्त पदार्थों को भोगने वाला है क्योंकि तू सृष्टि के सभी जीवों में पूर्णतया समाया हुआ है। इतना सब कुछ होते हुए भी अन्य जीवों की तरह तेरा कोई विशेष रंग नहीं है। तू जगत के पदार्थों को सांसारिक जीवों की तरह भोग-भोग कर कभी नाश नहीं होता है जीव जन्म लेते हैं, पदार्थों का भोग करते हैं और भोग करते-करते उनकी जीवन-लीला खत्म हो जाती है। केवल एक तू ही है जो सदैव कायम रहता है। समस्त जीवों में रहते हुए भी तू सबसे निर्लेप है। ऐसे परमेश्वर को गुरदेव नमस्कार करते हैं।

नमसतं अगंमे॥ नमसतं रंमे॥
नमसतं जलासरे॥ नमसतं निरासरे॥16॥

हे प्रभु ! तुझे नमस्कार है। तू जीवों के मन की पहुंच से परे है। तू सबके मन की जानने वाला अर्थात् अंतरयामी है। लेकिन तू संसारी जीवों के मन व बुद्धि की पहुंच से बहुत दूर है। हे सुंदर, मनोहर स्वरूप वाहिगुरु ! तुझे मेरी नमस्कार है। तू अथाह सागर है। तेरा अंत कोई नहीं पा सकता। तुझे किसी सहारे की आवश्यकता नहीं। कहने का अभिप्राय, तू समस्त जीवों का प्राणाधार है अर्थात् सबको तेरा ही सहारा है। समस्त खंडों-ब्रह्मंडों, तीनों लोकों के जीव

तुझ पर ही आश्रित हैं। हे परमात्मा ! तू किसी पर भी आश्रित नहीं। परमात्मा के इस स्वरूप को भी गुरदेव नमस्कार करते हैं।

नमसतं अजाते।। नमसतं अपाते।।
नमसतं अमजबे।। नमसतसतु अजबे।।17।।

हे परमात्मा ! तुझे नमस्कार है। कलगीधर पातशाह उस परवरदिगार के समस्त स्वरूपों को नमन करते हुए इस बंद में फरमान करते हैं कि हे वाहिगुरु ! तेरी कोई विशेष जाति नहीं। न ही तेरी कोई विशेष कुल है और न ही तेरा कोई खास मत (मज़हब) है अर्थात् तू किसी एक धर्म विशेष का नहीं कहलाता। तेरा स्वरूप आश्चर्यजनक है अर्थात् तू अद्भुत है, निराला है। तेरे इस अचरज रूप को भी मेरी नमस्कार है।

आओ ! इस तथ्य पर विचार करें कि ईश्वर जाति, धर्म, कुल से रहित है। उसने जो रचना की उसमें भी जाति, रंग, कुल धर्म का कोई भेद नहीं किया। अपने-अपने स्वार्थों की सिद्धि हेतु जब कुछ तथाकथित शिक्षक वर्ग वालों ने जातिगत भेदों की आड़ में अपना उल्लू सीधा करना चाहा तो कुछ ऐसे धर्म प्रचारक भी हुए जिन्होंने समय-समय पर उस ईश्वर के पावन सन्देश को लोगों तक पहुंचा कर मज़हब की दीवारों को धराशायी कर, फिर उस परम पिता से जोड़ने हेतु इंसानियत का पाठ पढ़ाया। पावन गुरबाणी की कुछ पावन पंक्तियों का उल्लेख यहां पर करना आवश्यक प्रतीत होता है :

ना हम हिंदू न मुसलमान।।
अलह राम के पिंडु परान।।

(पन्ना 1136)

सभ महि जोति जोति है सोइ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ॥

(पन्ना 13)

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे॥

(पन्ना 1349)

एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई॥

(पन्ना 611)

ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई॥

(पन्ना 1299)

इसी भाव को पुष्ट करती पंक्तियां श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बाणी में देखी जा सकती हैं :

देहुरा मसीत सोई पूजा औ निवाज़ ओई,
मानस सबै एक पै अनेक को भ्रमाउ है॥
देवता अदेव, जच्छ गंध्रब तुरक हिंदू,
निआरे निआरे देसन के भेस को प्रभाउ है॥
एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बान,
खाक बाद आतिश औ आब को रलाउ है॥
अल्लह अभेख सोई पुरान अउ कुरान ओई,
एक ही सरूप सबै एक ही बनाउ है॥86॥

(अकाल उसतत)

स्पष्ट है कि वह परमात्मा निराकार स्वरूप होते हुए भी अद्‌भुत ढंग से सब में साकार रूप में विद्यमान है। अतः तेरे इस निराले व आश्चर्यजनक स्वरूप को नमस्कार है।

अदेसं अदेसे।। नमसतं अभेसे।।
नमसतं त्रिधामे।। नमसतं त्रिबामे।।18।।

हे अकाल पुरख ! तुझे मेरी नमस्कार है। **'आदेसु'** शब्द नमस्कार के अर्थ में जपु जी साहिब में उस अकाल पुरंख के लिए श्री गुरु नानक देव जी ने भी प्रयोग किया है, यथा –

आदेसु तिसै आदेसु।।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु।।
(पन्ना 6)

भावार्थ हमारी उस परमेश्वर को नमस्कार है जो आदि तथा अंत से रहित है। वह अनादि अनंत युगों–युगांतरों से एक ही रूप में व्यापक सत्य स्वरूप सदा स्थिर है। भाई गुरदास जी उस अकाल पुरख को आदेसु करते है :

आदि पुरखु आदेसु है ओहु वेखै ओन्हा नदरि न आइआ।
(वार 26:2)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी उपरोक्त बंद में परवरदिगार को नमस्कार करते हुए फरमान करते हैं कि हे प्रभु ! तुझे मेरी इसलिए भी नमस्कार है कि तेरा कोई खास ठिकाना नहीं जहां तू निवास करता है। तू तो सर्वव्यापक है और तुझे किसी स्त्री ने पैदा नहीं किया। अतः हे ईश्वर ! देश–रहित, वेश–रहित, किसी विशेष घर–रहित, स्त्री की कोख से जन्म–रहित, विलक्षण स्वरूप परमात्मा ! तुझे नमस्कार है।

नमो सरब काले।। नमो सरब दिआले।।
नमो सरब रूपे।। नमो सरब भूपे।।19।।

हे ईश्वर ! तुझे नमस्कार है। उपरोक्त बंद में गुरदेव ने दोनों रूपों (ईश्वर) के संहारक व दयालु स्वरूप का वर्णन किया कि हे

ईश्वर, तू संसार के जीवों को नाश करने वाला है अर्थात् संहार करने वाला है। तू ही समस्त जीवों पर दया करने वाला है। तू कृपालु व दयालु सागर है। समस्त रूपों में तू ही समाया है अर्थात् जितने भी रूप दृष्टिगत होते हैं वे सब तेरे ही रूप हैं। हे समस्त प्राणियों में मौजूद प्रभु ! तुझे नमस्कार है। तू ही संसार के सभी जीवों का भूप अर्थात् राजा है। गुरबाणी में अनेक स्थलों पर परमात्मा को बादशाहों का बादशाह कहा है।

नमो सरब खापे।। नमो सरब थापे।।
नमो सरब काले।। नमो सरब पाले।।20।।

इस बंद में गुरदेव पातशाह जी ने उस परमात्मा के तीनों (सृजनकर्त्ता, पालनकर्ता एवं संहारकर्त्ता) रूपों का वर्णन किया है। **'नमो सरब खापे'** अर्थात् हे ईश्वर ! तुझे नमस्कार है। तू समस्त प्राणियों को नाश करने वाला है, तू ही सब जीवों को **'थापे'** अथवा स्थापित कर, आसरा देने वाला है अर्थात् तू ही सबका सहारा है। तू सबका काल स्वरूप है अर्थात् सब जीवों को नष्ट करने वाला है। तू सब जीवों को पालने वाला है। इसलिए तेरे समस्त रूपों को नमस्कार है।

नमसतसतु देवै।। नमसतं अभेवै।।
नमसतं अजनमे।। नमसतं सुबनमे।।21।।

उस परमात्मा के विलक्षण स्वरूप को नमस्कार करते गुरदेव पातशाह जी का चिन्तन है कि हे अकाल पुरख परमात्मा ! तू देव अर्थात् पूजनीय है। तेरे इस उज्ज्वल देदीप्यमान प्रकाश पुंज स्वरूप को नमस्कार है। तेरे अभेद अर्थात् जिसका कोई भेद न पा सके ऐसे स्वरूप को नमस्कार है। इसी अभेद स्वरूप का वर्णन गुरु पातशाह ने **'अकाल उसतति'** में भी किया है :

आदि अनंत अगाधि अद्वैख सु भूत भविक्ख भवान अभै है।।
अंति बिहीन अनातम आप अदाग अदोख अछिद्द्र अछै है।।
लोगन के करता हरता जल मै थल मै भरता प्रभ वै है।।

हे ईश्वर ! तेरा अंत किसी ने नहीं पाया तुमने जितना-जितना कहने की जिसे समर्थता बख्शी है, जितना समझने की सूझ बख्शी है उतना ही कह कर व समझ कर वह इस दुनिया से चला गया है।

हे ईश्वर ! तू सृष्टि के जीवों की तरह योनियों में नहीं भ्रमता अर्थात् तू जन्म-मरण से परे है और तू सुंदर स्वरूप वाला है। तेरे ऐसे मनमोहक स्वरूप की मनो-मुग्धकारी छवि को भी नमस्कार है।

नमो सरब गउने।। नमो सरब भउने।।
नमो सरब रंगे।। नमो सरब भंगे।।22।।

हे वाहिगुरु ! तुझे नमस्कार है। तेरी पहुंच सब जीवों तक है। तेरा निवास सब भवनों में है। तू सर्वव्यापी है। समस्त जीव तेरे बनाए लोकों में रहते हैं। इस आशय से तू उन सब जीवों में विद्यमान है। प्रकृति का कोई कण ऐसा नहीं जहाँ तू व्यापक नहीं, जैसा कि गुरबाणी का फरमान है :

करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइ।।
नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि सोइ।।

(पन्ना 276)

गुरदेव पातशाह जी का कथन है कि हे समस्त रंगों में व्यापक प्रभु ! तुझे नमस्कार है। सभी रूपों में तू शोभायमान है। हे ईश्वर ! तू सबको नष्ट करने वाला है। गुरबाणी का फरमान है :

रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु।।
कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु।।

(पन्ना 1429)

अकाल पुरख महान् सृजनकर्त्ता भी है और संहारकर्त्ता भी। गुरबाणी में अनेक उदाहरणों से इस भाव की पुष्टि होती है :

साधो रचना राम बनाई।।
इकि बिनसै इक असथिरु मानै अचरजु लखिओ न जाई।।....
जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाई।।
जन नानक जगु जानिओ मिथिआ रहिओ राम सरनाई।।

(पन्ना 219)

इस दृश्यमान जगत में जो कुछ भी है वह नष्ट होने वाला है। जो इस गूढ़ तथ्य को गुरु-कृपा से समझ जाते हैं वे इस संसार में निर्लेप भाव से विचरण करते हुए उस सर्वव्यापी एवं सर्वशक्तिशाली परमात्मा का श्वास-ग्रास सुमिरन करते हैं।

नमो काल काले।। नमसतसतु दिआले।।
नमसतं अबरने।। नमसतं अमरने।।23।।

हे परमात्मा ! तुझे इसलिए भी नमस्कार है कि तू काल का भी काल है अर्थात् तू मौत को भी मार देने वाला है। मौत भी तेरे अधीन है। तू रहमतों का सागर है। हे कृपालु स्वरूप परमात्मा ! तुझे नमस्कार है। परमात्मा के दयालु स्वरूप को गुरबाणी में बारंबार दर्शाया गया है, यथा :

साचा साहिबु अमिति वडाई भगति वछल दइआला।।

(पन्ना 611)

हे प्रभु ! तेरा कोई एक विशेष रंग नहीं है, जैसा कि गुरबाणी में पंचम पातशाह फरमान करते हैं :

रूपु न रेख न रंगु किछु त्रिहु गुण ते प्रभ भिंन॥
तिसहि बुझाए नानका जिसु होवै सुप्रसंन॥

(पन्ना 283)

रूप, रेख, रंग से परे वह परमात्मा जिसे समझ बख्शता है उसे ही यह तथ्य समझने की समर्थता आती है। गुरदेव फरमान करते हैं, **'नमसतं अमरने'** अर्थात् जिसे मौत भी नहीं मार सकती ऐसे सर्वशक्तिमान परमात्मा को नमस्कार है।

नमसतं जरारं॥ नमसतं क्रितारं॥
नमो सरब धंधे॥ नमो सत अबंधे॥24॥

हे मालिक ! तुझे इसलिए भी नमस्कार है तू **'जरारं'** बुढ़ापा अर्थात् वृद्धावस्था से परे है। **'जरा'** अर्थात् बुढ़ापा **'अरि'** अर्थात् शत्रु जो स्वरूप बुढ़ापे का वैरी है। कहने का अभिप्राय वह परमात्मा ऐसा है वृद्धावस्था जिसे छू नहीं सकती, बुढ़ापा जिसके पास फटकने का हौंसला नहीं कर सकता। वह परमात्मा **'क्रितारं'** अर्थात् सबको पैदा करने वाला अर्थात् सृजनकर्त्ता है। सम्पूर्ण सृष्टि का रचयिता तथा समस्त जीवों के धंधे अर्थात् कार्य-व्यवहार चलाने वाला। सचमुच अस्तित्व वाला सत्य स्वरूप, संसार के समस्त बंधनों से परे है अर्थात् दुनिया के सभी बंधनों से मुक्त है। तेरे इस **'पावन'** स्वरूप को नमस्कार है।

विचारणीय तथ्य यह है कि उस मालिक की जो रचना है उसमें जीव का अस्तित्व क्या है ? यथा लोक-उक्ति है :

पानी केरा बुदबुदा इस मानस की जात।
दिखत ही छिप जात है ज्यों तारा प्रभात।

इन्सानी फितरत है कि वह अपनी किसी भी प्राप्ति का अहंकार करता है। गुरबाणी जीव को उस ईश्वर के बिना, उसकी रहमत के बिना उसकी क्या औकात है ? इस हेतु बार-बार आईना दिखाती है, जैसा कि गुरबाणी का फरमान है :

करण कारण समरथ प्रभु जो करे सु होई।।
खिन महि थापि उथापदा तिसु बिनु नहीं कोई।।

(पन्ना 706)

उस सर्वशक्तिशाली सत्ता को गुरदेव का बार-बार नमस्कार।

नमसतं त्रिसाके।। नमसतं त्रिबाके।।
नमसतं रहीमे।। नमसतं करीमे।।25।।

हे प्रभु ! तुझे नमस्कार है कि तू निर्+साक है अर्थात् तू ऐसा है जिसका कोई विशेष रिश्तेदार नहीं है। जैसे कि दुनिया में प्रत्येक जीव का कोई सगा-संबंधी होता है, कुछ बहुत करीब के रिश्तेदार और कुछ दूर के। **'त्रिबाक'** अर्थात् डर रहित। हे ईश्वर ! तुझे किसी का भी भय नहीं। तू बेखौफ़ है।

नमसतं अनंते।। नमसतं महंते।।
नमसतसतु रागे।। नमसतं सुहागे।।26।।

हे परवरदिगार ! तुझे नमस्कार है। तू अनंत है अर्थात् तेरा अंत नहीं पाया जा सकता। वाहिगुरु के अनंत स्वरूप का जिक्र गुरबाणी में अनेक बार आया है, यथा :

ब्रहमा बिसनु रुद्रु तिस की सेवा।।
अंतु न पावहि अलख अभेवा।।

(पन्ना 1053)

साधारण जीव तो क्या, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, त्रिदेव भी जिसका अंत नहीं पा सके। **महंते** अर्थात् तू बहुत बड़ा है। ईश्वर की विशालता, सर्वव्यापकता का जिक्र भाई गुरदास जी ने भी अनेक बार किया है, यथा :

केवडु द्रिसटि वखाणीऐ केवडु रूपु रंगु परकारा।।
केवडु सुरति सलाहीऐ केवडु सबदु विथारु पसारा।।....
अंतु बिअंतु न पारावारा।।

(वार 8:3)

तुझे नमस्कार है कि तू प्यार–स्वरूप है। ईश्वर ही प्रेम है और प्रेम ही ईश्वर है अर्थात् प्यार का दूसरा नाम ही ईश्वर है। तू प्रेम स्वरूप तथा महाप्रतापी है। तेरे ऐसे स्वरूप को नमन। तभी तो गुरु कलगीधर पातशाह का अन्यत्र भी फरमान है :–

साचु कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ।।

(सवय्ये पातशाही 10)

नमो सरब सोखं।। नमो सरब पोखं।।
नमो सरब करता।। नमो सरब हरता।।27।।

हे वाहिगुरु ! तुझे इसलिए भी नमस्कार है कि तू **'सरब सोखं'** अर्थात् सबको नष्ट करने वाला **'पोखं'** सबकी पालना करने वाला है अर्थात् तू ही उत्पत्ति व नाश का कारण है। उस ईश्वर ने जिसकी रचना की है उसे नष्ट करने वाला भी वही आप है। उसके हुक्म में

ही सब कुछ हो रहा है। उसके संहारक और सृजक दोनों रूपों को गुरु कलगीधर पातशाह नमस्कार करते हैं।

नमो जोग जोगे ।। नमो भोग भोगे ।।
नमो सरब दिआले ।। नमो सरब पाले ।।28 ।।

हे परवरदिगार ! तुझे इसलिए भी नमस्कार है कि तू त्यागियों में महान् त्यागी है तथा गृहस्थियों में महान् गृहस्थी है अर्थात् योगियों में योगी तथा भोगियों में महान् भोगी है। तू सब जीवों पर दया करने वाला रहमतों का सागर है। तू सबका पालनकर्त्ता है। तेरे दयालु एवं कृपालु स्वरूप को नमस्कार है।

चाचरी छंद ।। त्व प्रसादि ।।
अरूप हैं ।। अनूप हैं ।। अजू हैं ।। अभू हैं ।।29 ।।

हे वाहिगुरु ! तेरा न कोई विशेष रूप है और न ही कोई तेरे बराबर का है। तू अचल स्वरूप है और तू जन्म में भी नहीं आता। अनूप का अर्थ है उपमा से ऊपर अर्थात् बेमिसाल। हे ईश्वर ! तेरे जैसा कोई भी तो नहीं जिससे तेरी तुलना की जा सके। **'अजू'** अर्थात् अचल, स्थिर स्वरूप, सदैव कायम रहने वाला। **'अभू'** जन्म से रहित अर्थात् जन्म-मरन के चक्करों से रहित। केवल और केवल वह ईश्वर ही ऐसा है जो समस्त आवागमन के बंधनों से मुक्त है। उस बेमिसाल ईश्वर की स्तुति करते हुए तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी की पावन बाणी है :

तिस का सरीकु को नही ना को कंटकु वैराई ।।
निहचल राजु है सदा तिसु केरा ना आवै ना जाई ।।

(पन्ना 592)

अलेख हैं।। अभेख हैं।। अनाम हैं।। अकाम हैं।।30।।

हे ईश्वर ! तेरी कोई तस्वीर नहीं बनाई जा सकती। तेरा कोई विशेष पहरावा भी नहीं है। तेरा कोई एक नाम भी नहीं। तुझे किसी विशेष नाम से नहीं जाना जा सकता। हे ईश्वर ! तुझे तो कोई कामना भी नहीं है अर्थात् तू तो इच्छाओं से भी रहित है। तू निष्काम है। गुरु कलगीधर पातशाह इस बंद में फरमान करते हैं कि हे ईश्वर ! तेरी कोई तस्वीर नहीं बनाई जा सकती। आओ ! विचार करें इस बाणी के रचयिता पर। गुरु कलगीधर पातशाह के इतिहास पर। जिन्हें भारत में ही नहीं विश्व-इतिहास में बेमिसाल कहा जाता है, उनकी कुर्बानियां बेमिसाल हैं। गुरु पातशाह के लासानी एवं बेमिसाल स्वरूप को श्रद्धा-सुमन अर्पित करते एक शायर के ये शब्द कितने सार्थक हैं :

''इस सोहणी कलगी वाले दी, कोई गल्ल सुनाई जांदी नहीं।
तसवीर बनावण लगदा हां, तसवीर बनाई जांदी नहीं।''

दुष्ट-दमन सरवंशदानी गुरु कलगीधर पातशाह जिन्हें उस मालिक के हुक्म से इस जगत में आना पड़ा, उसी परमात्मा के अनंत गुणों, स्वरूपों को बार-बार नमस्कार करते हुए गुरु पातशाह कलयुगी जीवों को उसी अनंत-बेअंत परमात्मा की सिफत-सलाह करने का उपदेश दे रहे हैं। जीवों का मार्ग प्रशस्त करते हुए उस सर्वशक्तिशाली सत्ता को बार-बार नमस्कार करते हैं। उस गुणों के अथाह सागर के गुणों को हृदय में बसाकर हम भी यह अरदास करने के योग्य बन सकें :

देह सिवा बरु मोहि इहै सुभ करमन ते कबहूं न टरों।।
न डरो अरि सो जब जाइ लरो निसचै करि अपुनी जीत करों।।

(चंडी चरित्र, पाः 10)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उस परमात्मा के समस्त स्वरूपों को नमस्कार की है। जापु साहिब वीर रस से परिपूर्ण बाणी है। इस ओजस्वी बाणी के जाप से हृदय में अनायास ही वीर रस का संचार होता चला जाता है। उस परमात्मा का भय हृदय में सदैव बना रहता है, जिसकी बरकतों से समस्त दुनियावी भय, भ्रम, चिन्ताएं स्वतः समाप्त हो जाती हैं, सभी उसी परमात्मा का गुणगान कर रहे हैं :

नानकु वेचारा किआ कहै।। सभु लोकु सलाहे एकसै।।
सिरु नानक लोका पाव है।। बलिहारी जाउ जेते तेरे नाव है।।

(पन्ना 1168)

अधै हैं।। अभै हैं।। अजीत हैं।। अभीत हैं।।31।।

हे वाहिगुरु ! तू **'अधै'** अर्थात् मनुष्य के सोच-मण्डल से परे है। कहने से अभिप्राय, जहां तक मनुष्य की विचार-शक्ति की पहुंच है तू उससे बहुत दूर है। अतः कोई भी व्यक्ति तेरे सम्पूर्ण स्वरूप को अपनी सोच-शक्ति में केन्द्रित नहीं कर सकता। अर्थात् उस अकाल पुरख के बारे में पूर्णतया सोचा नहीं जा सकता।

गुरु कलगीधर पातशाह उस ईश्वर के अनेक स्वरूपों का वर्णन करते हुए फरमान करते हैं कि हे मालिक ! तू अभे अर्थात् अभेद है, तेरा भेद पाना मुमकिन नहीं है और तुझे कोई जीत भी नहीं सकता। तुझ पर विजय पाना सम्भव नहीं है। तू सदैव भयमुक्त है। तुझे किसी का भी डर नहीं है। तू निर्भर स्वरूप है।

आओ ! उस ईश्वर के निर्भय स्वरूप पर विचार करने का प्रयास करें। भय कई तरह के होते हैं लेकिन प्रमुख भय है विनाश का। क्योंकि उत्पत्ति के साथ विनाश का भय जुड़ा है, जन्म के साथ

मृत्यु जुड़ी हुई है, लेकिन उस निर्भय के भय में जो रहता है वह दुनियावी भय से मुक्त हो ज़ाता है। गुरबाणी में अन्यत्र भी इस भाव की पुष्टि हुई है, यथा :

निरभउ सो सिरि नाही लेखा॥
आपि अलेखु कुदरति है देखा॥
आपि अतीतु अजोनी संभउ नानक गुरमति सो पाइआ॥

(पन्ना 1042)

सारी रचना, चाहे कोई जीव, वनस्पति कितनी भी ताकतवर क्यों न मानी जाती हो, वह भी अकाल पुरख के भय में ही है, यथा :

भै विचि पवणु वहै सदवाउ॥
भै विचि चलहि लख दरीआउ॥

(पन्ना 464)

यही नहीं :

डरपै धरति अकासु नख्यत्रा सिर ऊपरि अमरु करारा॥
पउणु पाणी बैसंतरु डरपै डरपै इंद्रु बिचारा॥

(पन्ना 998)

निष्कर्षतः समस्त रचना उसी निर्भय स्वरूप परमात्मा के भय में है।

त्रिमान हैं॥ निधान हैं॥ त्रिबरग हैं॥ असरग हैं॥32॥

हे परमात्मा ! तीनों लोकों (आकाश, पाताल, मातलोक) में तेरा मान है अर्थात् तीनों लोकों के जीव तेरे ही समक्ष झुकते हैं, तेरा सत्कार करते हैं। तू सब गुणों का खजाना है। हे प्रभु ! जगत के तीनों पदार्थ (धर्म, अर्थ तथा काम) जीवों को तुझसे ही प्राप्त होते

हैं। तुझे कोई पैदा नहीं कर सकता क्योंकि तू जन्म–रहित है। मूलमंत्र में श्री गुरु नानक देव जी ने **(सैभं)** शब्द में यही भाव प्रतिपादित किये हैं। सैभं अर्थात् स्वयं से प्रकाशवान। **'महान् कोश'** में भी **'सैभं'** के अर्थ स्वयं से होने वाला अंकित है अर्थात् जो किसी से नहीं बना। भाई गुरदास जी के चिंतनानुसार भी उसे स्वयं से प्रकाशवान कहा गया है, यथा :

अकाल मूरति परतखि होइ नाउ अजूनी सैभं भाइआ।

(वार 39:1)

अनील हैं। अनादि हैं।। अजे हैं। अजादि हैं।।33।।

हे वाहिगुरु ! तू **'अनील'** अर्थात् अनिल, हवा (हवा से अभिप्राय प्राणवायु) है। सारे जीव तेरे सहारे ही जीवित हैं। **'अनादि'** से अभिप्राय, तू कब का है, तेरी शुरूआत कब हुई, कोई नहीं जानता। हे प्रभु ! तू **'अजे'** अर्थात् तुझे कोई जीत नहीं सकता। तू सबका मूल है तथा स्वतंत्र स्वरूप है। तू किसी के अधीन नहीं है। दुनिया के समस्त जीव किसी न किसी बंधन में हैं, इस कारण वे पराधीन हैं। कोई पराए वश में है तो कोई मन के वश में है अर्थात् कोई दूसरे का गुलाम है तो कोई अपने ही मन का गुलाम है, जैसे कि प्रसिद्ध उक्ति है – **''पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं।।''** अर्थात् पराधीन रहना अत्यंत कष्टदायी होता है। गुलाम व्यक्ति स्वप्न में भी सुख की कल्पना नहीं कर सकता। एक ईश्वर ही है जो किसी के अधीन नहीं इसलिए उसे सुखों का सागर कहा जाता है।

अजनम हैं।। अबरन हैं।। अभूत हैं।। अभरन हैं।।34।।

हे ईश्वर ! तू अजन्मा है अर्थात् तू जन्म से रहित है। तेरी कोई विशेष जाति नहीं है क्योंकि तू अवर्ण है। मुख्य चार वर्ण माने गए

हैं– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र। तू इन सबसे न्यारा है। **'अभूत'** अर्थात् तेरी रचना पांच तत्वों से नहीं हुई। जल, वायु, अग्नि, धरती तथा आकाश इन पांच तत्वों से जीवों की रचना हुई है। लेकिन हे ईश्वर ! तू पांच तत्वों की भौतिक रचना से भी परे है और तेरा भरण–पोषण किसी के अधीन नहीं अर्थात् तू **'अभरन'** है अर्थात् पालन–पोषण हेतु किसी की मोहथाजी नहीं। तुझे किसी के आश्रय की आवश्यकता नहीं। तू निराश्रित है।

अगंज हैं।। अभंज हैं।। अझूझ हैं।। अझंझ हैं।।35।।

हे निरंकार ! तुझ पर कोई विजय पा सके ऐसी किसी की हिम्मत कहां ? तू **'अगंज'** है अर्थात् तुझे कोई तोड़ नहीं सकता। तेरे साथ कोई टक्कर ले ऐसी किसी की मजाल कहां ? तुझे किसी प्रकार के झगड़े–झमेले प्रभावित नहीं कर सकते, तू इन सब विवादों से परे है।

विचारणीय पहलू, इस दुनिया में हर इंसान का किसी न किसी से झगड़ा–झमेला है। कभी अपनों द्वारा विश्वासघात के कारण तो कभी अपने–पराये द्वारा ईर्ष्या या द्वेषवश। एक ईश्वर ही ऐसा है जिसे किसी से कोई सरोकार नहीं, किसी से कोई लेना–देना नहीं। उसका किसी के साथ कोई झमेला नहीं।

अमीक हैं।। रफीक हैं।। अधंध हैं।। अबंध हैं।।36।।

हे वाहिगुरु ! तू अथाह सागर है, तेरी गहराई को नापा नहीं जा सकता। तू **'रफीक'** अर्थात् सबका साथी है। तू किसी प्रकार के धंधों में लिप्त नहीं है। तू संसार के बंधनों से आजाद है। हे ईश्वर ! तू समस्त बंधनों–धंधों से मुक्त है। माया का कोई बंधन तुझे फंसा नहीं सकता क्योंकि माया तेरे ही अधीन है।

त्रिबूझ हैं ।। असूझ हैं ।। अकाल हैं ।। अजाल हैं ।।37 ।।

हे परमात्मा ! तू अबूझ पहेली है। तेरे गहरे भेद कोई नहीं जान सकता। तू जीव की बुद्धि की पहुंच से परे है। क्योंकि इंसान की बुद्धि ससीम अर्थात् एक सीमा में है और हे ईश्वर ! तू असीम, सीमा रहित है। असीम को ससीम बुद्धि द्वारा कैसे जाना जा सकता है ? तू मौत से रहित है। माया के बंधन तुझे फंसा नहीं सकते। कारण स्पष्ट है कि माया ईश्वर की दासी है। काल उसे मार नहीं सकता तथा माया के बंधन उसे बांध नहीं सकते। भक्तों-संतों ने माया को चोरटी कहा है। भक्त कबीर जी का वचन है :

कबीर माइआ चोरटी मुसि मुसि लावै हाटि ।।
एकु कबीरा ना मुसै जिनि कीनी बारह बाट ।।

(पन्ना 1365)

माया-ग्रस्त जीव अनेकों योनियों में भटकते रहते हैं। श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है :

केते रुख बिरख हम चीने केते पसू उपाए ।।
केते नाग कुली महि आए केते पंख उडाए ।।

(पन्ना 156)

राग आसा में गुरु पातशाह ने माया रूपी सर्पिणी के विष के वशीभूत जगत के समस्त प्राणियों को बताया है। एक घरेलू सम्बन्ध द्वारा माया के प्रभाव को स्पष्ट करते हुए गुरु पातशाह के वचन हैं :

सासु बुरी घरि वासु न देवै पिर सिउ मिलण न देइ बुरी ।।

(पन्ना 355)

माया के प्रभाव से बचना अति कठिन है। केवल एक ईश्वर का नाम ही माया के प्रभाव से रहित है, यथा :

ऐसा नामु निरंजनु होइ।।
जे को मंनि जाणै मनि कोइ।।

(पन्ना 3)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भी उस अकाल पुरख को माया के प्रभाव से रहित दर्शाया है। एक परमात्मा तथा उसके नाम को ही माया के प्रभाव से परे बताया गया है, सृष्टि के शेष समस्त जीव माया के प्रभाव के अधीन हैं।

अलाह हैं।। अजाह हैं।। अनंत हैं।। महंत हैं।।38।।

हे परमात्मा ! तू अलाह अर्थात् अलभ है अर्थात् तुझे कहीं ढूंढा नहीं जा सकता। कारण भी स्पष्ट है क्योंकि हे ईश्वर ! तेरा कोई विशेष ठिकाना नहीं है। तू तो कण-कण में विद्यमान है। श्री गुरु तेग बहादर जी का पावन फरमान है :

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।

(पन्ना 1427)

अक्सर एक भ्रम में दुनिया के लगभग सब प्राणी हैं। हम सब उस ईश्वर को किसी विशेष स्थान पर ढूंढने का प्रयत्न करते हैं। मुख्यतया तीर्थ-स्थानों, गुफाओं, पर्वतों की चोटियों पर या किसी एकांत में उसे खोजने का यत्न करते हैं। चिन्तनशील पुरुष उसे सर्वत्र देखते हैं और वे दूसरों का भी मार्ग-दर्शन करते हुए कह उठते हैं :

फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वणि कंडा मोड़ेहि।।
वसी रबु हिआलीऐ जंगलु किआ ढूढेहि।।

(पन्ना 1378)

इस बंद में गुरु पातशाह फरमान करते हैं, हे प्रभु, तू बेअंत है। तेरा अंत नहीं पाया जा सकता क्योंकि तू अनंत है। तू सबसे बड़ा है।

निष्कर्षतः उस ईश्वर का कोई विशेष ठिकाना नहीं है वह सर्वत्र में विद्यमान है, वह बेअंत तथा सर्वोपरि है।

अलीक हैं।। निस्रीक हैं।।
त्रिलंभ हैं।। असंभ हैं।।39।।

हे ईश्वर ! तू अलीक है अर्थात् जिसकी सीमा की कोई रेखा न खींची जा सके। कहने का अभिप्राय, उसका अंतिम छोर बताने की किसी में समर्थता नहीं है, जैसा कि भाई गुरदास जी का कथन है :

ओड़िकु मूलि न लभई सभे होइ फिरनि हैराणै।

(वार 7:18)

वह परमात्मा हद से परे है, बेहद है। उसकी हद जानने में तो कोई तभी समर्थ हो सकता है यदि वह उस हद तक पहुंच सके, यथा :

एवडु ऊचा होवै कोइ।।
तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ।।

(पन्ना 5)

गुरु पातशाह का फरमान है कि उसका कोई शरीक नहीं है। कोई ईश्वर के साथ शराकत (हिस्सेदारी) नहीं कर सकता। उस परमात्मा के निस्रीक रूप को एक शायर के मनोभावों द्वारा समझने का यत्न करें। परमात्मा और जीवात्मा के मध्य हुए वार्तालाप का जिक्र एक शायर ने इस प्रकार किया है :

कहा मैंने इक रोज, ऐ मेरी जां !
मेरे और कुल आलम के रूहे-खां !
जी में यह हसरत है ऐ दिलरुबा !
मेरे घर मेहमान बन के तू आ !
प्रभु ने यह सुनकर कहा बस कि हाँ।
मगर है तेरे पास कोई मकां। (मकान)
जहां मुझको ले जाकर बिठलाएगा।
और उस जगह पे फिर नहीं कोई आएगा ?
कहा मैंने है खानाए दिल मेरा।
उसी में रहता हूं मैं भी सदा
खुदा ने कहा, यह नहीं बात ठीक।
मेरा नाम है वाहिदे-ला-शरीक
शराकत की मुझ में रसाई नहीं
तेरी दावत मुझ को भायी नहीं।
अगर है मेरी ख्वाहिश, ऐ खुश-खसाल !
खुदी खाना दिल से तू बाहर निकाल।
फिर उसमें ही देखे तू मुझको सदा।
बका ही रहे फिर न आये फ़ना।

कहने का अभिप्राय, जब कोई हृदय से **'मैं मेरी'** निकाल देता है तब सर्वत्र में ईश्वर का दीदार करता है। गुरदेव आगे फरमान करते हैं कि उस मालिक को किसी के सहारे की आवश्यकता नहीं क्योंकि ईश्वर निराश्रित है और इंसानी सोच से परे है। वह किसी के सोच-मण्डल में नहीं समा सकता।

अगंम हैं। अजंम हैं ॥ अभूत हैं॥ अछूत हैं ॥40॥

हे अकाल पुरख ! तू इंसानी पहुंच से परे है। तू जन्म में नहीं आता। तू पांच भौतिक तत्वों से निर्मित नहीं है अर्थात् पांच तत्वों से तेरी रचना नहीं हुई। संसार के समस्त प्राणियों की रचना पांच भौतिक तत्वों से हुई है। हे ईश्वर ! तू इन पांच भौतिक तत्वों से रहित है। तुझे पांच भौतिक तत्वों से निर्मित जीव छू नहीं सकते।

अलोक हैं॥ असोक हैं॥ अकरम हैं॥ अभरम हैं॥41॥

हे वाहिगुरु ! तू इन नेत्रों से दिखाई नहीं देता। तुझे देखने हेतु ज्ञान रूपी नेत्रों की आवश्यकता होती है जैसा कि गुरबाणी का फरमान है :

नानक से अखड़ीआ बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी॥

(पन्ना 1100)

वास्तव में वे तो अनुभव की आँखें हैं, जिनके द्वारा एहसास हो सकता है कि वह इन्द्रियों की पहुंच से परे है, यथा :

अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा॥
पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा॥
जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा॥
नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा॥

(पन्ना 139)

गुरदेव आगे फरमान करते हैं कि हे ईश्वर ! तू असोक अर्थात् शोक से रहित है। तुझे कोई चिन्ता नहीं सता सकती। तू कर्मों के बंधनों से रहित है। तेरी प्राप्ति किसी भी तरह के धार्मिक क्रिया-कलापों द्वारा मुमकिन नहीं है क्योंकि तू कर्म-बंधनों से मुक्त है। तू

भ्रम–भुलेखों से परे है। तू संसारी जीवों की तरह भ्रम–जाल में नहीं फंसता।

अजीत हैं॥ अभीत हैं॥ अबाह हैं॥ अगाह हैं॥42॥

हे ईश्वर ! तुझे कोई जीत नहीं सकता। तुझ पर विजय पाना नामुमकिन है। तू भय से रहित है। तुझे किसी का भी डर नहीं है। मूलमंत्र में भी आपके भयरहित स्वरूप को श्री गुरु नानक देव जी ने **'निरभउ'** कहकर प्रतिपादित किया है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने **'अभीत'** शब्द द्वारा ईश्वर के निडर स्वरूप को प्रतिपादित किया है। गुरु जी फरमान कर रहे हैं कि तू एक ऐसा पर्वत है जिले हिलाया नहीं जा सकता। तू अटल शक्ति है जिसे कोई हिला नहीं सकता। तू सागर जैसा गहरा है जिसे नापने का कोई पैमाना नहीं है। तेरे विस्तार तथा तेरी गहराई को कोई नहीं जान सकता, यथा :

वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी गहीरा॥
कोइ न जाणै तेरा केता केवडु चीरा॥

(पन्ना 9)

अमान हैं॥ निधान हैं॥ अनेक हैं॥ फिरि एक हैं॥43॥

हे वाहिगुरु ! तेरा कोई मापतोल नहीं है, दुनिया का कोई भी पैमाना तेरा अंदाजा नहीं लगा सकता। तू समस्त गुणों एवं पदार्थों का खजाना है। तू अनेक रूपों वाला है अर्थात् तूने अपने एक स्वरूप से अनंत रूप बनाए हुए हैं, यथा :

सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस
मूरति नना एक तुोही॥...
सभ महि जोति जोति है सोइ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ॥

(पन्ना 13)

अनेक रूपों वाला होते हुए भी तू एक रूप है, यथा :

आपन खेलु आपि करि देखै॥
खेलु संकोचै तउ नानक एकै॥

(पन्ना 292)

तू अलबेला है, अनोखा है। तेरे जैसा कोई नहीं। हे ईश्वर! तू सब में समाया हुआ है फिर भी सबसे निर्लेप है। वस्तुतः तेरे जैसा केवल तूँ ही है।

भुजंग प्रयात छंद॥

नमो सरब माने॥ समसती निधाने॥
नमो देव देवे॥ अभेखी अभेवे॥44॥

गुरदेव उस ईश्वर के विविध रूपों को नमस्कार करते हुए फरमान करते हैं कि हे वाहिगुरु ! तुझे नमस्कार है। तुझे संसार के सभी जीव पूजते हैं। तू समस्त पदार्थों का खजाना है। हे देवों के देव अर्थात् सब देवताओं के देवता ! तुझे नमस्कार है। तेरा कोई विशेष पहरावा नहीं तथा तेरा कोई भेद नहीं पा सकता, यथा :

महादेव को कहत सदा सिव॥
निरंकार का चीनत नहि भिव॥

(चोपई पाः 10)

नमो काल काले॥ नमो सरब पाले॥
नमो सरब गउणे॥ नमो सरब भउणे॥45॥

हे वाहिगुरु ! तुझे नमस्कार है। तू मौत को भी नष्ट कर देने वाला है अर्थात् तू काल का भी काल है। तू सबका पालनहार है। तेरी सब जगह, सब जीवों तक पहुंच है। तू सब भवनों में मौजूद है। तू सर्वत्र में व्याप्त है।

अनंगी अनाथे।। त्रिसंगी प्रमाथे।।
नमो भान भाने।। नमो मान माने।।46।।

हे मालिक ! तुझे नमस्कार है। तेरा कोई खास अंग नहीं, तेरा कोई मालिक नहीं अर्थात् तुझ पर हकूमत चलाने वाला कोई नहीं। तेरा बराबर का कोई संगी-साथी नहीं। तू प्रमाथे अर्थात् सबको नष्ट करने वाला है। हे परमात्मा ! तू सूरजों का सूरज है अर्थात् सूर्य तेरी ही रोशनी से रोशन है अर्थात् तेरे दिए प्रकाश से प्रकाशित है। बड़े-बड़े प्रतिष्ठित लोग भी तुझे ही पूजते हैं अर्थात् तेरी ही आराधना करते हैं।

नमो चंद्र चंद्रे।। नमो भान भाने।।
नमो गीत गीते।। नमो तान ताने।।47।।

हे परवरदिगार ! तुझे नमस्कार है। तू चांद को चांदनी देने वाला, सूर्य को प्रकाश देने वाला है। तू एक महान् गीत है, तू एक महान् तान है, दिल को छूने वाला तराना है जो मधुर झंकार से जगत को मंत्र-मुग्ध कर देता है।

गुरु पातशाह ईश्वर के जमाल एवं जलाल रूप का वर्णन करते हुए कथन करते हैं कि ईश्वर **'जमाल'** रूप में चंद्रमा को शीतलता प्रदान कर रहा है तथा **'जलाल'** रूप में सूर्य को तेजस्वी प्रकाश प्रदान कर रहा है। हे ईश्वर ! तू शांत और प्रचण्ड दोनों ही रूपों का खजाना है। कहीं तू सुंदर गीत, दिलकश तराना है। कहीं तू संगीत रूपी मधुर ध्वनियों से जग को मोह रहा है तो कहीं प्रचण्ड रूप में उन्हें नष्ट भी कर रहा है।

नमो त्रित त्रिते।। नमो नाद नादे।।
नमो पान पाने।। नमो बाद बादे।।48।।

हे प्रभु ! नमस्कार है तुझे कि तू एक मनमोहक नृत्य है। तेरी आवाज अत्यंत सुरीली है। तेरा सुंदर नृत्य देखकर तथा तेरी मधुर आवाज सुनकर सारा जगत मोहित हो रहा है। तू एक महान् नगारची अर्थात् ढोल बजाने वाला है। जैसे ढोल बजाने वाला ढोल पर थाप देकर आस-पास के लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। बस, अंतर इतना है कि ढोल बजाने वाले की आवाज थोड़ी दूर तक ही जाती है पर हे ईश्वर ! तेरे ढोल की आवाज तो तीनों लोकों, खण्डों-ब्रह्मण्डों में जाती है। प्रभु ने तो मानो ढोल बजाकर सारा जगत रूप मेला एकत्र किया हुआ है, जैसा कि गुरबाणी का फरमान है :

पपै पातिसाहु परमेसरु वेखण कउ परपंचु कीआ ॥
देखै बूझै सभु किछु जाणै अंतरि बाहरि रवि रहिआ ॥

(पन्ना 433)

अनंगी अनामे ॥ समसती सरूपे ॥
प्रभंगी प्रमाथे ॥ समसती बिभूते ॥49॥

हे वाहिगुरु ! तुझे नमस्कार है। तेरा विशेष अंग नहीं है। (क्योंकि वह ईश्वर देह रहित है) न ही तेरा कोई विशेष नाम है। सारे ही जीव तेरा ही तो रूप हैं। तू जगत में प्रलय लाने वाला है। तू सबको नष्ट करने वाला है। तू ही सब जीवों को दातें बख्शने वाला है अर्थात् सब जीवों की रिद्धि-सिद्धि है।

कलंकं बिना ने कलंकी सरूपे ॥
नमो राज राजेस्वरं परम रूपे ॥50॥

हे वाहिगुरु ! तू विकार आदि दाग से रहित है। तू पवित्र हस्ती है, खालिस स्वरूप है। नमस्कार है तुझे ! तू सब राजाओं का राजा

है तथा सबसे ऊंची हस्ती है। तू सबसे बड़े स्वरूप वाला है। तेरी हस्ती को बयान करने की किसी में भी समर्थता नहीं है, जैसा कि भक्त कबीर जी का फरमान है :

कबीर सात समुंदहि मसु करउ कलम करउ बनराइ।।
बसुधा कागदु जउ करउ हरि जसु लिखनु न जाइ।।

(पन्ना 1368)

सात समुद्र की स्याही तथा सारी प्रकृति (वनों की लकड़ी) को कलम बना लूं, सारी धरती कागज बन जाए तब भी परमात्मा का यश लिखा नहीं जा सकता। उस गुणों के सागर की महिमा अपरंपार है। गुरदेव परमात्मा के समस्त स्वरूपों को नमस्कार करते हैं।

नमो जोग जोगेस्वरं परम सिद्धे।।
नमो राज राजेस्वरं परम ब्रिधे।।51।।

हे वाहिगुरु ! तुझे नमस्कार है कि तू योगियों का योगी अर्थात् योगीराज है। तू सबसे बड़ा सिद्ध है अर्थात् सबसे ऊँची आत्मिक अवस्था वाला सिद्ध पुरुष है। तू राजाओं का राजा तथा सबसे बड़ा हाकिम है अर्थात् तेरी हकूमत सबके ऊपर चलती है। तुझे नमस्कार है। तेरी हस्ती सर्वोत्तम है।

नमो ससत्र पाणे।। नमो असत्र माणे।।
नमो परम गिआता।। नमो लोक माता।।52।।

हे ईश्वर ! तुझे नमस्कार है। तू सभी तरह के हथियार धारण करने वाला है। नमस्कार है तुझे, जिसके कर-कमलों में तलवार आदि हथियार सुसज्जित हैं। दूर से फेंके जाने वाले तीर तथा चक्र आदि शस्त्रों को भी तू धारण करने वाला है। तू सब जीवों के मन

की बात (भावों) को भी भली-भांति जानने वाला है अर्थात् तू अंतरयामी है। आम कहावत है – **'दिल दरिआ समुंदरों डूंघे कौंण दिलां दीआं जाणे!'** किसी के मन में क्या चल रहा है कोई नहीं जानता, पर हे परमात्मा ! तू तो **'घट घट के अंतर की जानत।। भले बुरे की पीर पछानत।।'** है। **(चौपई पाः 10)**

गुरदेव आगे फरमान करते हैं कि हे ईश्वर ! तू जगत-माता है क्योंकि जैसे मां बच्चे को प्यार करती है वैसे ही तू जगत के जीवों से प्यार करता है।

अभेखी अभरमी अभोगी अभुगते।।
नमो जोग जोगेस्वरं परम जुगते।।53।।

हे वाहिगुरु ! तेरा कोई विशेष पहरावा नहीं। तू समस्त भ्रमों-भुलेखों से रहित है। तू इन्द्रियों के रसों को भोगने वाला नहीं है। हे योगियों में महान् योगी ! तुझे नमस्कार है। तू युक्तिवान है।

लोग दुनिया में रसों को भोगते हुए अक्सर स्वयं को कमजोर करते रहते हैं। समय पाकर ये रस ही इंसान को भोगने लगते हैं। परन्तु हे ईश्वर ! तू इन रसों में फंस कर स्वयं को क्षीण नहीं करता, तू इन सबसे परे है।

नमो नित्त नाराइणे क्रूर करमे।।
नमो प्रेत अप्रेत देवे सुधरमे।।54।।

हे प्रभु ! तुझे नमस्कार है क्योंकि तू सब जीवों की रक्षा करने वाला है तथा उन्हें मारने वाला भी, तेरे दोनों ही रूप हैं – रक्षक भी, भक्षक भी। हे परमात्मा ! तुझे नमस्कार है। समस्त अच्छी और बुरी रूहें तेरा ही अंश हैं अर्थात् तेरा ही रूप हैं। तू जगत रूपी

परिवार की पालना बड़े ही स्नेहपूर्ण ढंग से करता है। तू श्रेष्ठ धर्म वाला है।

परमात्मा के पालनकर्त्ता व संहारक रूप को गुरबाणी में अन्यत्र भी दर्शाया गया है, यथा :

सभु करता सभु भुगता ।।1 ।।रहाउ ।।
सुनतो करता पेखत करता ।।
अद्रिसटो करता द्रिसटो करता ।।
ओपति करता परलउ करता ।।
बिआपत करता अलिपतो करता ।।1 ।।
बकतो करता बूझत करता ।।
आवतु करता जातु भी करता ।।
निरगुन करता सरगुन करता ।।
गुर प्रसादि नानक समद्रिसटा ।।2 ।।

(पन्ना 862)

कलगीधर पातशाह ने भी उस परमात्मा के पालक एवं संहारक रूप का सुंदर निरूपण किया है।

नमो रोग हरता नमो राग रूपे ।।
नमो साह साहं नमो भूप भूपे ।।55 ।।

हे वाहिगुरु ! तुझे इसलिए भी नमस्कार है कि तू सबके दुःख दूर करने वाला है। वस्तुतः गुरबाणी के आशयानुसार तेरा नाम ही सारे दुःख नाश करने वाला है, यथा :

दुख भंजनु तेरा नामु जी दुख भंजनु तेरा नामु ।।
आठ पहर आराधीऐ पूरन सतिगुर गिआनु ।।1 ।।

(पन्ना 218)

हे ईश्वर ! तू प्रेम स्वरूप है। गुरु पातशाह का फरमान है :

साचु कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ।।

(सवय्ये पातशाही 10)

इसी बंद में गुरु पातशाह उस परमात्मा को बादशाहों का बादशाह तथा राजाओं का राजा कहकर नमस्कार करते हैं।

नमो दान दानें नमो मान माने।।
नमो रोग रोगे नमसतं सनाने।।56।।

हे वाहिगुरु ! तुझे इसलिए भी नमस्कार है कि तू उदारचित है, महादानी है। दुनिया के पूजनीय लोग भी तुझे ही पूजते हैं। तू समस्त रोगों का समूल नाश करने वाला है। तू शुद्धि व आरोग्यता का दाता है। तू स्वयं ही शुद्ध स्वरूप एवं पवित्रतम स्वरूप है। ईश्वर समस्त रोगों का नाश करने वाला है, जैसा कि गुरबाणी का फरमान है :

रोगु मिटाइआ आपि प्रभि उपजिआ सुखु सांति।।
वड परतापु अचरज रूपु हरि कीन्ही दाति।।

(पन्ना 819)

अन्यत्र भी इसी भाव की पुष्टि हुई है, जैसे कि :

ताप पाप ते राखे आप।।
सीतल भए गुर चरनी लागे
राम नाम हिरदे महि जाप।।

(पन्ना 825)

अतः जब जीव सब भ्रमों–भुलेखों का त्याग कर नाम रूपी दारू (दवा) लेता है तो उसके समस्त दुखों, कलेशों, संतापों का नाश स्वतः हो जाता है, यथा :

अवरि उपाव सभि तिआगिआ दारू नामु लइआ।।
ताप पाप सभि मिटे रोग सीतल मनु भइआ।।

(पन्ना 817)

यही नहीं, गुरबाणी के अनुसार नाम ही समस्त दुःखों से मुक्ति प्रदान करने वाली औषधि है। वह ईश्वर शुद्ध स्वरूप और निरोग है, यथा :

मेरा बैदु गुरू गोविंदा।।
हरि हरि नामु अउखधु मुखि देवै काटै जम की फंधा।।

(पन्ना 618)

स्पष्ट है कि जिसे गुरु-कृपा से हरि-नाम रूपी औषधि मिल जाती है उसके दुनियावी दुःख तो क्या उसका तो आवागमन का चक्कर भी खत्म हो जाता है।

नमो मंत्र मंत्रं।। नमो जंत्र जंत्रं।।
नमो इसट इसटे।। नमो तंत्र तंत्रं।।57।।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा रचित इस बंद में मंत्र, यंत्र तथा तंत्र शब्द की व्याख्या प्रो. साहिब सिंघ जी के चिंतनानुसार इस प्रकार प्रतिपादित की गई है, यथाः (1) देवता को खुश करने हेतु उस देवता के स्वभावानुसार कुछ विशेष लफजों (शब्दों) की तुक को बार-बार पढ़ना, इसे **'मंत्र'** कहा जाता है। (2) पत्र या कागज आदि पर उस **'इष्ट देव'** से सम्बन्ध रखने वाले कुछ अक्षर या अंक लिख कर उसे अपने पास रखना **'यंत्र'** कहलाता है। (3) उस **'इष्ट देव'** को खुश करने हेतु कुछ विशेष रस्में अदा करना, जैसे भूतों को वश में करने वाली कब्रों में जाकर दूध या अन्य वस्तुएं कई ढंगों से उन्हें

भेंट करते हैं, इसे **'तंत्र'** कहते हैं। इष्ट से अभिप्राय सबसे प्यारा देवता है।

लेकिन इस बंद में गुरु कलगीधर पातशाह अपना इष्ट उस अकाल पुरख को मानते हैं तथा कथन करते हैं कि परमात्मा ! तुझे इसलिए भी नमस्कार है कि तेरा नाम ही मेरे लिए सबसे बड़ा **'मंत्र'** है, सबसे बड़ा **'यंत्र'** है तथा सबसे बड़ा **'तंत्र'** है। हे ईश्वर ! अन्य प्रचलित यंत्रों, मंत्रों, तंत्रों का सहारा न लेकर मैं तो मात्र तेरा सबसे बड़ा और कभी न चूकने वाला सहारा ही चाहूंगा।

सदा सच्चदानंद सरबं प्रणासी।।
अनूपे अरूपे समसतुल निवासी।।58।।

हे वाहिगुरु ! तू सदैव सत्य स्वरूप है जैसा कि श्री गुरु नानक देव जी ने जपु जी साहिब में उस अकाल पुरख के सदैव कायम सत्य स्वरूप को बयान किया है :

आदि सचु जुगादि सचु।।
है भी सचु नानक होसी भी सचु।।

(पन्ना 1)

गुरु कलगीधर पातशाह भी उस अकाल पुरख के सत्य-स्वरूप, ज्ञान-स्वरूप तथा आनंद-स्वरूप का वर्णन करते हैं कि हे वाहिगुरु ! तू ही सत्य है, तू ही ज्ञान का अथाह भण्डार है तथा तू ही आनंद का सागर है। इसका वर्णन करते हुए गुरु जी उस परमात्मा के संहारक स्वरूप का भी वर्णन करते हैं, 'हे मालिक ! तू सब जीवों का नाश करने वाला भी है। तू उपमा-रहित है भाव तेरे जैसा कोई नहीं जिससे तेरी तुलना की जा सके। तू अतुलनीय है। तू समस्त जीवों में समाया हुआ है अर्थात् तू सर्वव्यापी है। तू रूप-रहित है,

फिर भी सब में समाया हुआ है। प्रकृति का कोई भी कण ऐसा नहीं जिसमें तू रचा-बसा न हो।

सदा सिधदा बुधदा ब्रिध करता॥
अधो उरध अरधं अघं ओघ हरता॥59॥

हे प्रभु ! तू ही सबको आत्मिक शक्ति प्रदान करने वाला है अर्थात् सब जीवों को कामयाबी और सफलता तू ही बख्शिश करता है। तू आत्मिक शक्ति के साथ-साथ बुद्धि देने वाला है। अर्थात् समझ व ज्ञान बख्शने वाला है। तू ही जीव को उन्नति देने वाला है। हे ईश्वर ! तू ही पाताल, आकाश तथा मातलोक (बीच में) सर्वत्र में मौजूद है। तू जीवों के अनंत पाप क्षमा करने वाला है। गुरबाणी में अन्यत्र भी ईश्वर को करोड़ों मंद कर्मों का नाश करने वाला बताते हुए **भट्ट टल जी** अपने सवय्ये में इस प्रकार वर्णन करते हैं, यथा :

अमिअ द्रिसटि सुभ करै हरै अघ पाप सकल मल॥
काम क्रोध अरु लोभ मोह वसि करै सभै बल॥
सदा सुखु मनि वसै दुखु संसारह खोवै॥
गुरु नव निधि दरीआउ जनम हम कालख धोवै॥
सु कहु टल गुरु सेवीऐ अहिनिसि सहजि सुभाइ॥
दरसनि परसिऐ गुरु कै जनम मरण दुखु जाइ॥

(पन्ना 1392)

वस्तुतः वह परमात्मा ही रहमत करे तो जीव के कर्मों के लेखे नष्ट होते देर नहीं लगती, अन्यथा बाणी आशयानुसार :

माटी का किआ धोपै सुआमी माणस की गति एही॥

(पन्ना 882)

परं परम परमेस्वरं प्रोछ पालं ।।
सदा सरबदा सिद्ध दाता दिआलं ।।60।।

गुरु कलगीधर पातशाह उस परमात्मा का गुणगान करते हुए फरमान करते हैं कि हे मालिक ! तू बड़ा ऊंचा है। तू जीवों को प्रत्यक्ष दिखाई न देता हुआ भी जीवों का पालन–पोषण कर रहा है। तू जीवों को सदैव सिद्धियां देने वाला अर्थात् जीवों को कामयाबी एवं आत्मिक बल देने वाला है। तू रहमतों का दरिया है। अतः तू सब पर दया करने वाला दयालु–कृपालु प्रभु है। गुरबाणी में अन्यत्र भी इसी भाव को दृढ़ करवाया गया है कि उस ईश्वर के बिना ऐसी बख्शिशें और कौन कर सकता है ? जैसे कि :

सभि सत सभि तप सभि चंगिआईआ ।।
सिधा पुरखा कीआ वडिआईआ ।।
तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ ।।
करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ।।
आखण वाला किआ वेचारा ।।
सिफती भरे तेरे भंडारा ।।
जिसु तू देहि तिसै किआ चारा ।।
नानक सचु सवारणहारा ।।

(पन्ना 9)

वह परमात्मा रहमतों का सागर है, समस्त बख्शिशों का भण्डार है। समस्त देवी–देवते भी उसी परमात्मा के दर पर खड़े होकर उसकी उसतति कर रहे हैं, अतः तू भी उसी के दर पर विनती कर, दर–दर पर भटकना छोड़ दे। उसी परवरदिगार से रहमतों की याचना कर, केवल उसी के आगे झोली फैला, यथा :

सिध समाधी अंतरि जाचहि रिधि सिधि जाचि करहि जैकार।।

(पन्ना 504)

अछेदी अभेदी अनामं अकामं।।
समसतो पराजी समसतसतु धामं।।61।।

हे वाहिगुरु ! न तुझे कोई तोड़ सकता है न ही तुझे कोई खंडित कर सकता है। तू अनाम है अर्थात् तेरा कोई विशेष नाम नहीं है। तू कामना रहित है अर्थात् तुझे किसी प्रकार की भी कोई इच्छा नहीं है। तू सर्वत्र पर विजय प्राप्त करने वाला है। तेरा हर जगह धाम है अर्थात् तेरा कण-कण में निवास है।

तेरा जोरु ।। चाचरी छंद।।
जले हैं।। थले हैं।। अभीत हैं।। अभे हैं।।62।।

गुरु कलगीधर पातशाह स्पष्ट कर रहे हैं कि तेरा जोर अर्थात् तेरे बल से हे वाहिगुरु ! तेरी शक्ति से यह बाणी उच्चरित कर रहा हूं। **'चाचरी'** छंद का नाम है।

हे वाहिगुरु ! तू जल में तथा थल पर अर्थात् धरती पर सर्वत्र में समाया हुआ है। तुझे किसी का भी भय नहीं अर्थात् तू निर्भय-स्वरूप है। तेरा कोई भेद नहीं पा सकता। इस सन्दर्भ में गुरबाणी में अनेक प्रमाण हैं, यथा –

सुणि वडा आखै सभु कोइ।।
केवडु वडा डीठा होइ।।
कीमति पाइ न कहिआ जाइ।।
कहणै वाले तेरे रहे समाइ।।
वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी गहीरा।।

कोइ न जाणै तेरा केता केवडु चीरा॥

(पन्ना 9)

हे परमात्मा ! दूसरों से सुन-सुन कर तुझे हर कोई बड़ा-बड़ा कहता है पर तू कितना बड़ा है, तेरा पसारा (विस्थार) कितना है, आज तक कोई नहीं जान सका।

प्रभु हैं॥ अजू हैं॥ अदैस हैं॥ अभेस हैं॥63॥

गुरदेव फरमान करते हैं कि हे परमात्मा ! तू सबका मालिक है। तू अटल अर्थात् सदैव कायम रहने वाला है। तुझे कोई हिला नहीं सकता। हे ईश्वर ! न तो तेरा कोई एक विशेष देश है और न ही तेरा कोई विशेष पहरावा है।

भुजंग प्रयात छंद॥
अगाधे अबाधे॥ अनंदी सरूपे॥
नमो सरब माने॥ समसती निधाने॥64॥

'भुजंग प्रयात' छंद में रचित इस बंद में गुरदेव उस अकाल पुरख के विविध रूपों को बयान करते हुए फरमान करते हैं कि हे परमात्मा ! तू अथाह है अर्थात् अपार है, तेरा कोई पार नहीं पा सकता। तू बाधा-रहित है, अतः तेरे मार्ग में कोई रुकावट पैदा नहीं कर सकता। तू सदा आनंद-स्वरूप है अर्थात् तू आनंद का निर्झर है, जो निरन्तर प्रवाहमान है। तू सदैव आनंद में रहता है, केवल रहता ही नहीं आनंद की वर्षा भी निरन्तर करता है। समस्त जीव तुझे नमस्कार करते हैं, तेरा मान-सत्कार करते हैं। तू समस्त गुणों एवं सभी पदार्थों का खजाना है। गुरदेव की उस अकाल पुरख को नमस्कार है।

नमसतं त्रिनाथे।। नमसतं प्रमाथे।।
नमसतं अगंजे।। नमसतं अभंजे।।65।।

हे वाहिगुरु ! तुझे नमस्कार है। तेरे ऊपर कोई और मालिक नहीं अर्थात् तू ही सबका मालिक है। अतः तुझ पर किसी का हुक्म नहीं चलता। तू सबका संहारक अर्थात् नाशकर्त्ता है। तू अजित–स्वरूप है। तुझ पर कोई विजय नहीं पा सकता। तू अभंज है, अतः तुझे कोई भी तोड़ने की सामर्थ्य नहीं रखता। तेरे स्वरूप को कोई खंडित नहीं कर सकता।

नमसतं अकाले।। नमसतं अपाले।।
नमो सरब देसे।। नमो सरब भेसे।।66।।

हे प्रभु ! तुझे नमस्कार है। तुझे काल अर्थात् मौत भी छू नहीं सकती। तुझे किसी की मोहथाजी नहीं क्योंकि तेरे पालन–पोषण हेतु किसी की भी सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ती। हे समस्त देशों में व्यापक प्रभु ! तुझे नमस्कार है। सारी दुनिया के पहरावे तेरे ही पहरावे हैं। वस्तुतः वह मालिक सब देशों में मौजूद है, सर्वत्र में समाया हुआ है, उसके बिना कहीं भी किसी भी जीव का कोई अस्तित्व नहीं है।

नमो राज राजे।। नमो साज साजे।।
नमो शाह शाहे।। नमो माह माहे।।67।।

हे करतार ! तुझे नमस्कार है। तू सब राजाओं का राजा है। हे बादशाहों के बादशाह ! तू सम्पूर्ण सृष्टि का सृजक है। हे सृजनहार प्रभु ! तुझे नमस्कार है। तू चन्द्रमाओं का भी चन्द्रमा है अर्थात् चन्द्रमा को भी शीतल चांदनी देने वाला तू ही है, चन्द्रमा भी तुझसे ही रोशन है।

बादशाहों के बादशाह उस परमात्मा के सन्दर्भ में गुरदेव के चिन्तन को शेख फरीद जी ने उसी परमात्मा (खुदा) की चाकरी करने की सबसे अपील की है, यथा :

फरीदा साहिब दी करि चाकरी दिल दी लाहि भरांदि॥
दरवेसां नो लोड़ीऐ रुखां दी जीरांदि॥

(पन्ना 1381)

शेख फरीद जी भी बादशाहों के बादशाह की चाकरी करने का उपदेश दे रहे हैं। एक बार शेख फरीद जी लोक–कल्याणकारी कार्यों हेतु किसी बादशाह के दरबार में मदद मांगने गए। आगे बादशाह खुदा की इबादत में लगा था। कुछ समय इंतजार करते हुए शेख जी ने उस बादशाह को खुदा से कुछ मांगते देखा तो स्वयं उठ कर महल से बाहर आ गए। जब बादशाह को पता चला कि एक फकीर आया और बिना कुछ मांगे चला गया तो उसने सेवकों को भेजकर उनको वापिस बुलवाया। शेख फरीद जी जब वापिस महल पहुंचे तो बादशाह ने पूछा, फकीर जी ! आप आए भी और बिना कुछ मांगे चले भी गए, कहो क्या चाहिए ? बाबा फरीद जी ने जो जवाब दिया वह कलयुगी जीवों का मार्ग प्रशस्त करने वाला था। उन्होंने कहा, ''यहां आना मेरी भूल थी। जब मैंने एक बादशाह को हाथ फैला कर खुदा से मांगते देखा तो मैंने सोचा कि मैं भी क्यों न उस बादशाहों के बादशाह **'खुदा'** से ही मांगू जो सबको दातें बख्शने वाला है!''

एक आम धारणा है – **''दाते दे दर तों मंग लै, दर–दर तो मंगना छोड़ दे।''** वस्तुतः **'राजा'** वह है जो **'रज़'** गया हो अर्थात् तृप्त हो गया हो, जिसकी कोई मांग शेष न रह गई हो। अतः स्पष्ट हैं कि वह परमात्मा ही सब राजाओं का राजा है।

नमो गीत गीते।। नमो प्रीत प्रीते।।
नमो रोख रोखे।। नमो सोख सोखे।।68।।

हे वाहिगुरु ! तुझे नमस्कार है। गुरदेव फरमान करते हैं, हे परवरदिगार ! तू एक मनमोहक (महा सुंदर) गीत है, जो सबको अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। तू सर्वोच्च प्रेम–स्वरूप है अर्थात् महान् प्यार का अथाह सागर है। तू अति भयानक क्रोध–स्वरूप भी है (सम्पूर्ण सृष्टि तेरे डर में चल रही है) तू सबसे बड़ा नाशकर्त्ता भी है। गुरबाणी में अन्यत्र भी परमेश्वर को भय–रहित हस्ती के रूप में रूपायित किया गया है। आसा की वार में श्री गुरु नानक देव जी ने इस सच्चाई को विविध उदाहरणों से स्पष्ट किया हैं कि सृष्टि में ईश्वर को छोड़कर प्रत्येक जीव तथा कुदरत की प्रत्येक शक्ति प्रभु के ही भय में कार्यरत है अर्थात् उसी के डर में कार्य कर रही है, यथा :

भै विचि पवणु वहै सदवाउ।।
भै विचि चलहि लख दरीआउ।।
भै विचि अगनि कढै वेगारि।।
भै विचि धरती दबी भारि।।
भै विचि इंदु फिरै सिर भारि।।
भै विचि राजा धरम दुआरु।।
भै विचि सूरजु भै विचि चंदु।।
कोह करोड़ी चलत न अंतु।।
भै विचि सिध बुध सुर नाथ।।
भै विचि आडाणे आकास।।
भै विचि जोध महाबल सूर।।
भै विचि आवाहि जावहि पूर।।

सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु।।
नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु।।

(पन्ना 464)

वस्तुतः सदैव स्थिर प्रभु ही भय से पूरी तरह मुक्त है। गुरबाणी में इस तथ्य को भी अच्छी तरह समझाया गया है कि उस प्रभु के भय के बिना भक्ति नहीं हो सकती। यथा :-

भै बिनु भगति न होवई नामि न लगै पिआरु।।

(पन्ना 788)

नमो सरब रोगे।। नमो सरब भोगे।।
नमो सरब जीतं।। नमो सरब भीतं।।69।।

गुरदेव फ़रमान करते हैं कि हे परमात्मा ! तू सभी जीवों की मौत का कारण है। तू सब जीवों में रचा-बसा है अर्थात् सब में समाया हुआ है। तू ही दुनिया के समस्त पदार्थों को भोगने वाला है अर्थात् तू सबसे बड़ा भोगी है। हे प्रभु ! तू सब पर विजय पाने वाला है। अपने आप को अति बलवान, सर्वशक्तिमान समझने व कहलवाने वाला भी तुझसे टक्कर नहीं ले सकता अर्थात् तुझसे कोई जीत नहीं सकता। समस्त ताकतें तेरे अधीन हैं। समस्त जीव तेरे भय में हैं। तेरे इस निर्भय-स्वरूप को भी गुरदेव का नमस्कार है।

नमो सरब गिआनं।। नमो परम तानं।।
नमो सरब मंत्रं।। नमो सरब जंत्रं।।70।।

तू सर्वज्ञ है, सब कुछ जानने वाला है। सम्पूर्ण ज्ञान तुझ में ही समाया है। तू अन्तरयामी है। तू सब जीवों के दिलों की जानने वाला है। तू परम तान अर्थात् तू जगत-रूप अत्यन्त विस्थार वाला

है। संसार की व्यापकता तेरे ही कारण है, तेरे ही द्वारा है। उसके एक हुक्म से ही लाखों दरिया बन गए, यथा :

कीता पसाउ एको कवाउ॥
तिस ते होए लख दरीआउ॥

(पन्ना 3)

आगे गुरदेव उस मालिक के सबको वश करने वाले रूप को नमस्कार करते हैं। हे प्रभु ! तू समस्त जीवों को वश में करने वाला महान् मंत्र है। तू सही सबको वश में करने वाला महान् यंत्र (साधन) है। हे वाहिगुरु ! तेरा नाम ही सबके लिए वशीकरण मंत्र है।

नमो सरब द्रिस्सं॥ नमो सरब क्रिस्सं॥
नमो सरब रंगे॥ त्रिभंगी अनंगे॥71॥

हे समस्त जीवों को अपनी निगरानी में रखकर सबका ध्यान रखने वाले प्रभु ! तुझे नमस्कार है। सब जीवों को अपनी ओर आकर्षित करके अपने में ही समेटने वाले वाहिगुरु तुझे नमस्कार है। हे समस्त रंगों में रंगे हुए प्रभु ! अर्थात् सब में मौजूद सभी रंगों में निवास करने वाले करतार ! तुझे नमस्कार है। हे ईश्वर ! तू तीनों भवनों अर्थात् तीनों लोकों आकाश, पाताश एवं मातलोक को नष्ट करने वाला एवं अंगों से रहित है। जैसे कि सभी जीवों के अंग हैं पर तू शरीर-रहित है। तेरा कोई अंग विशेष नहीं है अर्थात् तू सब शरीरों में विद्यमान होते हुए भी स्वयं शरीर-रहित है।

नमो जीव जीवं॥ नमो बीज बीजे॥
अखिज्जे अभिज्जे॥ समसतं प्रसिज्जे॥72॥

हे प्रभु ! तू सब जीवों की उत्पत्ति तथा जीवन का मूल कारण है, सभी में बीज रूप में विद्यमान है तथा सारी रचना तुझसे ही

मुमकिन है। तेरे बिना किसी के जीवन की कल्पना भी नहीं हो सकती। नमस्कार है तेरे **अखिज्जे** स्वरूप को अर्थात् जिस पर किसी द्वारा रोब न डाला जा सके अर्थात् जिसे कोई दबा नहीं सकता। **अभिज्जे** अर्थात् जिसका वर्गीकरण न किया जा सके, जिसे किसी तरह बांटा न जा सके अर्थात् तेरी शक्ति का कोई बंटवारा नहीं कर सकता, न ही तुझे किसी तरह से खंडित किया जा सकता है। तू सब जीवों पर रहमतें, बख्शिशें करने वाला तथा सबको अपनी कृपा-दृष्टि से प्रसन्न करने वाला है।

निष्कर्षतः वह परमात्मा ही सबकी उत्पत्ति का मूल कारण है और सभी में वही समाया हुआ है। गुरबाणी में अनेक स्थानों पर इसी भाव को दर्शाया गया है, यथा :

तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा॥

(पन्ना 11)

क्रिपालं सरूपे कुकरमं प्रणासी॥
सदा सरबदा रिधि सिधं निवासी॥73॥

हे विलक्षण कृपालु प्रभु ! तू बुराइयों का समूल नाश करने वाला है। सभी रिद्धियां-सिद्धियां सदा तेरे में ही निवास करती हैं। तू समस्त आत्मिक शक्तियों का घर है।

चरपट छंद॥ त्व प्रसादि॥
अंम्रित करमे। अंब्रित धरमे॥
अखल्ल जोगे॥ अचल्ल भोगे॥74॥

उपरोक्त बंद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने **'चरपट'** छंद में उस मालिक की कृपा से रचा है। गुरदेव फरमान करते हैं कि हे वाहिगुरु ! तेरे काम अटल अर्थात् सदा कायम रहने वाले हैं। तेरी मर्यादा का

निर्वाह बिना किसी विघ्न के चल रहा है। तेरे कानून में दखलअंदाजी करके कोई उसमें रुकावट नहीं डाल सकता। तू सारे संसार में एकरस व्यापक है अर्थात् तू सारे जगत से जुड़ा हुआ है। तेरा राज सदैव कायम है। तू सम्पूर्ण योगी तथा भोगी भी है।

उस ईश्वर के सदा अटल रहने वाले कानूनों तथा मर्यादा एवं नियमों का श्री गुरु नानक देव जी ने भी **'आसा की वार'** में बड़ा सुन्दर वर्णन किया है, यथा :

सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड॥
सचे तेरे लोअ सचे आकार॥
सचे तेरे करणे सरब बीचार॥
सचा तेरा अमरु सचा दीबाणु॥
सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु॥
सचा तेरा करमु सचा नीसाणु॥
सचे तुधु आखहि लख करोड़ि॥
सचे सभि ताणि सचे सभि जोरि॥
सची तेरी सिफति सची सालाह॥
सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह॥
नानक सचु धिआइनि सचु॥
जो मरि जंमे सु कचु निकचु॥

(पन्ना 463)

वस्तुतः समूचे रूप में यह सारी कुदरत उसका एक अटल प्रबंध है, परन्तु इसके भीतर के अलग-अलग पदार्थ, जीव-जन्तुओं के शरीर आदि नाशवान हैं। जो उसको स्मरण करते हैं वे उसका ही रूप हो जाते हैं।

अचल्ल राजे।। अटल्ल साजे।।
अखल्ल धरमं।। अलक्ख करमं।।75।।

हे वाहिगुरु ! तेरा राज अटल है अर्थात् सदा कायम रहने वाला है। तेरी रचना सदा कायम रहने वाली है। तेरा कानून मुकम्मल अर्थात् पूर्ण है। कहने का अभिप्राय, तेरे बनाए कानून में किसी तरह की कोई कमी नहीं। यहां दुनिया में जो नियम–कानून बनते हैं उनमें कभी संशोधन किया जाता है, कभी उसे पूर्णतया रद्द भी कर दिया जाता है, उनमें अपूर्णता बनी रहती है, किन्तु तेरे बनाए कानून पूर्ण हैं। तेरे सम्पूर्ण क्रिया–कलापों का पूर्णतया वर्णन नहीं हो सकता। स्पष्ट है कि तेरे कार्यों का कोई मूल्यांकन नहीं हो सकता।

सरबं दाता। सरबं गिआता।।
सरबं भाने।। सरबं माने।।76।।

गुरदेव फरमान करते हैं कि हे परमात्मा ! तू सब जीवों का दाता है अर्थात् सबको दातें बख्शने वाला दातार पिता है। तू सर्वज्ञ है अर्थात् सबके दिलों की जानने वाला अन्तरयामी है। सभी तेरे प्रकाश से प्रकाशित हैं, तू ही सबको रोशनी देने वाला देदीप्यमान सूर्य है। संसार के सब जीव तेरी ही पूजा अर्थात् आराधना करते हैं, जैसा कि कलगीधर पातशाह का आदेश है – **'पूजा अकाल की, परचा शब्द का, दीदार खालसे का।'** शब्द के प्रसार हेतु गुरबाणी में अन्यत्र भी प्रमाण हैं :

लंगरु चलै गुर सबदि हरि तोटि न आवी खटीऐ।।
(पन्ना 967)

वस्तुतः शब्द के प्रचार से ही जीव अकाल पुरख से जुड़ सकता है।

सरबं प्राणं।। सरबं त्राणं।।
सरबं भुगता।। सरबं जुगता।।77।।

हे प्रभु ! तू समस्त जीवों का प्राणधन है। तू ही सबके प्राणों का आधार है। तू ही सब जीवों के लिए सहारा है। तू ही समस्त पदार्थों को भोगने वाला है अर्थात् तू ही सब पर हकूमत चलाने वाला बादशाह है। तू सब जीवों में रचा-बसा हुआ है अर्थात् सब प्राणियों में व्याप्त है।

सरबं देवं।। सरबं भेवं।।
सरबं काले।। सरबं पाले।।78।।

हे परमात्मा ! तू प्रकाश पुञ्ज तथा पूजनीय है। तू समस्त प्राणियों के दिलों के भेद जानने वाला है। तू सब जीवों हेतु काल-स्वरूप अर्थात् सबका नाशकर्त्ता है तथा सबकी पालना करने वाला भी तू आप ही है। गुरदेव ने जापु साहिब में कई स्थानों पर एक साथ उस परमात्मा के **'जमाल'** एवं **'जलाल'** रूप का सुन्दर वर्णन किया है।

रूआल छंद।। त्व प्रसादि।।
आदि रूप अनादि मूरति अजोनि पुरख अपार।।
सरब मान त्रिमान देव अभेव आदि उदार।।
सरब पालक सरब घालक सरब को पुनि काल।।
जत्त्र तत्त्र बिराजही अवधूत रूप रसाल।।79।।

'रूआल' छंद का नाम है। प्रभु-कृपा से गुरु पातशाह इस बंद की रचना कर रहे हैं। कलगीधर पातशाह इस छंद में फरमान करते हैं कि हे मालिक ! तेरी हस्ती (वजूद) सबसे पूर्व का है अर्थात् सबसे पहले तू ही था। तेरी आरम्भता कब हुई, इस विषय में कोई भी तो

नहीं जानता। तू जन्म से रहित है भाव तू अन्य जीवों की तरह जन्म नहीं लेता तथा तू सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त है। तू बेअंत है तेरा अंत नहीं पाया जा सकता। हे परम पुरख परमात्मा ! संसार के सब प्राणी तेरे ही आगे झुकते हैं। तीनों लोकों के जीव तेरी ही पूजा करते हैं। तू प्रकाश-स्वरूप है। तेरा भेद किसी ने नहीं पाया। तू सबका मूल है तथा उदारचित्त है। तू सखी है अर्थात् तू कंजूसी नहीं करता, जैसा कि गुरबाणी में फरमान है :

देदा दे लैदे थकि पाहि।।
जुगा जुगंतरि खाही खाहि।।

(पन्ना 2)

अर्थात् जीव ले-लेकर थक जाते हैं, वह दातार अकाल पुरख सभी जीवों को दातें बख्श रहा है।

आगे गुरदेव फरमान करते हैं कि समस्त जीवों की पालना करने वाला भी वही परमात्मा है। सबका नाश करने वाला अर्थात् काल स्वरूप भी तू ही है। तू सर्वत्र में समाया हुआ है। तू सभी रसों का घर है लेकिन तू इन रसों के बंधन से मुक्त है अर्थात् माया के बंधनों से रहित है। बाणी में अन्यत्र भी उस परमात्मा को माया के प्रभाव से परे बताया गया है, यथा :

सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा।।
सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा।।
सभि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा।।

(पन्ना 10)

निरंजन अर्थात् माया के प्रभाव से रहित। इसी तरह उस परमात्मा के नाम को भी माया के प्रभाव से परे बताया गया है जैसा कि जपु जी साहिब में श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है :

ऐसा नामु निरंजनु होइ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ॥

(पन्ना 3)

नाम ठाम न जाति जाकर रूप रंग न रेख॥
आदि पुरख उदार मूरति अजोनि आदि असेख॥
देस और न भेस जाकर रूप रेख न राग॥
जत्त तत्त दिसा विसा हुइ फैलिओ अनुराग॥80॥

हे वाहिगुरु ! तेरा न कोई विशेष नाम है न कोई विशेष ठिकाना है। न तो तेरी कोई जाति है, न रूप है और न ही कोई विशेष निशान है जिससे तेरी पहचान हो सके। हे परमात्मा ! तू सबका मूल है, तू सब में मौजूद है। तेरे स्वरूप में उदारता भरी है। तू जन्मों में नहीं आता। तू आरम्भ से ही है। हे मालिक ! तेरा कोई विशेष स्वरूप भी नहीं है।

आगे गुरदेव का फरमान है कि हे परमात्मा ! तेरा न कोई एक देश है, न कोई विशेष पहरावा ही है। न तेरा कोई रूप है, न रेखा है, न ही तुझे कोई मोह के बन्धन में बांध सकता है। हे प्रभु ! तू प्रत्येक दिशा (उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम) तथा प्रत्येक कोने में प्रेम-रूप में व्याप्त है अर्थात् प्यार-रूप में फैला हुआ है। तेरे प्यार की सुगन्ध कण-कण में समाई हुई है।

गुरबाणी में अन्यत्र भी इस प्यार की सुगन्ध लेने हेतु तुझे क्या करना चाहिए, यह युक्ति बताते हुए गुरदेव फरमान करते हैं :

जालि मोहु घसि मसु करि मति कागजु करि सारु॥
भाउ कलम करि चितु लेखारी गुर पुछि लिखु बीचारु॥
लिखु नामु सालाह लिखु लिखु अंतु न पारवारु॥
बाबा एहु लेखा लिखि जाणु॥
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै होइ सचा नीसाणु॥

(पन्ना 16)

अर्थात् माया का मोह जलाकर, उसे घिसाकर स्याही बनाकर तथा अपनी अकल को सुन्दर कागज बना। प्रेम को कलम तथा अपने मन को लेखक बना। गुरु की शिक्षा लेकर ईश्वर के गुणों को विचार कर लिख। प्रभु का नाम लिख, प्रभु की उपमा लिख। उस बेअंत प्रभु के गुणों का अंत नहीं पाया जा सकता।

उस प्रेम के सागर को पाने हेतु गुरु–दर्शाये मार्ग पर चलकर उस परमात्मा की सिफत–सलाह करते हुए उस मालिक की सारी रचना से निःस्वार्थ भाव से प्यार करते हुए, उसी का रूप होकर अपना जीवन सार्थक किया जा सकता है क्योंकि गुरदेव का फरमान है कि जिन्होंने प्रेम किया है उन्होंने प्रभु को पाया है।

नाम काम बिहीन पेखत धाम हूं नहि जाहि॥
सरब मान सरबत्र मान सदैव मानत ताहि॥
एक मूरति अनेक दरसन कीन रूप अनेक॥
खेल–खेल अखेल खेलन अंत को फिरि एक॥81॥

गुरदेव इस बंद में फरमान करते हैं, हे प्रभु ! तू ऐसा है जिसका कोई एक नाम नहीं, जिसकी कोई कामना नहीं तथा जिसका कोई विशेष ठिकाना नहीं है। (ऐसे) उस प्रभु को सब सिर झुकाते हैं, प्रत्येक स्थान पर उसी अकाल पुरख की पूजा होती है, सभी जीव

उसी को ही मानते हैं, उसी के समक्ष झुकते हैं। वह परमात्मा अकेला है पर अनेकों सूरतों में वही एक दिखाई दे रहा है। इस तरह से अनेकों में विद्यमान उस प्रभु ने अपने अनेक रूप बनाए हुए हैं। कहने से अभिप्राय, प्रत्येक सूरत उसका स्वरूप है।

वह परमात्मा खेल–खेल में जगत की रचना कर देता है और फिर खेल–खेल में ही प्रलय का खेल, खेलकर सारी रचना को नष्ट कर देता है और जब यह लीला खत्म होती है फिर वही एकमात्र परमात्मा ही रह जाता है।

उपरोक्त भाव को **'आसा की वार'** में गुरु नानक पातशाह ने भी बड़े सुन्दर ढंग से रूपायित किया है, यथा :

आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ॥
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ॥
दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ॥
तूं जाणोई सभसै दे लैसहि जिंदु कवाउ॥
करि आसणु डिठो चाउ॥

(पन्ना 463)

भावार्थ – हे प्रभु ! तू सारी सृष्टि में स्वयं व्याप्त होकर अपनी रची हुई रचना अर्थात् जीवों को बनाना, सौगातें देकर पालना और अंत में हुक्म देकर समाप्त कर देना, का यह खेल तू स्वयं देख रहा है। वह ईश्वर सब कुछ करने में समर्थ है। उस परमात्मा को कोटि बार नमन।

देव भेव न जानही जिह बेद अउर कतेब।
रूप रंग न जाति पाति सु जानई किंह जेब॥

तात मात न जात जाकर जनम मरन बिहीन।
चक्क्र बक्क्र फिरै चतुर चक्क मानही पुर तीन ॥82॥

गुरु कलगीधर पातशाह उस परमेश्वर को अनंत–बेअंत कथन करते हुए स्पष्ट करते हैं कि उस अनंत का भेद आज तक कोई धर्म–पुस्तक या उसका रचयिता भी पाने में सक्षम नहीं हो सका। गुरदेव का कथन है कि वह ईश्वर ऐसा है, जिसका भेद न देवते जानते हैं न ही पूर्व प्राप्त धर्म–पुस्तकें उस परमात्मा को मुकम्मल रूप से बयान क़रने में समर्थ हो सकी हैं।

कोई भी नहीं जानता कि उस ईश्वर का रूप कैसा है ? रंग कैसा है ? जाति कौन सी है ? वंश कैसा है और उसकी नुहार कैसी है ? उसकी शोभा अकथनीय है। वह अकाल पुरख ऐसा है जिसका न पिता है, न माता है और न ही कोई जाति है। जो जन्म और मृत्यु से परे है अर्थात् जहां जन्म ही नहीं वहां मृत्यु का सवाल ही नहीं उठता। जिसकी उत्पत्ति है उसी का विनाश सम्भव है जैसा कि नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी का पावन सन्देश है :

जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि॥
नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल॥

(पन्ना 1429)

यही नहीं हर क्षण जीव की श्वासों की पूंजी खत्म होती जा रही है :

छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी॥

(पन्ना 726)

ईश्वर इन सब अवस्थाओं से मुक्त है। उस वाहिगुरु का काल रूपी भयावह चक्र बहुत ही तेज गति से घूमता हुआ सभी दिशाओं

में चल रहा है। समस्त रचना उस परमात्मा के आगे नतमस्तक है। अतः स्पष्ट है कि सभी जीव तथा समूची प्रकृति उसी के भय में है तथा सर्वत्र उसी का हुक्म जारी है। **'आसा की वार'** में श्री गुरु नानक देव जी की पावन बाणी इसी भावको स्पष्ट करती है :

सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु॥
नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु॥

(पन्ना 464)

उपरोक्त श्लोक में श्री गुरु नानक देव जी ने भी इसी हकीकत को बयान किया है कि सृष्टि में केवल एक ईश्वर ही ऐसी हस्ती है जो किसी के भय अथवा डर में नहीं अन्यथा सृष्टि का प्रत्येक जीव तथा कुदरत की प्रत्येक वस्तु उस परमात्मा के भय में ही है।

निष्कर्षतः तीनों ही लोकों के जीव अर्थात् समस्त जीव उस वाहिगुरु के भय में हैं तथा सभी उसी के समक्ष शीश झुकाते हैं।

लोक चउदह के बिखै जग जापही जिंह जाप॥
आदि देव अनादि मूरति थापिओ सबै जिंह थापि॥
परम रूप पुनीत मूरति पूरन पुरख अपार॥
सरब बिस्व रचिओ सुयंभव गड़न भंजनहार॥83॥

उपरोक्त बंद में भी कलगीधर पातशाह उसी अकाल पुरख की स्तुति करते हैं। गुरु जी अपने उद्‌गारों को इस प्रकार अभिव्यक्त कर रहे हैं कि वह परमात्मा ऐसा है जिसका जाप चौदह लोकों के जीव कर रहे हैं। पुरातन ग्रन्थों के अनुसार लोक 14 हैं जिनसे 7 धरती के ऊपर तथा 7 धरती के नीचे विद्यमान हैं। अतः सभी जीव उसी ईश्वर का ही जाप कर रहे हैं। वह परमात्मा सर्वोच्च्य हस्ती वाला है,

पवित्र स्वरूप वाला है तथा सब में समाया हुआ है। वह अपार है। उसका अंत कोई नहीं पा सकता। वह सम्पूर्ण सृष्टि, समस्त रचना का रचयिता अर्थात् सर्वस्व का निर्माता है तथा स्वयं से प्रकट हुआ है। उसे अस्तित्व में लाने वाला और कोई नहीं। स्वयं से प्रकाशवान वह परमात्मा इस जगत को बनाने वाला और पुनः उसे नष्ट कर देने वाला भी आप ही है।

गुरबाणी में अन्यत्र भी प्रमाण हैं कि वह परमात्मा तरह-तरह के शरीरों का निर्माण करता है, जीवों को जगत में भेजता है और फिर स्वयं ही उन्हें वापिस बुला लेता है। श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है :

तूं आपे आपि वरतदा आपि बणत बणाई॥
तुधु बिनु दूजा को नहीं तू रहिआ समाई॥

(पन्ना 1291)

यही नहीं, उसकी रचना भी विचित्र है :

तूं करता पुरखु अगंमु है आपि स्रिसटि उपाती॥
रंग परंग उपारजना बहु बहु बिधि भाती॥

(पन्ना 138)

काल हीन कला संजुगति अकाल पुरख अदेस॥
धरम धाम सु भरम रहित अभूत अलख अभेस॥
अंग राग न रंग जाकहि जाति पाति न नाम॥
गरब गंजन दुसट भंजन मुकति दाइक काम॥84॥

गुरु कलगीधर पातशाह के चिन्तनानुसार वह परमात्मा मौत से रहित है, वह समस्त शक्तियों का मालिक अर्थात् सर्वशक्तिमान है। वह

काल से परे है अर्थात् समय का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता। समय के चक्रव्यूह से कोई नहीं बच सकता, लेकिन एक ईश्वर ही है जो इस काल, सीमा सब के प्रभाव से रहित है, क्योंकि वक्त भी उसी ईश्वर का पाबंद है, उसी का गुलाम है। कला संजुगति अर्थात् समर्थता सहित, अतः वह परमेश्वर सर्व-शक्तियों का मालिक है। वह सब में व्यापक है अर्थात् वही सब में समाया हुआ है, उसका कोई एक देश नहीं है। गुरबाणी में अन्यत्र भी प्रमाण है :

जलि थलि पूरि रहिआ गोसाई॥

(पन्ना 1075)

आगे गुरदेव उस परमात्मा को धर्म का स्रोत मानते हुए कथन करते हैं कि वह वास्तव में धर्म का धाम अर्थात् ठिकाना है। वह भ्रमों, वहमों, भुलेखों से रहित है। उसका निर्माण संसारी जीवों की तरह पांच तत्वों से नहीं हुआ। वह अदृश्य है, अतः इन आंखों से दिखाई नहीं देता और न ही उसकी कोई विशेष पोशाक है। वह शारीरिक मोह से रहित है, जैसा कि प्रत्येक देहधारी को अपने शरीर से मोह है, जिस कारण वे इनकी बनावट व बचाव का हर सम्भव प्रयास करते हैं, लेकिन ईश्वर इन सबसे निर्लिप्त है। न उसका कोई विशेष रंग है न ही कोई जाति और वंश है और न ही प्रभु किसी एक विशेष नाम से जाना जाता है। कहने का अभिप्राय, ईश्वर के नाम भी अनंत हैं। वह बड़े-बड़े अहंकारियों का अहंकार तोड़ने वाला है, दुष्टों का नाश करने वाला तथा मुक्ति प्रदाता है। वह सभी इच्छाओं और मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला है।

आप रूप अमीक अन उसतति एक पुरख अवधूत॥
गरब गंजन सरब भंजन आदि रूप असूत॥

अंग हीन अभंग अनातम एक पुरख अपार॥
सरब लाइक सरब घाइक सरब को प्रतिपार॥85॥

गुरदेव उस अकाल पुरख के अनंत गुणों का श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए फरमान करते हैं कि वह ईश्वर स्वयं से प्रकट हुआ है। वह अत्यन्त गहरा है, **'अमीक'** है, इसलिए उसकी गहराई को नहीं मापा जा सकता है अर्थात् उसकी पूर्णता का भेद नहीं पाया जा सकता। उसकी उपमा बेमिसाल है। पूर्ण रूप से उसकी सिफत-सलाह भी नहीं हो सकती। वही एक मात्र है जो सर्वव्यापक है। इसी भाव को श्री गुरु नानक देव जी की बाणी भी दृढ़ करवाती है :

मेरे लाल जीउ तेरा अंतु न जाणा॥
तूं जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा॥
तूं आपे सरब समाणा॥

(पन्ना 731)

सरब गंता सरब हंता सरब ते अनभेख॥
सरब सासत्र न जानही जिंह रूप रंगु अरु रेख॥
परम बेद पुराण जाकहि नेत भाखत नित्त॥
कोटि सिंम्रित पुरान सासत्र न आवई वहु चित्त॥86॥

उस परमात्मा की पहुंच समस्त जीवों तक है। यही नहीं, सब स्थानों तक उसी की पहुंच है अर्थात् उसके लिए कोई भी स्थान दुर्गम नहीं है। वह सबको मारने की शक्ति वाला है तथा उसका पहरावा सबसे अलग है, सबसे निराला है। वह परमात्मा ऐसा है कि सभी शास्त्र न उसका रूप जानते हैं, न रंग और न ही उसकी रूप-रेखा अर्थात् सभी धर्म-पुस्तकें उसका गुण-गान तो करती हैं लेकिन मुकम्मल तौर पर उसे जानने में असमर्थ हैं।

वह अकाल पुरख ऐसा है जिसके बारे में वेद तथा पुराण आदि धर्म–ग्रन्थ उसे सदैव अनंत–बेअंत कथन करते हैं। वह सबसे ऊंचा है तथा उसके जैसा कोई नहीं। करोड़ों स्मृतियों, पुराणों एवं शास्त्रों को पढ़कर भी उस परमेश्वर को नहीं जाना जा सकता अर्थात् उसके वास्तविक स्वरूप की जानकारी समस्त धर्म–ग्रन्थों के ज्ञान से भी नहीं हो सकती। अतः ये धर्म–ग्रन्थ भी उस परमात्मा को अनंत–बेअंत कथन करते हैं। इन धर्म–ग्रन्थों से उस परमात्मा का नाम जपने की प्रेरणा मिलती है। गुरबाणी का प्रमाण है :

कल मै एकु नामु किरपा निधि जाहि जपै गति पावै॥
अउर धरम ता कै सम नाहनि इह बिधि बेदु बतावै॥

(पन्ना 632)

यही नहीं उस परमेश्वर के नाम–सुमिरन से अनेकों पापियों का उद्धार हुआ है। ईश्वर नाम में असीम बल है जिससे अनेकों पापों का एक पल में विनाश हो जाता है; जैसा कि बाणी का पावन फरमान है :

हरि को नामु सदा सुखदाई॥
जा कउ सिमरि अजामलु उधरिओ गनिका हू गति पाई॥

(पन्ना 1008)

यह पावन नाम ही अनेकों पापों से मुक्ति दिलाने वाला है तथा इसी प्रभु–नाम ने ही हमेशा तेरी सहायता करनी है। यथा :

सगल भरम डारि देहि गोबिंद का नामु लेहि॥
अंति बार संगि तेरै इहै एकु जातु है॥

(पन्ना 1352)

अतः लोक–परलोक में सहायी उस परम पिता परमात्मा का नाम जपते–जपते, उस परमात्मा की सिफत–सलाह करते हुए, उस ईश्वर के गुणों को आत्म–सात करते हुए जीव अन्ततः उसी में ही विलीन हो जाए, यही मनुष्य–जीवन का प्रमुख लक्ष्य है। इसकी प्राप्ति गुरु–कृपा से मुमकिन है।

आत्म–तत्त की पहचान और ईश्वर में एकरूप होने हेतु किस तरह का जीवन–निर्वाह करना है, इसका सुन्दर उदाहरण भी हमें श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की पावन बाणी से मिलता है, यथा :

अलप अहार सुलप सी निंद्रा; दया छिमा तन प्रीति।।
सील संतोख सदा निरबाहिबो; हैबो त्रिगुण अतीत।।
काम क्रोध हंकार लोभ हठ, मोह न मन मो लयावै।।
तब ही आतम–तत को दरसै, परम पुरुख कह पावै।।

(सबद राग रामकली, पाः 10)

अर्थात् थोड़ा खाना, थोड़ा सोना, हृदय–घर में दया, क्षमा, प्रेम, शील, संतोख आदि गुणों को हमेशा बसा कर रखना। माया के त्रिगुणी प्रभाव से बचना, काम, क्रोध, अहंकार, लोभ, मोह आदि को मन में न बसने देना। तभी आत्म–तत्त को पहचानते हुए उस परम–पुरख की प्राप्ति सम्भव हो सकेगी अर्थात् आत्म–ज्ञान से ही उस परम–तत्त में विलीन हुआ जा सकता है। यही है उस अनंत तथा असीम प्रभु को इस ससीम (एक सीमा में बद्ध) बुद्धि द्वारा, निर्मल हृदय द्वारा स्वयं में और प्रत्येक घट में, प्रकृति के कण–कण में बसे ईश्वर से साक्षात्कार करना।

मधुभार छंद।। त्व प्रसादि।।
गुन गन उदार।। महिमा अपार।।
आसन अभंग।। उपमा अनंग।।87।।

मधुभार छंद में उच्चरित तेरी कृपा से रचित इस बंद में भी गुरदेव उसी परवरदिगार की स्तुति करते हुए फरमान करते हैं कि हे प्रभु ! तू बेअंत गुणों का मालिक है, दरिया–दिल है। उसकी महिमा अपरंपार है। यह बताना मुमकिन नहीं है कि वह परमेश्वर कितना बड़ा है। उसका आसन नाश–रहित है अर्थात् सदैव कायम रहने वाला है, स्थिर है।

इस तथ्य पर विचार करें तो स्पष्ट है कि दुनिया में किसी और का आसन स्थिर नहीं है, सदैव कायम रहने वाला नहीं है, जैसा कि बाबा शेख फरीद जी का फ़रमान है :

सेख हैयाती जगि न कोई थिरु रहिआ।।
जिसु आसणि हम बैठे केते बैसि गइआ।।

(पन्ना 488)

'उपमा अनंग' अर्थात् उसके गुण अतुलनीय हैं। उसकी महिमा की तुलना नहीं की जा सकती क्योंकि उस जैसी हस्ती कोई है ही नहीं।

वस्तुतः जीव धर्म–पुस्तकों से पढ़कर या एक–दूसरे से सुनकर उस ईश्वर को कह तो देते हैं, हे परमात्मा ! तू बहुत बड़ा है, पर पूर्णतया कोई नहीं बता सकता कि वह वास्तव में कितना बड़ा है। उसका स्वरूप अवर्णनीय है। गुरबाणी का फरमान है :

सुणि वडा आखै सभु कोइ॥
केवडु वडा डीठा होइ॥
कीमति पाइ न कहिआ जाइ॥
कहणे वाले तेरे रहे समाइ॥
वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी गहीरा॥
कोइ न जाणै तेरा केता केवडु चीरा॥

(पन्ना 9)

हे मेरे मालिक ! तू मानो एक अथाह सागर है। तू बड़े जिगरे वाला है। तू बेअंत गुणों का खजाना है। तेरा कितना बड़ा फैलाव है ! तेरा विस्थार कितना है ? यह कोई नहीं जानता।

अनभउ प्रकास॥ निस दिन अनास॥
आजान बाहु ॥ साहान साहु॥88॥

उपरोक्त बंद में गुरु पातशाह उस परमात्मा को स्वयं से प्रकाशवान मानते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि उस परमात्मा को कोई ज्ञान देने वाला नहीं है अतः वह स्वयं से अनंत ज्ञान का सागर है। वह रात-दिन हर समय मौजूद है अर्थात् उसका स्वरूप अविनाशी है। कभी न नष्ट होने वाले उस ईश्वर ने जगत-रचना के समस्त ढंग अपने वश में रखे हुए हैं। **'आजान बाहु'** अर्थात् सृष्टि-रचना के सब तरीके जिसके वश में हैं, वह परमात्मा बादशाहों का भी बादशाह है।

राजान राज॥ भानान भान॥
देवान देव॥ उपमा महान॥89॥

गुरु पातशाह उस परमात्मा के गुणों का बखान करते हुए उसे राजाओं का राजा तथा सूर्यों का सूर्य कहते हैं, जिससे समस्त सूर्य

प्रकाशवान हैं। वह देवताओं का भी देवता है, अतः समस्त देवता भी उसके आगे नतमस्तक हैं अर्थात् देवता भी उसी ईश्वर को पूजते हैं। वह सर्वोच्च हस्ती है। तीनों लोकों के जीवों पर ही नहीं अपितु प्रकृति के कण-कण पर उसी ईश्वर का प्रभुत्व है। दुनिया में जो कुछ भी दृष्यमान है वह सब कुछ ईश्वर का बनाया हुआ है और सब पर उसी का स्वामित्व है।

इंद्रान इंद्र।। बालान बाल।।
रंकान रंक।। कालान काल।।90।।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी उस ईश्वर की स्तुति करते हुए उसे सर्वोच्च हस्ती मानते हैं। गुरु पातशाह का फरमान है कि वह परमात्मा देवताओं के राजा इन्द्र का भी राजा है अर्थात् वह राजाओं में भी सर्वोत्तम राजा है। गुरदेव उसको संबोधन करते हैं कि तू बलशालियों से भी बलशाली है अर्थात् तू श्रेष्ठतम है। तू कंगालों से भी कंगाल है अर्थात् कैसा आश्चर्य है कि कहां तो वह परमात्मा बादशाहों का भी बादशाह है और कहां वह कंगालों में भी महाकंगाल है। गुरदेव के चिन्तनानुसार कंगालों में भी उसी परमात्मा का ही निवास है। यहां उस ईश्वर की सर्वव्यापकता का भी संकेत है। कालान काल अर्थात् वह ईश्वर मौत का भी काल है। मौत भी उसके अधीन है। उसी की बनाई हुई है और उसी के हुक्म में है।

अनभूत अंग।। आभा अभंग।।
गति मिति अपार।। गुन गन उदार।।91।।

उपरोक्त बंद में गुरु कलगीधर पातशाह उस अकाल पुरख के विलक्षण एवं अमित स्वरूप का वर्णन करते हुए स्पष्ट करते हैं कि वाहिगुरु जगत-रचना के तत्वों से निराला है अर्थात् वह पांच तत्वों

से निर्मित नहीं है। उसका प्रकाश कभी भी क्षीण होने वाला नहीं है अर्थात् उसकी ज्योति अखण्ड है। उस ईश्वर की गति तथा मिति अवर्णनीय है, कथन से परे है क्योंकि उसकी अवस्था तथा लम्बाई बेअंत है। कोई भी यह कहने में सक्षम नहीं है कि वह कैसा है और कितना बड़ा है ? वह अनंत गुणों का मालिक व उदारचित है अर्थात् खुले दिल वाला है। वह दातें बख्शने में किसी तरह की कंजूसी नहीं करता। उस परमात्मा का अंत नहीं पाया जा सकता। गुरबाणी प्रमाण है :-

ब्रहमा बिसनु रुद्र तिस की सेवा ॥
अंतु न पावहि अलख अभेवा ॥

(पन्ना 1053)

मुनि गन प्रनाम ॥ निरभै निकाम ॥
अति दुति प्रचंड ॥ मिति गति अखंड ॥92॥

हे वाहिगुरु ! मुनियों के समूह तेरे समक्ष नतमस्तक हैं अर्थात् ऋषि-मुनि, तपस्वी तेरे चरणों में नमस्कार करते हैं। तू निर्भय तथा निष्काम है अर्थात् तू भय से रहित तथा कामना से भी मुक्त है। **'अति दुति प्रचंड'** - अति (अत्यधिक), दुति (प्रकाश) तथा प्रचंड (तेज) अर्थात् उस ईश्वर का प्रताप इतना महान् एवं प्रभावशाली है कि उसके तेज का सामना नहीं किया जा सकता। वह जितना बड़ा और महान् है उससे कम उसे कोई नहीं कर सकता अर्थात् उस अवस्था को कम करके आंका नहीं जा सकता। तेरी मर्यादा निरन्तर एक रस चलती रहती है। उसमें कोई किसी प्रकार की बाधा या रुकावट नहीं आ सकती।

उपरोक्त बंद में **'अति दुति प्रचंड'** स्वरूप अर्थात् उस ईश्वर का तेज प्रताप इतना प्रभावशाली व चमक वाला है कि उसे झेला नहीं जा सकता।

आओ ! इसे एक रोजमर्रा के उदाहरण से समझने का यत्न करें। किसी वाहन के सड़क पर चलते हुए अगर उसकी लाईट सीधी आंखों पर पड़े तो आंखें बन्द हो जाती हैं क्योंकि आंखें उस रोशनी से चौंधियां जाती हैं। जैसे सूर्य जब शिखर पर होता है तो एक पल भी आंखों द्वारा उस ओर देखा नहीं जा सकता। वह ईश्वर तो कोटिश–कोटिश सूर्यों से भी ज्यादा तेज प्रकाश वाला है। उस ईश्वर के तेज को कैसे सहारा जा सकता है ? अर्थात् उसका सामना करने का किसमें बल है ?

आलिस्य करम ।। आद्रिस्य धरम ।।
सरबा भरणाढय ।। अनडंड बाढय ।।93 ।।

इस बंद में गुरु पातशाह उस परमात्मा के कुछ और विलक्षण गुणों का वर्णन करते हुए अपनी अपार श्रद्धा व प्रेम–भाव को अभिव्यक्त करते हैं कि वह परमात्मा **आलिस्य करम।।** अर्थात् जिसके कर्म किसी विशेष परिश्रम से रहित हैं। उस वाहिगुरु को अपने कर्मों में किसी विशेष प्रयोजन की आवश्यकता नहीं पड़ती। जैसा कि किसी भी विशेष कार्य को पूरा करने के लिए विशेष उद्यम की आवश्यकता पड़ती है। लेकिन उस ईश्वर के साथ कुछ भी ऐसा नहीं है क्योंकि वह अनगिनत विशेष कार्य हर पल करता है बिना किसी विशेष मेहनत या प्रयोजन के। उसके सभी कर्म आलस्य–विहीन हैं। उसका धर्म आदेश रूप है अर्थात् उस निरंकार का कर्त्तव्य बोध एवं फर्ज निभाने का ढंग निराला है अर्थात् दुनिया के लिए अनुपम व अनुकरणीय

उदाहरण प्रस्तुत करता है। हे ईश्वर ! तू समस्त सजावटों और आभूषणों से परिपूर्ण है परन्तु किसी की क्या मजाल की तेरे इस सुसज्जित स्वरूप को बुरी नजर से देखने का दुःसाहस करे। तू सबका पालन–पोषण करने वाला है। अगर कोई स्त्री सुन्दर कीमती आभूषण धारण करती है तो देखने वालों की कुदृष्टि उस पर पड़ सकती है तथा कोई भी उसे हथियाने के मंद इरादे से उस पर वार कर सकता है यहां तक कि उसके प्राणों तक को खतरा हो सकता है। लेकिन समस्त गहनों से सुसज्जित उस ईश्वर पर कुदृष्टि डालने वाला कोई नहीं है और न ही उसे किसी तरह का कोई नुकसान पहुंचा सकता है। तुझे कोई चेतावनी नहीं दे सकता, तू किसी द्वारा दंडित नहीं किया जा सकता।

चाचरी छंद॥ त्व प्रसादि॥

गोबिंदे॥ मुकंदे॥ उदारे॥ अपारे॥94॥

गोबिंदे अर्थात् सारी सृष्टि के जीवों का पालनकर्त्ता। मुकंदे अर्थात् सबको मुक्ति देने वाला मुक्तिदाता, उदारे–उदारचित्त, विशाल हृदय वाला। अपारे–बेअंत स्वरूप।

चाचरी छंद में उस निरंकार की कृपा से रचित इस बंद में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी उस अकाल पुरख के चरणों में विनती करते हुए स्पष्ट करते हैं कि वह ईश्वर सारी सृष्टि का पालनहार जीवों को मुक्त (कर्म बंधनों से आजाद) करने वाला है। खुले दिल वाला सबको दातें बख्शने वाला, बेअंत, अपार, समस्त सीमाओं से परे, नेति–नेति स्वरूप है, अतः हे प्रभु तेरा अंत कोई नहीं पा सकता।

हरीअं॥ करीअं॥ त्रिनामे॥ अकामे॥95॥

उस परमेश्वर के विविध गुणों का वर्णन करते हुए गुरु कलगीधर पिता फरमान करते हैं कि वह परमात्मा **'हरीअं'** अर्थात् नाश करने वाला, **'करीअं'** अर्थात् पालन करने वाला, **'त्रिनामे'** – नाम–रहित तथा **'अकामे'** – कामना–रहित स्वरूप वाला है।

हे वाहिगुरु ! तू सब जीवों का विनाश करने वाला भी है तथा सबकी रचना करने वाला भी है अर्थात् तू ही जीवों का निर्माण करता है, उनकी सृजना तथा विनाश तेरे ही हाथ में है। तेरा कोई विशेष नाम नहीं है और किसी तरह की कामना तुझे छू भी नहीं सकती। हे निरंकार ! तू निष्काम है।

चत्र चक्क्र करता।। चत्र चक्क्र हरता।।
चत्र चक्क्र दाने।। चत्र चक्क्र जाने।।96।।

भुजंग प्रयात छंद के इस बंद में दशमेश पिता उस परमात्मा का गुणगान करते हुए उसकी सर्वव्यापकता का वर्णन करते हैं कि हे प्रभु ! तू सम्पूर्ण सृष्टि के जीवों को पैदा करने वाला है। चत्र अर्थात् चारों, चक्क्र अर्थात् दिशाएं। जिसका आशय है चारों दिशाओं के जीव अर्थात् समस्त रचना तेरे द्वारा ही निर्मित है। समस्त जीवों का नाश करने वाला भी तू है। तू ही सभी जीवों को दातें देने वाला है तथा सबके दिलों की जानने वाला अंतरयामी है।

अक्सर कहा जाता है **"दिल दरिआ समुंदरों डूंघे, कौण दिलां दीआं जाणे ?"** अर्थात् दिलों की गहराई तो समुद्र की तरह असीम है जिसे नापा नहीं जा सकता। परन्तु वह परमात्मा सभी जीवों के दिलों की बात भी जानने वाला है इसलिए उसे अंतरयामी भी कहा गया है। इस तथ्य को गुरबाणी आशय से समझने का यत्न करें, जैसा कि सुखमनी साहिब में पंचम् पातशाह का पावन फरमान है :

जिह प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके।।
मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ता कै।।

(पन्ना 270)

अर्थात् जिसकी कृपा के द्वारा तेरे समस्त दोष ढके हुए हैं। हे मन ! तू उस ईश्वर की शरण में रह। विचारणीय तथ्य जीव के मन में क्या चल रहा है, इसे दुनिया में कोई नहीं जान सकता जब तक मनुष्य अपनी करनी या विचारों द्वारा स्वयं अभिव्यक्त नहीं कर देता, जब तक कोई स्वयं अपने कर्मों द्वारा अपने अंदर के भावों को प्रकट नहीं कर देता। लेकिन मूढ़ मनुष्य यह भी भूल जाता है कि उस ईश्वर ने कैसी रहमत जीवों पर की हुई है; ईश्वर में यह सामर्थ्य है कि वह मनुष्य का तन, मन, बुद्धि सब कुछ बनाने वाला है और वह उसके अन्तःकरण में क्या चल रहा है यह भी उससे नहीं छिपा हुआ। इंसान पाप–कर्मों की ओर लिप्त क्यों होता है ? जब उसके जेहन में यह बात घर कर जाती है – **एह जग मिट्ठा अगला किन डिट्ठा ?** अर्थात् इस संसार के झूठे रंगों–रसों को ही हकीकत मानकर उस ईश्वर के घर को भुला बैठता है और निरन्तर बुरे कर्मों में लगा रहता है। इसके विपरीत जिस हृदय रूपी घर में ईश्वर की कृपा से यह विश्वास दृढ़ हो जाता है कि सर्वव्यापक अन्तरयामी परमेश्वर सर्वत्र में समाया हुआ है और सबके दिलों की जानने वाला भी है, उसी की करनी निरन्तर श्रेष्ठ होती जाती है। उस हृदय में अच्छे संस्कारों का निर्माण होता है और इस दुर्लभ मानव जीवन की सार्थकता सिद्ध हो जाती है।

चत्र चक्क्र वरती।। चत्र चक्क्र भरती।।
चत्र चक्क्र पाले।। चत्र चक्क्र काले।।97।।

इस बंद में गुरु पातशाह उस ईश्वर की सर्वव्यापकता की ओर संकेत करते हुए फरमान करते हैं कि हे परवरदिगार ! तू प्रकृति के कण-कण में विद्यमान है, तू सर्वत्र में समाया हुआ है। तू ही सब प्राणियों का पालन-पोषण करने वाला है। तू समस्त जीवों की रक्षा करने वाला है तथा इन्हें नाश करने वाला भी तू ही है। वस्तुतः निराकार होते हुए भी उसकी सर्वत्र उपस्थिति है, वह सब में मौजूद है।

चत्त्र चक्क्र पासे।। चत्त्र चक्क्र वासे।।
चत्त्र चक्क्र मानयै।। चत्त्र चक्क्र दानयै।।98।।

हे परमेश्वर ! तू चारों दिशाओं से न्यारा है और सब में समाया हुआ भी है। सारा जगत तेरी ही आराधना करता है अर्थात् सृष्टि का प्रत्येक प्राणी तेरी ही पूजा करता है और तू ही सारे जीवों को दातें (रिज़क) बख्शने वाला है। संसार में सभी जीवों को समस्त पदार्थ प्रदान करने वाला एक तू ही है।

इस बंद में **'पासे'** शब्द का अर्थ कुछ विद्वानों द्वारा न्यारा (अलग) अर्थ में लिया गया है और कुछ के द्वारा **'पासे'** का अर्थ पास में अर्थात् निकट अर्थ में लिया गया है। वास्तविक अर्थ को तो गुरु जी ही जानते हैं परन्तु विद्वानों द्वारा किए ये दोनों ही अर्थ उस ईश्वर की सर्वव्यापकता एवं विलक्षणता के द्योतक हैं। वह सबको सब कुछ देने में समर्थ है क्योंकि उसके भण्डार सदैव भरे रहते हैं जैसा कि पंचम पातशाह की बाणी का प्रमाण है :

तूं साझा साहिबु बापु हमारा।।
नउ निधि तेरै अखुट भंडारा।।
जिसु तूं देहि सु त्रिपति अघावै सोई भगतु तुमारा जीउ।।

सभु को आसै तेरी बैठा।।
घट घट अंतरि तूहै वुठा।।

(पन्ना 97)

चाचरी छंद

न सत्तै।। न मित्तै।।
न भरगं।। न भित्तै।।99।।

हे ईश्वर ! तेरा कोई शत्रु नहीं है अर्थात् तू निरवैर है। तेरी किसी से भी शत्रुता नहीं है। न ही कोई तेरा विशेष मित्र है। तेरे लिए सब जीव समान हैं। न तुझे कोई भ्रम-भुलेखा है, न ही तेरे अन्दर कोई दुविधा है और न ही तुझे किसी का भय है।

इस बंद में दुविधा वाले मन पर विचार करने की कोशिश करें। दुविधा से आशय दो चित हुआ मन अर्थात् किसी परिस्थिति विशेष में डगमगा जाने वाला हृदय। जैसे दो-फाड़ हुआ बीज चाहे वह कितनी भी अच्छी किस्म का क्यों न हो अंकुरित नहीं हो सकता तथा उसके पल्वित-पुष्पित होने की तो गुंजाइश ही नहीं रहती, इसी तरह एक पर विश्वास व भरोसा न रखने वाला मन भी सदैव भटकाव में रहता है। गुरबाणी इस सन्दर्भ में हमारा दिशा-निर्देश करती है जैसा कि पंचम पातशाह **'सुखमनी साहिब'** में एक पर भरोसा रखने वाले की अवस्था को बयान करते हैं कि एक ईश्वर पर विश्वास करने वाले को दुःख-दरिद्र तो क्या आएगा, उसका तो आवागमन का चक्कर ही समाप्त हो जाता है, यथा :

एक ऊपरि जिसु जन की आसा।।
तिस की कटीऐ जम की फासा।।

(पन्ना 281)

एक अद्वितीय ईश्वर का नाम जपने वाले हृदय का विश्वास भी एक पर बन जाता है, जिससे वह समस्त दुःखों–क्लेशों से मुक्त हो जाता है, तथा आवागमन के बंधनों से भी स्वतन्त्र हो जाता है।

न करमं।। न काए।। अजनमं।। अजाए।।100।।

हे वाहिगुरु ! न तू किसी कर्म के बंधन में है न तेरी रचना पंच तत्वों से हुई है। तू जन्म–मरण से रहित है। तू जन्म देने वाली (मां) से भी रहित है।

गुरु कलगीधर पातशाह सौवें बंद में उस ईश्वर के अनुपम गुणों एवं विलक्षणताओं का वर्णन करते हुए फरमान करते हैं, हे परमात्मा ! न तू कर्मों के अधीन है और न ही कर्मों के वश में पड़कर तुझे शरीर धारण करना पड़ता है, जैसा कि जपु जी साहिब में जीव के लिए कर्मों के सन्दर्भ में पावन सन्देश है :

पुंनी पापी आखणु नाहि।।
करि करि करणा लिखि लै जाहु।।
आपे बीजि आपे ही खाहु।।
नानक हुकमी आवहु जाहु।।

(पन्ना 4)

अर्थात् पुण्य और पाप कर्म कहने मात्र के लिए नहीं बने। जीव अपने कर्मों का फल संस्कार रूप में साथ ले जाता है और उसे अपने कर्मों के अनुसार ईश्वर की दरगाह में लेखे भोगने पड़ते हैं। लेकिन वह परमेश्वर इन सब कर्मों के लेखों–जोखों से मुक्त है। अतः हे प्रभु ! कर्मों के अधीन न ही तू स्त्री से पैदा हुआ है, जैसा कि समस्त जीवों की उत्पत्ति स्त्री से मानी गई है, जैसा कि **'आसा की वार'** बाणी में गुरु नानक पातशाह ने स्पष्ट किया है :

भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ॥
नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ॥
(पन्ना 473)

न चित्तै॥ न मित्तै॥ परे हैं॥ पवित्तै॥101॥

हे अकाल पुरख ! तेरी कोई तस्वीर नहीं बन सकती। तेरा कोई मित्र नहीं। तू सब जीवों से परे (निर्लेप) है।

इस बंद में गुरु पातशाह उस परवरदिगार के गुणों का गान करते हुए फरमान करते हैं कि हे ईश्वर ! तू निराकार है, इसलिए तेरी कोई मूर्ति नहीं बनाई जा सकती। किसी विशेष रूप में तुझे कथन नहीं किया जा सकता। तेरा कोई मित्र नहीं क्योंकि तेरे बराबर का कोई नहीं। ज्ञानी जोगिंदर सिंघ तलवाड़ा ने नित्तनेम बोध में **'मित्रै'** शब्द का अर्थ **'मित्त'** रूप में किया है अर्थात् न ही तेरा कोई अनुमान अंदाजा (मित) लगाया जा सकता है। तू सबसे परे (दूर) रहने वाला है अर्थात् सबसे निर्लिप्त भाव से रहता है इसलिए तेरा किसी से कोई विशेष प्रयोजन नहीं है। तेरी हस्ती परम पवित्र है।

प्रिथीसै॥ अदीसै॥ अद्रिसै॥ अक्रिसै॥102॥

हे प्रभु ! तू पृथ्वी का मालिक है। तू आरम्भ से ही मालिक है। तू किसी को दिखाई नहीं देता। तू कभी कमजोर नहीं होता।

इस बंद में कलगीधर पातशाह प्रभु के शक्तिशाली एवं सदा कायम रहने वाले स्वरूप को बयान करते हुए स्पष्ट करते हैं कि हे वाहिगुरु ! सारी रचना तेरी ही है। तू समस्त रचना का मालिक है और यह मलकियत प्रारम्भ से ही कायम है। तू प्रत्यक्ष रूप से इन आंखों से दिखाई नहीं देता क्योंकि हे परमात्मा ! तूं ज्ञान-इन्द्रियों की पहुंच से परे है और कभी भी क्षीण नहीं होता जैसा कि समयानुसार

तथा आयु अनुसार यह शारीरिक बल कम्म होता जाता है और प्रत्येक प्राणी पर यह नियम लागू होता है लेकिन उस ईश्वर का बल (शक्ति) सदैव एक रूप अटल व कायम रहती है।

भगवती छंद॥ त्व प्रसादि कथते॥

अर्थात् तेरी कृपा से यह छंद उचारण करता हूं।

कि आछिज्ज देसै॥ कि आभिज्ज भेसै॥
कि आगंज करमै॥ कि आभंज भरमै॥103॥

हे वाहिगुरु ! तेरा देश अखंड (नाशरहित) है। तेरा वेश भी नाशरहित है। तू धार्मिक रस्मों से जीता नहीं जा सकता। कोई भ्रम-वहम तुझे हिला नहीं सकता।

अर्थात् वह परमेश्वर अखण्ड स्वरूप है जिसे कोई ताकत खण्डित नहीं कर सकती। हे प्रभु ! तेरा पहरावा भी कदाचित नष्ट होने वाला नहीं है। किसी धार्मिक कर्मकाण्ड द्वारा तुझे किसी तरह के क्रिया-कलापों, रस्मों-रिवाजों द्वारा जीता अर्थात् प्रसन्न नहीं किया जा सका। तू भ्रम-भुलेखों से रहित है अतः कोई वहम-भ्रम तुझे अपने अटल नियमों से विचलित नहीं कर सकता।

कि आभिज लोकै॥ कि आदित सोकै॥
कि अवधूत बरनै॥ कि बिभूत करनै॥104॥

हे मालिक ! तेरा देश अखण्ड तथा अविनाशी है। तू सूर्य के तेज को भी सुखाने वाला है। तेरा स्वरूप माया के प्रभाव से परे है। तू धन सम्पदा (ऐश्वर्य) का प्रमुख स्त्रोत है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इस बंद में उस प्रखर बल वालों की शक्ति को भी नष्ट करने की समर्थता वाला तथा सुख-सम्पदा के

परमधाम स्वरूप का वर्णन करते हुए कथन करते हैं कि हे परवरदिगार ! तेरा ठिकाना अविनाशी अथवा कभी नष्ट न होने वाला है। तू प्रचण्ड सूर्य के तेज प्रकाश को भी सुखाने अर्थात् नष्ट करने की समर्थता वाला है। तेरी हस्ती माया के प्रभाव से रहित है, अतः त्रिगुणी माया तेरी ही रचना है। वह तुझ पर अपना प्रभाव नहीं डाल सकती जबकि बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी इसके प्रभाव से नहीं बच सकते। अतः शक्तिशाली माया भी तेरे ही अधीन है। तू धन-दौलत समृद्धि का भंडार है।

कि राजं प्रभा हैं।। कि धरमं धुजा हैं।।
कि आसोक बरनै।। कि सरबा अभरनै।।105।।

हे वाहिगुरु ! तू राजाओं की शोभा है। तू धर्म का झण्डा है। तेरा स्वरूप शोकरहित है। तू सबका शृंगार है।

कलगीधर पातशाह के चिन्तानुसार परमेश्वर का ही तेज राजाओं में भी दिखाई दे रहा है अर्थात् उस ईश्वर का देदीप्यमान स्वरूप राजाओं की शोभा बढ़ा रहा है। हे प्रभु ! तू धर्म की शोभा है अर्थात् धर्म की राह दिखाने वाला है। तेरा स्वरूप चिन्ता, दुःख, तकलिफों से रहित है। समस्त जीवों की शोभा तुझ से ही है अर्थात् तू सब जीवों का गहना है।

कि जगतं क्रिती हैं।। कि छत्रं छत्री हैं।।
कि ब्रहमं सरूपै।। कि अनभउ अनूपै।।106।।

हे प्रभु ! तू सृष्टि का कर्त्ता है, सूरमों का सूरमा है। तेरा स्वरूप सौन्दर्य का मूल है। तू ऐसा ज्ञान स्वरूप है जो उपमा से रहित है।

गुरु पातशाह इस बंद में ईश्वर के विविध गुणों का बखान करते हुए फरमान करते हैं कि हे परमेश्वर ! तू जगत की सृजना करने

वाला है। तू महान् योद्धा है। तेरी हस्ती सर्वोच्च है। तू ज्ञान का अथाह भण्डार है। तेरी उपमा अवर्णनीय है। तू स्वयं से प्रकाशवान है। तू बेमिसाल है। तेरी महिमा को बयान करना नामुमकिन है।

कि आदि अदेव हैं।। कि आपि अभेव हैं।।
कि चित्त्रं बिहीनै।। कि एकै अधीनै ।।107 ।।

हे परमेश्वर ! तू आरम्भ से ही है। तुझसे ऊपर और कोई देवता नहीं है। तेरे जैसा तू ही है, इसलिए तेरा कोई भेद नहीं पा सकता। तेरी कोई तस्वीर नहीं बन सकती, तू स्वयं अपने आप के वश में है।

इस पावन बंद में गुरु पातशाह का फरमान है कि हे वाहिगुरु ! तू सब का मूल है, अतः सबको अस्तित्व में लाने वाला केवल तू ही है। तेरे से ऊपर कोई पूजने योग्य हस्ती नहीं है, अतः तुझे ही सब पूजते हैं। तुझे किसी इष्ट-देवता की अधीनगी नहीं है। तेरा प्रकाश स्वयं से ही है इसलिए तेरा भेद नहीं पाया जा सकता। तू पांच भौतिक स्वरूप (तस्वीर) से रहित है। तू केवल खुद के ही वश में है। तू किसी के अधीन नहीं है, क्योंकि समस्त शक्तियां तेरे ही अधीन हैं।

कि रोज़ी रज़ाकै।। रहीमै रिहाकै।।
कि पाक बिऐब हैं।। कि ग़ैबुल ग़ैब हैं।।108 ।।

हे रहमतों के सागर ! तू सबको रोजी देने वाला है। तू सबको धन-वैभव तथा मुक्ति देने वाला है। तू पवित्र एवं कलंक रहित है। तू पूर्णतया अदृश्य है।

इस बंद में गुरु कलगीधर पातशाह उस ईश्वर के विविध गुणों को बयान करते हुए फरमान करते हैं कि हे परमेश्वर ! तू सब जीवों

को रिज़क देने वाला दाता है। तू सब जीवों पर तरस खाने वाला रहमदिल है। तू पवित्र स्वरूप है तथा दोषों-विकारों से पूर्णतया रहित है। कोई विकार, कोई ऐब, कलंक तुझे छू भी नहीं सकता। तू पूर्णतया अदृश्य शक्ति है। तू पूर्णतया गुप्त होते हुए भी सब जगह अस्तित्व में है, जैसा कि गुरबाणी में अन्यत्र प्रमाण हैं :

सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई।।

(पन्ना 684)

कि अफवुल गुनाह हैं।। कि शाहान शाह हैं।।
कि कारन कुनिंद हैं।। कि रोज़ी दिहंद हैं।।109।।

हे वाहिगुरु ! तू जीवों के पाप काटने वाला है। तू बादशाहों का बादशाह है। तू सब विधियों का विधाता है। तू सबको रोजी देने वाला है।

प्रस्तुत बंद में गुरु पातशाह का पावन फरमान है कि हे परमेश्वर ! तू जीवों के गुनाहों को माफ करने वाला है। तू राजाधिराज है अर्थात् सम्राटों का सम्राट है। तू सब तरह के संयोग बनाने वाला है और समस्त कारणों का कर्त्ता है। तू अन्न दाता सभी जीवों को रोजी-रोटी देने वाला है। यहां विचारणीय पहलू है कि जैसे माता-पिता अपने बच्चों की अनेकों गलतियों पर उन्हें क्षमा कर देते हैं लेकिन वह परमेश्वर तो जीव के कोटिश-कोटिश अपराधों, पापों को नजर-अंदाज कर उन्हें माफ कर देता है। उस ईश्वर के पाप-खण्डन स्वरूप पर भी गुरदेव कुर्बान जाते हैं।

कि राज़क रहीम हैं।। कि करमं करीम हैं।।
कि सरबं कली हैं।। कि सरबं दली हैं।।110।।

हे वाहिगुरु ! तू सबको रिज़क देने वाला है। तू सब पर दया करने वाला है। तू रहमत करने वाला है। तू समस्त ताकतों का मालिक है। तू सब जीवों को नष्ट करने वाला है।

गुरदेव इस बंद में उस सर्वशक्तिशाली परमेश्वर के विविध गुणों का वर्णन करते हुए फरमान करते हैं कि हे परवरदिगार ! तू समस्त जीवों का अन्न–दाता है। तू दया का सागर है। **'सरबं कली'** अर्थात् सबको शक्ति (बल) देने वाला है। **'दली'** अर्थात् तू मलियामेट तहस–नहस करने वाला है। उस ईश्वर के जलाल और जमाल रूप का वर्णन इस बाणी में बहुतायता से किया गया है।

कि सरबत्त मानियै।। कि सरबत्त दानियै।।

कि सरबत्त गउनै।। कि सरबत्त भउनै।।111।।

हे परवरदिगार ! सर्वत्र तेरी ही पूजा–प्रतिष्ठा हो रही है। सब जीवों को सब जगह दान देने वाला तू ही है। तेरी समस्त स्थानों तक पहुंच है। तू समस्त भवनों में मौजूद है।

इस बंद में गुरु पातशाह उसी परमेश्वर का गुणगान करते हुए फरमान करते हैं कि हे वाहिगुरु ! तू ही सब जीवों द्वारा सब स्थानों पर पूजनीय है। सारी सृष्टि के जीवों को दातें बख्शने वाला भी तू ही है। तेरे लिए कोई भी स्थान अगम्य नहीं है अर्थात् कहीं भी कोई स्थान ऐसा नहीं है जहां तक तेरी पहुंच न हो, अतः तू सब लोकों में समाया हुआ है। गुरबाणी में अन्यत्र प्रमाण हैं :

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै।।
राम बिना को बोलै रे।।1।।रहाउ।।
एकल माटी कुंजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे।।
असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु समाना रे।।

एकल चिंता राखु अनंता अउर तजहु सभ आसा रे।।
प्रणवै नामा भए निहकामा को ठाकुरु को दासा रे।।

(पन्ना 988)

अर्थात् वह परमात्मा ही चींटी से हाथी तक सभी जीवों में तथा सभी स्थानों में स्वयं समाया हुआ है।

कि सरबत्त देसै।। कि सरबत्त भेसै।।
कि सरबत्त राजै।। कि सरबत्त साजै।।112।।

हे वाहिगुरु ! प्रत्येक देश में हर स्थान पर तू ही मौजूद है। प्रत्येक पहरावे में तू ही तो है। सर्वत्र तू ही अपना वेश दिखा रहा है। हर जगह तेरी ही सृजना है।

उपरोक्त बंद में भी गुरु पातशाह उसी परमेश्वर की सर्व-व्यापकता का वर्णन करते हुए फरमान करते हैं कि तू सभी देशों में तथा सभी पहनावों में व्यापक है। तू सर्वत्र अपना प्रकाश करने वाला है, क्योंकि तू स्वयं से प्रकाशवान हस्ती है। सभी सृजन-रचना का मूल तू ही है।

कि सरबत्त दीनै।। कि सरबत्त लीनै।।
कि सरबत्त जाहो।। कि सरबत्त भाहो।।113।।

हे वाहिगुरु ! तू सबको दान देने वाला है। तू सर्वत्र व्यापक है। हर जगह तेरा ही नूर है। सब जगह तेरा ही प्रकाश है।

इस बंद में गुरदेव उस प्रकाश स्वरूप परमेश्वर का गुणगान करते हुए कथन करते हैं कि वही एक दातार पिता सबको दान देने वाला है और सब जगह समाया हुआ है। **'लीनै'** शब्द का अर्थ कुछ विद्वानों

के अनुसार वापिस लेना में आया है अर्थात् वह ईश्वर ही दातें देने वाला और फिर अपनी ही अमानत को वापिस लेने वाला है। वही ईश्वर सब जगह प्रतिभा वाला है। गुरबाणी का अन्यत्र भी प्रमाण है :

अगम अगोचर अलख अपारा चिंता करहु हमारी।।
जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा घटि घटि जोति तुम्हारी।।

(पन्ना 795)

कि सरबत्त्र देसै।। कि सरबत्त्र भेसै।।
कि सरबत्त्र कालै।। कि सरबत्त्र पालै।।114।।

हे वाहिगुरु ! तू सब जगह मौजूद है, प्रत्येक वेश में भी तू ही है। सब जगह काल स्वरूप, सबको मारने वाला और सब की प्रतिपालना करने वाला भी तू ही है।

उस ईश्वर के प्रतिपालक एवं संहारक रूप का वर्णन करते हुए गुरदेव का फ़रमान है, हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर ! समस्त देशों का निवासी, समस्त पहरावों को धारण करने वाला तू ही है। तू सबको नाश करने वाला है तथा तू ही सब की रक्षा करने वाला है, जैसा कि जपु जी साहिब में श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है :

आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु।।

(पन्ना 7)

ऐसे अनंत बेअंत प्रभु का युगों से एक ही वेश अर्थात् सत्य-स्वरूप है।

कि सरबत्त्र हंता।। कि सरबत्त्र गंता।।
कि सरबत्त्र भेखी।। कि सरबत्त्रपेखी।।115।।

हे वाहिगुरु ! तू सब जीवों को नष्ट करने वाला है। तेरी सब जगह पहुंच है। हर पहरावे में तू ही है। सब जगह के जीवों की देख-रेख भी तू ही करता है।

अर्थात् हे परमेश्वर ! तू ही सब का संहारकर्त्ता है। तेरे लिए कोई भी स्थान अगम्य नहीं है। कुछ विद्वानों ने **'गंता'** शब्द के अर्थ **'कल्याण'** करने वाला माना है। इस आशय से स्पष्ट होता है कि वह परमेश्वर सब की गति अर्थात् कल्याण करने वाला है। व्यापक रूप में तू समस्त वेशों का धारणी है। तू आदि काल से समस्त जीवों की देखभाल करने वाला है अर्थात् समस्त जीवों हेतु सब रूपों में तू ही तू है।

कि सरबत्त काजे।। कि सरबत्त राजै।।
कि सरबत्त सोखै।। कि सरबत्त पोखै।।116।।

हे वाहिगुरु ! तू समस्त कर्मों को करने वाला है। सर्वत्र तेरा ही प्रकाश है। हर जगह तू ही सब जीवों को मारने वाला और सब जगह तू ही सबको पालने वाला है।

अर्थात् हे ईश्वर ! समस्त कार्यों के होने में तेरा ही हाथ है, अतः सारी सृष्टि के कारज तेरे ही कारण संवर रहे हैं। सर्वत्र तेरा ही प्रकाश (शोभा) है। सब जीवों का संहारकर्त्ता एवं पालनकर्त्ता तू ही है। सबको सुखाने वाला और सबको हरा-भरा करने वाला एक तू है।

कि सरबत्त त्राणै।। कि सरबत्त प्राणै।।
कि सरबत्त देसै।। कि सरबत्त भेसै।।117।।

हे परवरदिगार ! समस्त स्थानों पर तेरा ही बल कार्य कर रहा है। हर जीव तेरी दी हुई जिंदगी जी रहा है। तू हर देश में व्यापक है। समस्त पहरावों में भी तू ही है।

अर्थात् हे वाहिगुरु ! तुझ से बाहर कुछ भी नहीं है। सर्वस्व में तेरी ही दी हुई प्राण–वायु का प्रवाह चल रहा है। श्री गुरु नानक देव जी ने बहुत सुन्दर वर्णन इस सन्दर्भ में किया है। गुरदेव का फरमान है :

कैसी आरती होइ॥
भव खंडना तेरी आरती॥
अनहता सबद वाजंत भेरी॥

(पन्ना 13)

अर्थात् कुदरत में तेरी कैसी सुन्दर आरती हो रही है ! समस्त प्राणियों में चल रही जीवन–रौ (प्राण–वायु अर्थात् हृदय की धड़कनें) मानों तेरी आरती में नगाड़े बज रहे हैं। ठीक यही भाव गुरु कलगीधर पातशाह जापु साहिब के इस बंद में दर्शा रहे हैं कि समस्त प्राणियों में उसी की पावन ज्योति जग रही है। वे उस ईश्वर का ही गुणगान करते हुए उसी में अभेद हो जाने की प्रेरणा कलयुगी जीवों को दे रहे हैं।

कि सरबत्त मानियैं॥ सदैवं प्रधानियैं॥
कि सरबत्त जापियै॥ कि सरबत्त थापियै॥118॥

हे परमेश्वर ! तू सब जगह पूजनीय हस्ती है। तू सब जगह प्रमुख है। सर्वत्र तेरी ही आराधना हो रही है। तू हर जगह कायम है।

गुरदेव इस बंद में भी उस परमेश्वर की सर्वोच्चता सिद्ध करते हुए फरमान करते हैं कि दुनिया का प्रत्येक जीव तेरा ही उपासक है। सभी जगह सभी के द्वारा तेरी ही पूजा–अर्चना हो रही है। तू सबका मुखिया अर्थात् प्रधान है। हर चीज अस्थिर है, परिवर्तनशील है, एक तू ही सदैव स्थिर, अटल, अपरिवर्तनशील, सदैव कायम रहने वाला है। उसी ईश्वर की बंदगी सुमिरन, सिफत–सलाह से सदैव कायम रहने वाले सुखों की प्राप्ति हो सकती है।

कि सरबत्त भानै।। कि सरबत्त मानै।।
कि सरबत्त इंद्रै।। कि सरबत्त चंद्रै।।119।।

हे वाहिगुरु ! तू समस्त स्थानों पर सूर्य की तरह प्रकाश फैला रहा है। सर्वत्र तेरी ही पूजा हो रही है। सब जगह तू ही जीवों का स्वामी है तथा सर्वत्र तू ही चन्द्रमा की तरह निर्मल, शीतल चांदनी फैला रहा है।

उपरोक्त बंद में गुरु कलगीधर पातशाह उस परवरदिगार के तेज प्रताप एवं शीतल स्वरूप का वर्णन करते हुए स्पष्ट करते हैं कि वह प्रभु सारे जगत को सूर्य की तरह रोशन कर रहा है। **'भानै'** शब्द का अर्थ इस बंद में स. जोगिंदर सिंघ जी तलवाड़ा ने **'मनभावन'** के अर्थ में लिया है। परमात्मा सबके मन को अच्छा लगने वाला है अर्थात् सबके मन को भा जाने वाला।

वह ईश्वर सबके लिए पूजनीय हस्ती है, सबका राजा है, जैसा कि गुरबाणी में अन्यत्र भी प्रमाण है – **'तुम हो सब राजन के राजा।।''** यही नहीं वह प्रकाश और शीतलता का भी भण्डार है।

कि सरबं कलीमै।। कि परमं फहीमै।।
कि आकल अलामै।। कि साहिब कलामै।।120।।

हे प्रभु ! तू ही **'कलीमै'** अर्थात् सुन्दर, मीठे बोल बोलने वाला है। **'फहीमै'** अर्थात् तू ही अच्छी समझ वाला है। **'आकल'** भाव कि बुद्धि वाला है। वह ईश्वर सूझवान है। **'साहिब कलामै'** अर्थात् बाणी का मालिक है।

इस बंद में भी गुरदेव उसी परमेश्वर के विलक्षण गुणों का वर्णन करते हुए उसके प्रत्येक गुण को नमन करते हैं कि हे वाहिगुरु ! तू समस्त जीवों की रचना करता है और फिर उन सब में सुन्दर वचन बोल रहा है। तू सर्वोत्तम अक्ल का मालिक है। तू ही समस्त भाषाओं का विद्वान है। समस्त बोलियां तेरी ही रचना हैं और तू सब भाषाओं में निपुण है, अतः तू ही बोल और बाणी का धनी है।

कि हुसनल वजू हैं।। तमामुल रुजु हैं।।
हमेसुल सलामैं।। सलीखत मुदामैं।।121।।

हे वाहिगुरु ! तू सौन्दर्य की प्रतिमा है। **'तमामुल'** अर्थात् सारे रुजू अर्थात् ध्यान, अतः सभी जीवों पर तेरी ही नज़र है। तू सदैव कायम रहने वाला है। तेरी सृष्टि की रचना बिघ्न-रुकावटों से रहित है।

इस बंद में गुरु कलगीधर पातशाह सुंदरता की मूर्त की रचना को निर्विघ्न मानते हुए फरमान करते हैं कि हे प्रभु ! तू सौन्दर्य का साकार स्वरूप है। समस्त जीवों पर तेरा ध्यान है अर्थात् तू किसी की भी उपेक्षा नहीं करता। तेरी रचना सदैव कायम रहने वाली है, अतः इसमें कोई बाधा डालने की गुस्ताखी नहीं कर सकता। वस्तुतः तू और तेरी रचना अमर है।

ग़नीमुल शिकसतै।। ग़रीबुल परसतै।।
बिलंदुल मकानैं।। ज़मीनुल ज़मानैं।।122।।

हे वाहिगुरु ! तू शत्रुओं को परास्त करने वाला है। **'बिलंदुल'** अर्थात् तेरा ठिकाना बुलंद अथवा सबसे ऊंचा है। तू सब जगह मौजूद है। अतः हे प्रभु ! तू वैरियों को शिकस्त देने वाला है अर्थात् धर्म के दुश्मनों को हराने वाला है। तू गरीब निवाज अर्थात् निराश्रयों को आश्रय देने वाला है। तू सर्बव्यापी और सर्वकालीन है। धरती और आसमान के मध्य सर्वत्र हर पल तेरी मौजूदगी है। अतः कोई क्षण और कोई कण तेरे अस्तित्व के बगैर नहीं है।

उस परमेश्वर के गरीब निवाज स्वरूप को गुरबाणी में बहुतायत से दर्शाया गया है। भक्त रविदास जी की बाणी का प्रमाण है :

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।।
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै।।
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुंही ढरै।।
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै।।

(पन्ना 1106)

तमीजुल तमामैं।। रुजूअल निधानैं।।
हरीफुल अजीमैं।। रज़ाइक यकीनैं।।123।।

हे वाहिगुरु ! तू सब जीवों की पहचान करने वाला है, सबका ख्याल रखने वाला है। तू अधर्मियों का बड़ा शत्रु है। तू सचमुच सबको रिज़क देने वाला है।

गुरदेव उपरोक्त बंद में उसी परमेश्वर के गुणों का गान करते हुए स्पष्ट करते हैं कि वह सब जीवों को पहचानने वाला ईश्वर सम्पूर्ण ध्यान का खज़ाना है। हे प्रभु ! दुष्टों-पापियों का तू सबसे बड़ा वैरी

है। तू यकीनन सब प्राणियों को रिज़क देने वाला है, जैसा कि गुरबाणी में अन्यत्र भी स्पष्ट किया गया है कि प्रत्येक स्थान के जीव को वह ईश्वर रिज़क पहुंचाता है, यथा :

काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ॥
सैल पथर महि जंत उपाए ता का रिजकु आगै करि धरिआ॥

(पन्ना 10)

अनेकुल तरंग हैं॥ अभेद हैं अभंग हैं॥
अज़ीजुल निवाज़ हैं॥ ग़नीमुल ख़िराज है॥124॥

हे वाहिगुरु ! तू विशाल सागर के सदृश्य है और समस्त जीव मानो तेरे से उत्पन्न लहरें हैं। तेरा भेद नहीं पाया जा सकता। तू अविनाशी है अर्थात् तुझे कोई खंडित नहीं कर सकता। तू अपने प्यारों को मान-सम्मान देने वाला है। तू वैरियों से टैक्स वसूल करने वाला है अर्थात् दुश्मनों को दण्डित कर सदैव अपने अधीन रखने वाला है।

निरुकत सरूप हैं॥ त्रिमुकति बिभूत हैं॥
प्रभुगति प्रभा हैं॥ सुजुगति सुधा हैं॥125॥

हे परवरदिगार ! तेरा स्वरूप अवर्णनीय है। तेरा प्रताप माया के प्रभाव से परे है। संसार के समस्त जीव तेरे प्रभुत्व को स्वीकार करते हैं। तू महान् रस है जो समस्त जीवों में एकरस समाया हुआ है।

उपरोक्त बंद में गुरदेव उस परमेश्वर को माया के त्रिगुणी प्रभाव से मुक्त मानते हुए स्पष्ट करते हैं कि दुनिया में समस्त जीव त्रिगुणी (सतो-रजो-तमो) रूप में उलझे हुए हैं। केवल एक ईश्वर जिसके अधीन यह माया है, इसके प्रभाव से मुक्त है। वही जीव माया के प्रभाव से मुक्त हो सकते हैं। जिनका चित्त हरि-चरणों से जुड़ा है। पावन गुरबाणी का प्रमाण है :

त्रिसना बुझै हरि कै नामि ।।
महा संतोखु होवै गुर बचनी ।।
प्रभु सिउ लागै पूरन धिआनु ।।

(पन्ना 682)

सदैवं सरूप हैं।। अभेदी अनूप हैं।।
समसतो पराज हैं।। सदा सरब साज हैं।।126।।

हे वाहिगुरु ! तेरा स्वरूप सदा कायम रहने वाला है। तेरे समान कोई और हस्ती नहीं। तू सबको पराजित करने वाला तथा सदा संसार का निर्माण करने वाला है। अतः उस परमेश्वर का वजूद सदा स्थिर रहने वाला है। उसका कोई शरीक नहीं, क्योंकि उस जैसा कोई भी नहीं।

वह सब पर विजय हासिल करने वाला है। वह सदैव सारे जीवों का सृजनकर्त्ता है।

समसतुल सलाम हैं।। सदैवल अकाम हैं।।
त्रिबाध सरूप हैं।। अगाध हैं अनूप हैं।।127।।

हे वाहिगुरु ! तू समस्त जीवों को सलामत रखता है अर्थात् तू ही सब जीवों को दुःखों-क्लेशों-संतापों से मुक्त कर सही-सलामत रखता है। तू सदैव कामना से रहित है। तुझे कोई भी किसी तरह की इच्छा नहीं है। तेरी सत्ता विघ्न से रहित है, अतः तेरी राह में कोई बाधा पैदा नहीं कर सकता। तू सर्वव्यापी है। तेरे जैसा और कोई भी तो नहीं।

गुरदेव के पावन शब्दों में वह परमेश्वर सबकी सलामती का मूल है। गुरु जी कथन करते हैं कि हे प्रभु ! तेरी हस्ती मुकम्मल है, तेरा मार्ग निर्विघ्न है।

ओअं आदि रूपे।। अनादि सरूपै।।
अनंगी अनामे।। त्रिभंगी त्रिकामे।।128।।

हे वाहिगुरु ! तू सम्पूर्ण विश्व की आत्मा है। तेरी हस्ती सबसे पहले की है। तेरा स्वरूप अनादि है। तू अंगरहित, नामरहित है। तू तीनों तापों का नाश करने वाला है तथा तू तीनों लोकों के जीवों की कामना पूर्ण करने वाला है।

इस बंद में **'त्रिभंगी'** शब्द का अर्थ प्रो. साहिब सिंघ जी के चिन्तनानुसार **'तीन लोक'** है। परन्तु स. जोगिंदर सिंघ जी तलवाड़ा ने **'त्रिभंगी'** शब्द का आशय तीनों तापों (आधि, बियाधि तथा उपाधि) के अर्थ से किया है। उनके चिन्तनानुसार वह परमेश्वर तीनों तापों को नाश करने वाला है तथा तीनों भवनों (आकाश, पाताल एवं मातृलोक) के जीवों की मनोकामनाएं पूरी करने में सक्षम है।

त्रिबरगं त्रिबाधे।। अगंजे अगाधे।।
सुभं सरब भागे।। सुसरबा अनुरागे।।129।।

हे वाहिगुरु ! संसार के तीनों ही तत्व धर्म, अर्थ, काम तेरे अन्दर ही समाहित है। तीनों लोकों के जीवों पर तेरा ही स्वामित्व है। तुझसे कोई जीत नहीं सकता। तू अथाह है। तेरे समस्त अंग सुन्दर हैं। तू सब जीवों को प्यार करता है। अतः वह ईश्वर प्रेम का अथाह सागर है। वह प्रभु-प्रेम का ही प्रतीक है। वह सबसे प्यार करता है और सब जीव उस प्यारे प्रियतम से प्यार करते हैं।

त्रिभुगत सरूप हैं।। अछिज्ज हैं अछूत हैं।।
कि नरकं प्रणास हैं।। प्रिथीउल प्रवास हैं।।130।।

हे वाहिगुरु ! तेरा स्वरूप ऐसा है जिससे तीनों लोकों के जीव आनन्दित हो रहे हैं। तू कभी क्षीण नहीं होता और न ही कभी पुराना

होता है। तुझे कोई छू नहीं सकता। तू नर्कों को नाश करने वाला है। धरती पर मुसाफिरों की तरह रह रहे जीवों में तू ही समाया है।

प्रस्तुत बंद में गुरु कलगीधर पातशाह इस दुनिया को मुसाफिरखाना मानते हुए इस मुसाफिरखाने में आने वाले प्रत्येक राहगीर में उसी का निवास मानते हैं। अतः परमेश्वर नरक जैसे जीवन को भी आनंदमयी बनाने की क्षमता वाला है। वह ब्रह्माण्ड में हर रूप में समाया हुआ है अर्थात् वह ईश्वर कण-कण में रचा-बसा हुआ है।

निरुकति प्रभा हैं।। सदैवं सदा हैं।।
बिभुगति सरूप हैं। प्रजुगति अनूप हैं।।139।।

हे वाहिगुरु ! तेरा प्रताप अवर्णनीय है। तू सदा ही कायम है। तेरी हस्ती सबके लिए सुख प्रदान करने वाली है, आनंददायिनी है। तू सब जीवों में रचा-बसा है। तेरे जैसा तू ही है अर्थात् तेरा स्वरूप विलक्षण है।

निरुकति सदा हैं। बिभुगति प्रभा हैं।।
अनउकति सरूप हैं। प्रजुगति अनूप हैं।।132।।

हे मालिक ! तेरा स्वरूप अकथनीय है। समस्त जीव तेरे प्रकाश का सुख भोग रहे हैं। तेरा स्वरूप पूर्णतया बयान नहीं हो सकता। तू सब जीवों में बसा हुआ है, पर फिर भी तेरे जैसा कोई नहीं। अतः तू उपमा-रहित है। तेरी किसी से तुलना नहीं की जा सकती। तू बेमिसाल है।

चाचरी छंद।।
अभंग हैं।। अनंग हैं।।
अभेख हैं।। अलेख हैं।।133।।

हे वाहिगुरु ! तू नाशरहित है। तू अंगरहित है अर्थात् देहधारी स्वरूप वाला नहीं है अर्थात् तत्वों से निर्मित तेरी रचना नहीं, इसलिए तू पांच तत्वों में विलीन नहीं हो सकता, इसलिए तू नाशरहित है।

तेरा कोई विशेष वेश नहीं है, इसलिए तेरी कोई तस्वीर नहीं बन सकती। **'अलेख'** अर्थात् तेरे बारे में कुछ लिखा भी नहीं जा सकता। अतः गुरदेव उस परमेश्वर को हर रूप से अकथनीय, अतुलनीय मानते हैं।

अभरम हैं।। अकरम हैं।।
अनादि हैं।। जुगादि हैं।।134।।

कलगीधर पातशाह कथन करते हैं कि हे अकाल पुरख ! तू भ्रमरहित है। तू कर्म–काण्डों अर्थात् रिवाजों–रस्मों में नहीं उलझता। तेरा मूल्य नहीं जाना जा सकता। तू युगों के प्रारम्भ से है।

वह परमात्मा भ्रमों–भुलेखों से मुक्त है। धार्मिक रीति–रिवाजों की उसे कोई आवश्यकता ही महसूस नहीं होती। यह बात जानी नहीं जा सकती कि तेरी उपस्थिति कब से है, वस्तुतः समय के बंधन से तू स्वतंत्र है। प्रत्येक जीव समय की सीमा में है, केवल वह ईश्वर ही इन समस्त बंधनों से मुक्त है।

अजै हैं।। अबै हैं।। अभूत हैं।। अधूत हैं।।135।।

हे वाहिगुरु ! तुझे जीता नहीं जा सकता। तू नाश रहित स्वरूप वाला है। तेरी रचना पांच तत्वों से रहित है। तुझे कोई हिला नहीं सकता।

अर्थात् हे परमेश्वर ! तू अजय है अर्थात् तुझे हराने की किसी में सामर्थ्य नहीं है। तू अविनाशी है। सृष्टि का प्रत्येक जीव पांच भौतिक स्वरूप में निर्मित है। केवल वह ईश्वर पांच तत्वों से नहीं बना। सारा जगत, समस्त रचना परिवर्तनशील है। केवल एक अकाल पुरख एकरस मौजूद है।

अनास हैं।। उदास हैं।। अधंध है।। अबंध है।।136।।

हे वाहिगुरु ! तू नाश रहित स्वरूप वाला है। तू सांसारिक मोह से रहित है, माया के त्रिगुणी प्रभाव से भी परे है। तू सांसारिक झगड़ों-झमेलों से मुक्त है। तू सभी तरह के बंधनों से स्वतंत्र है।

अर्थात् वह परमेश्वर अविनाशी है। मोह-माया के समस्त बंधनों से मुक्त तथा स्वतन्त्र हस्ती वाला है।

अभगत हैं।। बिरकत हैं।।
अनास हैं।। प्रकास हैं।।137।।

हे वाहिगुरु ! तू मोह से रहित है। सांसारिक पदार्थों से निर्लेप है, नाश रहित स्वरूप वाला है, प्रकाश-पुंज है।

अर्थात् वह परमेश्वर सारी रचना का मालिक होते हुए भी किसी के मोह-बंधन में नहीं है, जैसे संसारी जीव जिस पदार्थ को या जिस किसी को अपना मान लेता है। उसके मोह-बंधन में बंध कर रह जाता है। यह सारी रचना उसी की है, फिर भी वह मोह-बंधनों से पूर्णतया मुक्त है। आओ ! यहां मोह और प्रेम में प्रमुख अंतर समझने का प्रयास करें। मोह का दायरा महापुरुषों के चिन्तानुसार सीमित है तथा स्वार्थ के धरातल पर खड़ा है, क्योंकि मोह का सम्बन्ध कुछ देकर उससे कुछ लेने की भावना रखता है लेकिन प्रेम निःस्वार्थ है। प्रेम केवल देना ही जानता है। प्रेम समर्पण है। प्रेम का दायरा अत्यंत विशाल है। गुरु कलगीधर पातशाह ने तो प्रेम और प्रभु को एक-दूसरे का पूरक माना है। गुरदेव का फरमान है :

साचु कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ।।
(त्व प्रसादि सवय्ये, पाः 10)

कलगीधर पातशाह ने डंके की चोट पर सारी दुनिया को संदेश दिया है कि जिन्होंने प्रेम किया है उन्होंने ही प्रभु को पाया है।

वस्तुतः प्राणी मात्र से प्यार करने वाले ही ईश्वर से प्यार कर सकते हैं। उपरोक्त पंक्ति गुरु पातशाह के मानवतावादी दृष्टिकोण की भी परिचायक है। वह प्रभु ज्ञान का प्रकाश है।

निचिंत हैं॥ सुनिंत हैं॥
अलिक्ख हैं॥ अदिक्ख हैं॥138॥

हे वाहिगुरु ! तू हर तरह की चिंता से रहित है। तू सदा कायम रहने वाला है। तेरी तस्वीर नहीं बनाई जा सकती और तू इन आंखों से दिखाई नहीं देता। प्रो. साहिब सिंघ जी ने गुरु कलगीधर पातशाह द्वारा रचित इस बंद की व्याख़्या बहुत सुन्दर ढंग से की है कि वह परमेश्वर जगत रूप परिवार वाला है तथा सब जीवों के सिर पर कायम है। न ही कोई तेरी तस्वीर खींच सकता है और न ही तू इन आंखों से देखा जा सकता है।

अलेख हैं॥ अभेख हैं॥
अढाह हैं॥ अगाह हैं॥139॥

हे वाहिगुरु ! तेरा कोई चित्र नहीं बन सकता। तेरा कोई पहरावा नहीं है। तुझे कोई गिरा नहीं सकता। तू बहुत गहरा है।

प्रस्तुत् बंद में गुरदेव उस परमेश्वर के गुणों का वर्णन करते हुए फरमान करते हैं कि वह प्रभु अलेख है। कुछ विद्वानों के चिन्तनानुसार **'अलेख'** शब्द का अर्थ है बिना लेखे-जोखे के इस आशयानुसार वह ईश्वर किसी भी तरह के हिसाब-किताब के झंझटों से मुक्त है। उसका स्वरूप किसी विशेष रूप-रेखा से परे है। वह सर्वोपरि है। उसे कोई पराजित नहीं कर सकता। वह सर्वशक्तिमान है। इसका कोई अंत नहीं पा सकता।

असंभ हैं॥ अगंभ हैं॥
अनील हैं॥ अनादि हैं॥140॥

हे परमेश्वर ! तू जन्म में नहीं आता, तू सर्वव्यापी है। तूं रूप-रंग से रहित है। तू मूल-रहित स्वरूप वाला है। असंभ शब्द का अर्थ डॉ. अजीत सिंघ के अनुसार, जो विचार में न आ सके। अर्थात् हे ईश्वर ! तू संसारी जीवों की सोच-विचार से परे है। इंसानी सोच-बुद्धि एक सीमा में है। अतः तुझे कैसे जाना जा सकता है ? प्रत्येक वस्तु प्राणी का कोई रूप-रंग है पर तू रूप-रंग से रहित है। तेरी प्रारम्भता का किसी को कोई अंदाजा नहीं। तू अनादि स्वरूप है।

अनित्त हैं। सुनित्त हैं।।
अजात हैं।। अजाद हैं।।141।।

हे वाहिगुरु ! तू प्रतिदिन दिखाई देने वाली वस्तुओं से अलग है। तू सदैव कायम रहने वाला है। तू आवागमन से रहित है। तू जीवों का मूल है और पूर्णतया स्वतंत्र हस्ती वाला है। अर्थात् वह प्रभु किसी के भी अधीन नहीं है।

चरपट छंद।। त्व प्रसादि।।
सरबं हंता।। सरबं गंता।।
सरबं खिआता।। सरबं गिआता।।142।।

उसी परमेश्वर की कृपा से रचित चरपट छंद में रचित इस बंद में गुरदेव का फरमान है कि हे वाहिगुरु ! तू ही समस्त प्राणियों का संहार करने वाला है। सभी स्थानों तक तेरी पहुंच है, सब जीवों में तू विख्यात है। अर्थात् सर्वत्र तेरी ही चर्चा है। तू सबके दिलों की जानने वाला है। जैसा कि गुरु पातशाह ने अन्यत्र भी उस वाहिगुरु को अंतर्यामी कहा है, यथा :

घट घट के अंतर की जानत।।
भले बुरे की पीर पछानत।।

(चौपई पाः 10)

सरबं हरता।। सरबं करता।।
सरबं प्राणं।। सरबं त्राणं।।143।।

हे वाहिगुरु ! तू सबको नष्ट करने वाला है। तू सर्वस्व का सृजनहार है। तू सब जीवों का प्राणधन है। तू सबका आश्रय है, अतः समस्त में तेरी ही जीवन–सत्ता है। तू सबका बल और आसरा है।

सरबं करमं।। सरबं धरमं।।
सरबं जुगता।। सरबं मुकता।।144।।

हे परमेश्वर ! तू समस्त कार्यों का कारण अर्थात् प्रेरक है। तू सब में व्यापक होकर समस्त कर्त्तव्य स्वयं ही निभा रहा है। तू सब में बसा है पर सबसे निर्लेप है।

प्रस्तुत बंद में गुरु पातशाह ने यह तथ्य समझाया है कि वह परमेश्वर निराकार होते हुए साकार स्वरूप में मौजूद है। दुनिया के समस्त कार्य उस प्रभु के ही अधीन हैं। समस्त जिम्मेवारियों का निर्वाह भी उसी के द्वारा ही हो रहा है। वह प्रभु सब में व्यापक होते हुए भी सबसे निर्लेप है।

रसावल छंद।। त्व प्रसादि।।
नमो नरक नासे।। सदैव प्रकासे।।
अनंगं सरूपे।। अभंगं बिभूते।।145।।

रसावल छंद में उस परमेश्वर की कृपा से उच्चारण किया गया।

हे प्रभु ! तू नरकों को नाश करने वाला है। तू सदा प्रकाश–स्वरूप है। अंगों से रहित प्रभु ! तेरा प्रकाश कभी नष्ट होने वाला नहीं है।

इस बंद में उस ईश्वर के समस्त रूपों को नमन करते हुए गुरदेव फरमान करते हैं कि हे नरकों के कष्टों का नाश करने वाले प्रभु ! तू प्रकाश–पुंज है। हे अंगों से रहित प्रभु ! तेरा तेज स्वरूप सदा कायम रहने वाला है।

प्रमाथं प्रमाथे ।। सदा सरब साथे ।।
अगाध सरूपे ।। त्रिबाध बिभूते ।।146 ।।

इस बंद में गुरदेव उस परमेश्वर के विलक्षण गुणों का वर्णन करते हुए फरमान करते हैं कि वह परमेश्वर दूसरों को दुखी करने वालों को नष्ट करने वाला है। हे परमात्मा ! तू सदैव सबके अंग-संग है। तू सर्वव्यापी है। तेरी महिमा अपरम्पार है। अतः तेरी हस्ती का कोई अंत नहीं पा सकता और न ही तेरे तेज प्रताप को कोई रोक सकता है।

अनंगी अनामे ।। त्रिभंगी त्रिकामे ।।
त्रिभंगी सरूपे ।। सरबंगी अनूपे ।।147 ।।

हे वाहिगुरु ! तेरा कोई अंग नहीं है। तेरा कोई विशेष नाम भी नहीं है। तीनों लोको को बनाने व नाश करने वाला तू ही है। तू तीनों लोकों के जीवों की कामना पूर्ण करने वाला है। तेरा स्वरूप नाश रहित है। तेरा स्वरूप मुकम्मल है। तेरे जैसा एक तू ही है। गुरबाणी में अन्यत्र भी इसी भाव को दृढ़ करवाया गया है कि मैं चारों दिशाओं में घूम चुका हूं मगर हे मालिक ! तेरे जैसा और तेरे जितना और कोई भी नहीं है।

न पोत्रे न पुत्त्रै ।। न सत्त्रै न मित्रै ।।
न तातै न मातै ।। न जातै न पातै ।।148 ।।

हे ईश्वर ! न तेरा कोई पुत्र है न पौत्र है। न तो तेरा कोई मित्र है, न शत्रु, न तेरा कोई पिता है न माता। न तो तेरा कोई वंश है और न ही धर्म।

प्रस्तुत बंद में गुरदेव ने उस ईश्वर को पूर्णतया मोह-माया के बंधन से मुक्त बताया है इसलिए वह परमेश्वर पूर्णतया मेरे-तेरे के बंधनों से मुक्त है।

त्रिसाकं सरीक हैं।। अमितो अमीक हैं।।
सदैवं प्रभा हैं।। अजै हैं अजा हैं।।149।।

हे निरंकार ! तेरा कोई शरीक नहीं है। तू अत्यंत गहरा है। तेरी गहराई को नापा नहीं जा सकता। तू सदा ही प्रकाश-स्वरूप है। तुझे कोई जीत नहीं सकता। तू जन्म में नहीं आता।

'त्रिसाकं' शब्द के अर्थ कुछ विद्वानों के चिंतनानुसार सम्बन्धी (रिश्तेदार) माना गया है। इस आशयानुसार दुनिया में सबका कोई न कोई रिश्तेदार, सगा-सम्बन्धी है, लेकिन उस प्रभु का संसारी मनुष्यों की तरह कोई सगा-सम्बन्धी नहीं है।

भगवती छंद।। त्व प्रसादि।।
कि ज़ाहर ज़हूर हैं।। कि हाज़र हजूर हैं।।
हमेसुल सलाम हैं।। समसतुल कलाम हैं।।150।।

भगवती छंद में उसकी कृपा से उच्चरित प्रस्तुत बंद में गुरु कलगीधर पातशाह फरमान करते हैं कि हे वाहिगुरु ! तेरा तेज स्पष्ट दिखाई देता है, क्योंकि तू सर्वत्र मौजूद है एवं प्रत्येक के पास है। तू सदैव कायम रहने वाला है। सभी जीव तेरा ही गुणगान करते हैं। वह परमेश्वर जर्रे-जर्रे में विद्यमान है। हे प्रभु ! तू सदैव कायम रहने वाली हस्ती है। **''समसतुल कलाम''** शब्द के अर्थ डॉ. अजीत सिंघ अमृतसर के अनुसार, तू समस्त जीवों की बोली का विषय है अर्थात् सृष्टि के सारे जीव तेरा ही गुणगान करते हैं क्योंकि वह परमेश्वर गुणों का अथाह सागर है।

कि साहिब दिमाग़ हैं।। कि हुसनल चराग़ हैं।।
कि कामल करीम हैं।। कि राज़क रहीम हैं।।151।।

हे वाहिगुरु ! तू बड़ी ऊंची समझ का मालिक है। तू सौंदर्य का चिराग है। तू समस्त प्राणियों पर अत्यंत रहमतें बरसाने वाला तथा

सबको रिज़क पहुंचाने वाला है और तू समूची दुनिया पर रहम करने वाला है।

अर्थात् वह परमेश्वर श्रेष्ठ बुद्धि का मालिक है, सौंदर्य की प्रतिमा है, सब पर दया करने वाला और सुंदरता का भण्डार है। हे प्रभु ! तू परम कृपालु है।

अतः जैसे दीपक जलने से अंधकार दूर हो जाता है वैसे ही ईश्वर के हृदय में बस जाने से सारा अज्ञान रूपी अंधकार दूर हो जाता है।

कि रोज़ी दिहिंद हैं।। कि राज़क रहिंद हैं।।
करीमुल कमाल हैं।। कि हुसनल जमाल हैं।।152।।

हे प्रभु ! तू सबको रोजी देने वाला है। तू सबको बंधनों से मुक्त करने वाला है। तू पूर्णतया जीवों पर रहमतें करने वाला है। तू अति सुंदर है। वह प्रभु सब जीवों को रोजी, रिज़क देने वाला, समस्त बंधनों से छुड़ाने वाला, रहमतों का सागर है तथा सौंदर्य का शिखर है अर्थात् अत्यन्त सुन्दर है।

ग़नीमुल खिराज हैं।। ग़रीबुल निवाज़ हैं।।
हरीफुल शिकंन हैं।। हिरासुल फ़िकंन हैं।।153।।

हे वाहिगुरु ! तू शत्रुओं को दण्ड देने वाला है तथा गरीबों को मान-सम्मान देने वाला है। दुश्मनों का विनाश करने वाला तथा भय से मुक्त करने वाला है अर्थात् जो तेरी शरण में आ जाता है उस जीव को किसी भी तरह का कोई भय शेष नहीं रह जाता।

विचारणीय तथ्य है कि दुनिया का डर जीव को कायर बना देता है जबकि ईश्वर का भय हृदय में बने रहने से जीव बेखौफ होकर विचरण करता है, उसे आत्मिक बल एवं आत्मिक अडोलता की अवस्था प्राप्त हो जाती है।

वस्तुतः जो उसकी शरण में रहते हैं उन्हें प्रभु मान-सम्मान बख्शता है। इसके विपरीत जो उसके समक्ष अभिमान करता है उसे केवल पछताना ही पड़ता है।

कलंकं प्रणास हैं।। समसतुल निवास हैं।।
अगंजुल ग़नीम हैं।। रजाइक रहीम हैं।।154।।

हे वाहिगुरु ! तू सब तरह के कलंकों को दूर करने वाला है। समस्त जीवों में तेरा निवास है। शत्रु तुझे जीत नहीं सकता। तू सबको रोजी देने वाला तथा सब पर रहम करने वाला है।

प्रस्तुत बंद में कलगीधर पिता उस परमेश्वर का गुणगान करते हुए फरमान करते हैं कि हे वाहिगुरु ! तू हर तरह के कलंकों को मिटाने वाला अर्थात् दोषों-गुनाहों को दूर करने वाला है। वह सब में निवास करने वाला भी है, यथा गुरबाणी का फरमान है :

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै।।
राम बिना को बोलै रे।। (पन्ना 988)

ऐसे परमेश्वर को कोई वैरी जीत नहीं सकता। ऐसे शक्तिशाली प्रभु से गुरु पातशाह ने विनती की है कि :

तव चरनन मन रहै हमारा।।
अपना जान करो प्रतिपारा।।1।।
हमरे दुसट सभै तुम घावहु।।
आपु हाथ दै मोहि बचावहु।।
सुखी बसै मोरो परिवारा।।
सेवक सिक्ख सभै करतारा।।2।।
मो रच्छा निज कर दै करियै।।
सब बैरन को आज संघरियै।।
(चौपई पाः 10)

समसतुल जुबां हैं।। कि साहिब किरां हैं।।
कि नरकं प्रणास हैं।। बहिसतुल निवास हैं।।155।।

हे वाहिगुरु ! तू सब जीवों की जुबान है अर्थात् सब जीव तेरे द्वारा दी गई शक्ति से बोल रहे हैं। तू प्रतापी है। तू नरकों का नाश करने वाला है। तेरा निवास स्वर्ग में है अर्थात् जहां तेरा निवास है, जिस हृदय में तू बसा है, जहां तेरी सिफत-सलाह होती है उस घर में उस स्थान पर आनंद ही आनंद है। हे वाहिगुरु ! तू सब जीवों की वाक् सिद्धी है।

अतः तू समस्त गुणों की हद का स्वामी है। नरकों के भयावह दुखों को मिटाने वाला, स्वर्ग के आनंदमयी सुखों का प्रदाता है। वस्तुतः जहां भी तेरा निवास है वहां रहमतें बरसती हैं, सुखों के निर्झर बहते हैं। अतः वहां दुःख, क्लेश, दरिद्र लेश मात्र भी नहीं आ सकता। भक्त रविदास जी की बाणी में यही भाव स्पष्ट होता है :

बेगम पुरा सहर को नाउ।।
दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ।।
नां तसवीस खिराजु न मालु।।
खउफु न खता न तरसु जवालु।।

(पन्ना 345)

कि सरबुल गवंन हैं।। हमेसुल रवंन हैं।।
तमामुल तमीज हैं।। समसतुल अजीज हैं।।156।।

हे प्रभु ! तू समस्त स्थानों पर विचरन करने वाला है। तेरा सब जीवों में निवास है अर्थात् सब जगह तथा समस्त प्राणियों में तू ही तू समाया हुआ है। तू सबका प्यारा है। अतः सब जीव तुझसे प्यार करते हैं तथा तू सबको प्यार करने वाला है।

परं परम ईस हैं।। समसतुल अदीस हैं।।
अदेसुल अलेख हैं।। हमेसुल अभेख हैं।।157।।

हे वाहिगुरु ! तू सबसे श्रेष्ठ मालिक है। इस सृष्टि के प्रारम्भ से ही तू सबका मालिक है। तेरा कोई विशेष ठिकाना नहीं अर्थात् वह प्रभु किसी खास स्थान पर नहीं रहता, क्योंकि वह तो सब जगह रहता है। तेरा कोई चित्र भी नहीं बनाया जा सकता, क्योंकि तू पंच तत्वों के शरीर में कभी आया ही नहीं और न ही तेरा कोई विशेष पहरावा है।

प्रस्तुत बंद में कलगीधर पातशाह उस परमेश्वर को अलेख अर्थात् समस्त लेखों से रहित नानते हैं, क्योंकि संसार में समस्त जीवों के कर्मों का लेखा-जोखा है जिसे जीव को न चाहते हुए भी भुगतना ही पड़ता है। उस परमेश्वर के सिर ऐसा कोई लेखा-जोखा नहीं है। वह इन सबसे निर्लिप्त है, जैसे कि गुरु नानक पातशाह का पावन फरमान है :

सभना लिखिआ वुड़ी कलाम।।
एहु लेखा लिखि जाणै कोइ।। (पन्ना 3)

विशेष तथ्य, सबके लेखे-जोखे लिखने वाले उस परमेश्वर के सिर पर कोई लेखा नहीं है :

ज़मीनुल ज़मा हैं।। अमीकुल इमा हैं।।
करीमुल कमाल हैं।। कि जुरअति जमाल हैं।।158।।

हे वाहिगुरु ! तू धरती और आकाश, हर जगह मौजूद है। तू अत्यंत गहरा है। हे प्रभु ! तू रहमतें बरसाने वाला है। तू बहादुरी एवं सौंदर्य का स्वरूप है।

अतः वह परमेश्वर सर्वव्यापी एवं सर्व कालों में मौजूद है। तू गहरी रमज वाला है अतः तेरी गहराई को नापने का कोई पैमाना ही नहीं है। तू रहमतों का सागर है। तेरी दलेरी अकथनीय है।

कि अचलं प्रकास हैं।। कि अमितो सुबास हैं।।
कि अजब सरूप हैं।। कि अमितो बिभूत हैं।।159।।

हे मालिक ! तेरा नूर सदैव कायम रहने वाला है। तू अनंत सुगंधियों वाला है। तेरी हस्ती आश्चर्यजनक है। तेरे तेज को मापा नहीं जा सकता। तू अनन्त ऐश्वर्य का मालिक है। सर्वत्र तेरा ही प्रकाश है, यथा बाणी–प्रमाण है :

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे।।
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे।।
(पन्ना 1349)

कि अमितो पसा हैं।। कि आतम प्रभा हैं।।
कि अचलं अनंग हैं।। कि अमितो अभंग हैं।।160।।

हे वाहिगुरु ! तेरा संसार रूपी फैलाव बेअंत है। तेरी रचना का पसार अत्यधिक है। तू स्वयं प्रकाश–स्वरूप है। तू सदैव अडोल अवस्था में टिके रहने वाला है। तेरा कोई शरीर नहीं, तू बेअंत है, तू नाश रहित स्वरूप वाला है।

उपरोक्त बंद में गुरु पातशाह उस परमेश्वर के बेअंत गुणों एवं रचना का वर्णन करते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि वह निराकार किस तरह साकार रूप में इस जगत में विद्यमान है, जैसे कि श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है :

सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ
सहस मूरति नना एक तुोही।।
सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु
सहस तव गंध इव चलत मोही।।
सभ महि जोति जोति है सोइ।।
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ।। (पन्ना 13)

अर्थात् समस्त जीवों में व्यापक होने के कारण हजारों तेरी आंखें हैं, पर निराकार रूप में तेरी एक भी आंख नहीं है। समस्त प्राणियों में उसी परमेश्वर की ही ज्योति जग रही है। उसी की ज्योति से समस्त जीवों में प्रकाश (सूझ–बूझ) है।

मधुभार छंद॥ त्व प्रसादि॥

मुनि मनि प्रनाम॥ गुनि गन मुदाम॥
अरि बर अगंज॥ हरि नर प्रभंज॥161॥

हे वाहिगुरु ! तेरी कृपा से रचित मधुभार छंद में उच्चरित बंद में कलगीधर पातशाह फरमान करते हैं कि हे परवरदिगार ! सभी ऋषि–मुनि तुझे मन करके नमस्कार करते हैं।

तू सदा ही बेअंत गुणों का मालिक है। तू बड़े–बड़े शत्रुओं द्वारा भी नहीं जीता जा सकता। तू सबका मालिक है। तू सबका नाश करने वाला है। समस्त मुनि–जन, गुणी–जन उस ईश्वर को ही प्रणाम करते हैं। तू दुष्टों का संहार करने वाला है। तू सबका स्वामी है। सबको नष्ट करने की सामर्थ्य भी तुझ में ही है।

अनगन प्रनाम॥ मुनि मनि सलाम॥
हरि नर अखंड॥ बर नर अमंड॥162॥

हे प्रभु ! अनंत जीव तुझे प्रणाम करते हैं, ऋषि–मुनि तुझे दिल से सलाम करते हैं अर्थात् मुनि–जन तुझे मन करके प्रणाम करते हैं। तू नाश–रहित नरसिंह स्वरूप है। अतः वह परमेश्वर सब मनुष्यों में श्रेष्ठ है। हे प्रभु ! तू विनाश रहित है। तू सर्वाधिक शोभा वाला है। अतः उसकी शोभा अनुपम है जो किसी तरह की भी बाहरी सजावट की मोहताज नहीं। वस्तुतः उसका हर रूप विलक्षण है।

अनभव अनास॥ मुनि मनि प्रकास॥
गुनि गन प्रनाम॥ जल थल मुदाम॥163॥

हे परमेश्वर ! तू ज्ञान का भण्डार है। तू नाश रहित है। ऋषियों-मुनियों के हृदय में भी तू ही ज्ञान का प्रकाश करने वाला है। हे बेअंत गुणों के मालिक परमात्मा ! तू जल-थल सर्वत्र मौजूद है।

उपरोक्त बंद में कुछ चिंतकों ने **'अनभव'** शब्द के अर्थ **'जन्म से रहित'** माना है। अर्थात् हे प्रभु ! तू जन्म एवं नाश रहित है। तू हमेशा हर जगह मौजूद है।

अनछिज्ज अंग।। आसन अभंग।।
उपमा अपार।। गति मिति उदार।।164।।

हे वाहिगुरु ! तेरा स्वरूप कभी पुराना होने वाला नहीं है। अर्थात् तू नित्य ही नया है। तेरा आसन (ठिकाना) सदा ही स्थिर है। तेरी महिमा अपरम्पार है। तेरा स्वरूप पूर्णतया जानना किसी के वश की बात ही नहीं है। तेरी उदारता को कोई मुकम्मल तौर पर नहीं जान सकता।

प्रस्तुत बंद में गुरु कलगीधर पातशाह ने उस परमेश्वर को कभी भी क्षीण न होने वाला, सदैव अटल सिंहासन वाला मालिक कहा है तथा जिसका स्वरूप पल-पल नवीनता लिए हुए है जैसा कि लोक-प्रचलित किवदंति है कि शेषनाग अपनी हजार जिह्वा से हर पल उस ईश्वर का नित्य नया नाम उच्चारण करता है लेकिन वह शेषनाग भी उस परमेश्वर का अंत नहीं पा सका और न ही उस परमेश्वर के सम्पूर्ण नामों का उच्चारण हो सका है। गुरदेव ऐसे अनंत-बेअंत नामों के नित्य नवीन स्वरूप को नमन करते हैं।

जल थल अमंड।। दिस विस अभंड।।
जल थल महंत।। दिस विस बिअंत।।165।।

हे वाहिगुरु ! तू जल में, थल में, भाव हर जगह शोभा वाला है। तुझे किसी बाहरी सजावट की आवश्यकता नहीं। तू कण-कण में

मौजूद है। **'अभंड'** अर्थात् तू स्त्री द्वारा पैदा नहीं हुआ। जल-थल सर्वत्र तेरी मौजूदगी है तथा तू सबसे बड़ा है, सब जगह, हर कोने में तेरा निवास है। अतः जर्रे-जर्रे में तू ही तू समाया हुआ है।

कलगीधर पातशाह की तरह गुरु नानक पातशाह ने भी ईश्वर को **'अभंड'** बयान किया है। **'आसा की वार'** में आप जी का पावन फरमान है :

नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ॥

(पन्ना 473)

अर्थात् सब जीवों का जन्म मादा द्वारा ही होता है, केवल एक अकाल पुरख ही है जिसे कोई स्त्री जन्म नहीं देती।

अनभव अनास॥ ध्रित धर धुरास॥
आजान बाहु ॥ एकै सदाहु॥166॥

हे वाहिगुरु ! तू ज्ञान स्वरूप है। तू नाश रहित है। तू पृथ्वी का मालिक है। तू धैर्यवानों में सर्वोत्तम है। इस सांसारिक रचना के समस्त साधन तेरे ही अधीन हैं। तू प्रारम्भ से ही एक है। वस्तुतः सारी रचना उसी की है। गुरबाणी में अन्यत्र भी प्रमाण है :

इह जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु॥

(पन्ना 463)

अर्थात् यह संसार सदैव स्थिर प्रभु के रहने का स्थान है और इसमें मालिक प्रभु का निवास है।

ओअंकार आदि॥ कथनी अनादि॥
खल खंड खिआल॥ गुरबर अकाल॥167॥

हे वाहिगुरु ! तू प्रत्येक स्थान पर एकरस व्यापक है। तू ही सारे जगत का मूल है। तेरे आदि स्वरूप को कोई बयान नहीं कर सकता। हे प्रभु ! तू एक पलक झपकने से भी कम समय में अर्थात् एक ही

विचार द्वारा समस्त दुष्टों का नाश कर सकता है। तू सबसे बलशाली और मौत से रहित है।

प्रस्तुत बंद में **'कथनी अनादि'** से भाव है कि उस परमेश्वर के मूल को बातों द्वारा नहीं जाना जा सकता, क्योंकि वाक–चातुर्य अर्थात् चालाकियों एवं सियानपों से तो वह प्रभु कोसों दूर है, यथा जपु जी साहिब की बाणी में फरमान है :

सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि।।

(पन्ना 1)

वस्तुतः जीवात्मा और परमात्मा के मध्य ये चतुराइयां ही सबसे बड़ी बाधा हैं। वह प्रभु तो भोले–भाव से मिलता है। जैसा कि कबीर जी का पावन फरमान है :

कहु कबीर भगति करि पाइआ।।
भोले भाइ मिले रघुराइआ।।

(पन्ना 324)

घर घरि प्रनाम।। चित चरन नाम।।
अनछिज्ज गात।। आजिज न बात।।168।।

हे वाहिगुरु ! समस्त प्राणी घर–घर में तुझे नमस्कार करते हैं। सब दिलों में तेरे चरण–कमल और तेरा पावन नाम बस रहा है। तेरा स्वरूप कभी पुराना नहीं होता। किसी बात को पूरा करने हेतु तुझे किसी की मोहताजी नहीं, अतः किसी बात (कार्य) को पूरा करने हेतु तुझे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं।

प्रस्तुत बंद में गुरु पातशाह ने उस निराकार के साकार रूप का वर्णन करते हुए स्पष्ट किया है कि हृदय में ध्यान धरने के लिए तेरा नाम ही तेरे चरण हैं। तेरा नूरानी स्वरूप क्षीण नहीं होता। हे प्रभु

! तू हर दशा, हर दिशा से चढ़ती कला वाला है।

अनझंझ गात॥ अनरंज बात॥
अनटुट भंडार॥ अनठट अपार॥169॥

हे वाहिगुरु ! तेरी हस्ती झगड़े-झमेलों से रहित है। तेरी किसी बात में से क्रोध नहीं झलकता। अर्थात् तेरी प्रत्येक बात रंज (गुस्से) से रहित है। तेरे खजाने सदैव भरपूर रहते हैं। अर्थात् हे प्रभु ! तेरे भंडार हमेशा भरे रहते हैं। तुझे कोई भी मूर्त रूप में स्थापित नहीं कर सकता। तू बेअंत है।

उपरोक्त बंद में गुरदेव ने उस परमेश्वर के क्षमाशील एवं अत्यंत मधुर स्वरूप का जिक्र किया है। गुरबाणी में अन्यत्र भी इसी आशय को स्पष्ट किया गया है, यथा :

इकु फिका न गालाइ सभना मै सचा धणी॥
हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ अमोलवे॥

(पन्ना 1384)

यही नहीं गुरु पातशाह ने तो उस परमेश्वर को **'मिठ बोलड़ा'** कहा है और मीठा बोलना तथा विनम्रता धारण करना सबसे बड़ा गुण मानते हुए इसे ही समस्त गुणों का सार-तत्व माना है। यथा :

मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु॥

(पन्ना 470)

आडीठ धरम॥ अति ढीठ करम॥
अणब्रण अनंत॥ दाता महंत॥170॥

हे परमेश्वर ! तेरा कानून अदृश्य ढंग से कार्य कर रहा है। तू निर्भय स्वरूप है, अतः तू प्रत्येक कार्य निडरता से करता है। तुझे

कोई घायल नहीं कर सकता। तू बेअंत है। तू दातें बख्शने वाला सर्वोत्तम दातार पिता है।

कलगीधर पातशाह के मुखारबिंद से उच्चरित इस बंद का अर्थ प्रो. साहिब सिंघ जी ने बहुत सुन्दर ढंग से किया है। हे वाहिगुरु! तेरे जैसा फर्ज निभाने वाला कहीं नज़र नहीं आता। तेरे समस्त कार्य बड़े साहसपूर्ण हैं। भाव तू जगत-मर्यादा को चलाने का फर्ज इतनी एकाग्रता से पूर्ण कर रहा है कि इसकी मिसाल नहीं मिलती और तू यह सारा कार्य करता भी उत्साह से है, किसी बंधन में नहीं। हे प्रभु! तू बेअंत है, सबको दातें बख्शने वाला है तथा सबसे बड़ा है।

हरिबोलमना छंद॥ त्व प्रसादि॥
करुणालय हैं॥ अरि घालय हैं॥
खल खंडन हैं॥ महि मंडन हैं॥171॥

तेरी कृपा से हरिबोलमना छंद में उच्चरित प्रस्तुत बंद में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का फरमान है कि हे प्रभु! तू संसार के प्राणियों पर तरस खाने वाला है। तू दया का घर है। तू दुष्टों का संहार करने वाला है तथा धरती को सुसज्जित करने वाला है। अर्थात् तू प्राणियों को सजाने वाला है, वस्तुतः सारे जगत की शोभा तुमसे ही है। गुरबाणी का प्रमाण है :

आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ॥
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ॥

(पन्ना 463)

अर्थात् सारी रचना उसी परमेश्वर की है और उसी में ही समा जाती है। प्रकृति के कण-कण में वही रचा-बसा है और वही सर्वत्र सुशोभित हो रहा है।

जगतेस्वर हैं।। परमेस्वर हैं।।
कलि कारण हैं।। सरब उबारण हैं।।172।।

हे वाहिगुरु ! तू इस जगत का मालिक है। तू परमेश्वर अर्थात् सर्वोच्च स्वामी है। तू सब युद्धों का प्रारम्भ करने वाला है तथा तू ही उन सबसे बचाने वाला है।

प्रस्तुत बंद में विचारणीय पहलू है कि वह परमेश्वर कलह–क्लेश का कारण कैसे हो सकता है ? उत्तर भी स्पष्ट है कि उस मालिक के हुक्म में ही तो सब कुछ हो रहा है, जैसा कि गुरबाणी का पावन फरमान है :

कारणु करतै जो कीआ सोई है करणा।।

(पन्ना 1102)

उसी को खुशी–खुशी स्वीकार करते हुए अपने कर्त्ता भाव को त्यागना है, क्योंकि यही जीव का अहं कलह का कारण बनता है, लेकिन जो कुछ भी होता है, उससे उसी नियंता अर्थात् सब पर हकूमत करने वाले परमेश्वर का ही रिमोट भाव उसकी कला काम कर रही होती है। अतः वही युद्धों आदि का मूल कारण है और वही उनसे बचाने वाला भी है। गुरु कलगीधर पातशाह समस्त क्रिया–कलापों में, कारण, कर्म, फल में सर्वत्र उस परमेश्वर का ही दीदार करते हैं तथा उसी का गुणगान करते हैं।

ध्रित के ध्रण हैं।। जग के क्रण हैं।।
मन मानिय हैं।। जग जानिय हैं।।173।।

हे वाहिगुरु ! तू धरती का सहारा है। तू ही इस संसार को बनाने वाला है। तू ही सबके हृदयों में मनन करने योग्य है अर्थात् सर्वत्र तू ही पूजनीय हस्ती है। जगत में तू ही सबके लिए जानने योग्य है। अतः सभी तुझे ही नमन करते हैं और तुझे ही जानने का प्रयास करते हैं।

यह बात अलग है कि तुझे मुकम्मल तौर से कोई नहीं जान पाया और न ही तेरा पूर्णतया अंत पाना किसी जीव का मकसद है। बस, तू जितना जिसे समझने की तथा कहने की सामर्थ्य बख्शता है, उतना ही समझ कर कहने योग्य हो सकता है, यथा गुरबाणी प्रमाण है :

आपु आपनी बुधि है जेती।।
बरनत भिंन भिंन तुहि तेती।।
तुमरा लखा न जाइ पसारा।।
किह बिधि सजा प्रथम संसारा।।

(चौपाई पाः 10)

सरबं भर हैं।। सरबं कर हैं।।
सरब पासिय हैं।। सरब नासिय हैं।।174।।

हे वाहिगुरु ! तू सबका पालन-पोषण करने वाला है तथा तू ही सबको पैदा करने वाला है। तू सबके निकट बस रहा है। तू ही सबका विनाश करने वाला है।

उपरोक्त बंद में कलगीधर पातशाह ने उस ईश्वर को सबके निकट बसता बयान किया है। वह परमेश्वर व्यापक रूप में प्रत्येक जीव में हर समय और हर जगह समाया हुआ है, जैसा कि श्री गुरु रामदास जी का पावन फरमान है :

तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा।।

(पन्ना 448)

यहां विचारणीय तथ्य है कि वह परमेश्वर हर घट में, हर स्थान पर बस रहा है, लेकिन फिर भी जीव को दिखाई क्यों नहीं देता ! वस्तुतः जिस पर उस अकाल पुरख की रहमत होती है उसे ही गुरु-

कृपा से सर्वत्र बसता वह परमेश्वर दिखाई देता है, जैसा कि पंचम पातशाह जी की पावन बाणी इसी भाव को दृढ़ करवाती है :

गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु॥
हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु॥

(पन्ना 293)

करुणाकर हैं॥ बिस्वंभर हैं॥
सरबेस्वर हैं॥ जगतेस्वर हैं॥175॥

हे वाहिगुरु ! तू दया का सागर है, विश्व के समस्त जीवों का पालनकर्त्ता है, सबका स्वामी है, वह कुल जहान का मालिक है।

वस्तुतः वह प्रभु रहमतों की खान है। जब वह तरस खाकर किसी को निवाजता है तब उसकी बख्शिशों का अंत नहीं पाया जा सकता, जैसा कि पंचम पातशाह का उस अकाल पुरख के चरणों में कोटि-कोटि नमन है। नम्रता के पुंज श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा जब श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की सम्पादना का पुनीत कार्य सम्पन्न हुआ तब उस ईश्वर का शुक्राना करते हुए गुरु पातशाह की बाणी है :

तेरा कीता जातो नाही मैनो जोग कीतोई॥
मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई॥
तरसु पइआ मिहरामति होई सतिगुरु सजणु मिलिआ॥
नानक नामु मिलै ता जीवां तनु मनु थीवै हरिआ॥

(पन्ना 1429)

जो इस तथ्य को गुरु-कृपा से समझ लेता है कि मेरी समर्थता कुछ भी नहीं, उस परम-पिता ने तरस खाकर मुझे इस योग्य कर दिया है, उसी का आध्यात्मिक जीवन बुलंदियों को छूता है, वही इस

जगत में विचरण करता हुआ सदैव आनंद में रहता है। इसे ही मुक्तावस्था माना गया है। वाहिगुरु जी रहमत करें, विनम्रता का कोई कण हमारे हृदयों में भी बसे, ताकि यह अमोलक जीवन सार्थक हो सके।

ब्रहमंडस हैं।। खल खंडस हैं।।
पर ते पर हैं।। करुणाकर हैं।।176।।

हे वाहिगुरु ! तू सृष्टि का जीवन है। तू दुष्टों का नाश करने वाला है। तू परे से परे अर्थात् सबसे बड़ा है। तू दया का सागर है।

प्रस्तुत बंद में गुरु कलगीधर पातशाह का पावन फरमान है कि वह ईश्वर सम्पूर्ण ब्रह्मांड का मालिक है तथा दुष्टों का संहार करने वाला है। वह दया का घर है। उसका पार कोई नहीं पा सकता। उसके करुणामयी स्वरूप का गुरबाणी में अन्यत्र भी वर्णन किया गया है, यथा :

दीन दइआल दइआ निधि दोखन देखत है परु देत न हारै।।
(त्व प्रसादि सवय्ये)

अजपा जप हैं।। अथपा थप हैं।।
अक्रिता क्रित हैं।। अम्रिता म्रित हैं।।177।।

हे वाहिगुरु ! तू जपों की पहुंच से भी परे है अर्थात् तुझे किसी तरह के विशेष मंत्रों के जाप से भी वश में नहीं किया जा सकता। न ही तुझे किसी मूर्ति रूप में स्थापित करके मंदिर में बिठाया जा सकता है। तुझे किसी स्वरूप में स्थापित नहीं किया जा सकता। तू तो स्वयं ही कायम है। तेरी प्रतिमा नहीं बनाई जा सकती। तू सदैव अमर है।

कलगीधर पातशाह उस अकाल पुरख को सभी तरह के जंत्रों, मंत्रों, तंत्रों के प्रभाव से परे कथन करते हैं। वस्तुतः उस परमेश्वर के नाम के समक्ष समस्त मंत्र–तंत्र प्रभावहीन हो जाते हैं। सभी चतुराइयां धरी रह जाती हैं। श्री गुरु नानक देव जी का पावन संदेश है :

सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि।।

-(पन्ना 1)

सुखमनी साहिब में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी भी कलयुगी जीवों को समस्त सियानपें छोड़ कर ईश्वर के नाम–सुमिरन को प्रेरित करते हैं, यथा :

तजहु सिआनप सुरि जनहु सिमरहु हरि हरि राइ।।
एक आस हरि मनि रखहु नानक दूखु भरमु भउ जाइ।।

(पन्ना 281)

अम्रिता म्रित हैं।। करणा क्रित हैं।।
अक्रिता क्रित हैं।। धरणी ध्रित हैं।।178।।

हे वाहिगुरु ! तू सदा अमर है। तू दया–निधान है। तेरी कोई तस्वीर नहीं बन सकती। तू धरती का सहारा है अर्थात् तू मौत के प्रभाव से पूर्णतया रहित अमृतधारा है। (ऐसा अमृत–रस जो निर्झर बहता ही रहता है।) तू कृपा की मूर्त है। हे प्रभु ! तेरी घाड़त अर्थात् तेरा स्वरूप निर्मित नहीं हो सकता। तू पृथ्वी का आसरा है।

जपु जी साहिब में भी इसी भाव को दृढ़ाया गया है कि सबका आसरा वही एक अकाल पुरख है, यथा :

धरती होरु परै होरु होरु॥
तिस ते भारु तलै कवणु जोरु॥

(पन्ना 3)

सनातन धर्म के अनुसार सारी सृष्टि का बोझ एक सफेद बैल ने अपने सींगों पर उठाया हुआ है। अगर ऐसा है तो गुरबाणी आशयानुसार उस बैल के नीचे कोई और पृथ्वी है, उसके नीचे कोई और, तो अन्तिम बैल या पृथ्वी किसके सहारे खड़ी है ? वस्तुतः श्री गुरु नानक देव जी लाखों आकाश–पाताल मानते हैं और उनकी रचना तथा उन सबका सहारा स्वयं परमेश्वर है और उस परमेश्वर पर बार–बार कुर्बान होते हुए श्री गुरु नानक देव जी का पावन फरमान है :

वारिआ न जावा एक वार॥
जो तुधु भावै साई भली कार॥
तू सदा सलामति निरंकार॥

(पन्ना 3)

ठीक उसी प्रकार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी भी उस प्रभु पर बलिहार जाते हैं तथा उसके अनंत गुणों को बयान करते हैं।

अम्रितेस्वर हैं॥ परमेस्वर हैं॥
अक्रिता क्रित हैं॥ अम्रिता म्रित हैं॥179॥

हे वाहिगुरु ! तू ऐसा जगत का स्वामी है जिसकी शक्ति का अनुमान नहीं लगाया जा सकता। तेरी ताकत को मापा नहीं जा सकता कि तू कितना शक्तिशाली है। तू परम+ईश्वर है अर्थात् जगत का

शिरोमणि नाथ है। तेरी रचना नहीं की जा सकती। तू सबसे निराली हस्ती वाला है। तू अमृतमयी स्वरूप है।

अजबा क्रित हैं।। अम्रिता अम्रित हैं।।
नर नाइक हैं।। खल घाइक हैं।।180।।

हे वाहिगुरु ! तेरा स्वरूप आश्चर्यजनक है। तू सदैव अमर है। तू सबका मालिक है। तू दुष्टों का नाश करने वाला है।

कलगीधर पातशाह ने उस परमेश्वर को विस्माद रूप वाला तथा मौत के प्रभाव से रहित स्वरूप वाला कथन किया है। गुरु जी के अनुसार वह सबका स्वामी है। उसके गुण अकथनीय हैं।

बिस्वंभर हैं।। करुणालय हैं।।
न्रिप नाइक हैं।। सरब पाइक हैं।।181।।

हे वाहिगुरु ! तू सृष्टि का पालनहार है। तू दया (तरस) का घर है। तू बड़ा ही दयालु है। तू राजाओं का राजा है। तू सबका रक्षक है। अर्थात् सबकी रक्षा करने वाला एक तू ही है। गुरबाणी में अन्यत्र भी पंचम पातशाह ने इसी भाव को पुष्ट करते हुए फरमान किया है :

तूं साझा साहिबु बापु हमारा।।
नउ निधि तेरै अखुट भंडारा।।
जिसु तूं देहि सु त्रिपति अघावै सोई भगतु तुमारा जीउ।।
सभु को आसै तेरी बैठा।।
घट घट अंतरि तूहै वुठा।।
सभे साझीवाल सदाइनि तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ।।

(पन्ना 97)

भव भंजन हैं।। अरि गंजन हैं।।
रिपु तापन हैं।। जपु जापन हैं।।182।।

हे वाहिगुरु ! तू जन्म–मरण के चक्रव्यूह से बचाने वाला है। तू शत्रुओं को परास्त करने वाला है। शत्रुओं को तपाने वाला अर्थात् दुख देने वाला है और अपना नाम स्वयं ही जपाने वाला है।

वस्तुतः वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर सब कुछ करने की समर्थता वाला है। उसकी जिस पर कृपा–दृष्टि होती है उसकी झोली में सुमिरन की दात डाल देता है, उसे अपने चरणों की प्रीति बख्श देता है।

अकलं क्रित हैं।। सरबा क्रित हैं।।
करता कर हैं।। हरता हरि हैं।।183।।

हे वाहिगुरु ! तेरा स्वरूप कलंक रहित अर्थात् बेदाग है। तू सभी को पैदा करने वाला है। शरीरों का नाश करने वाला भी तू ही है।

प्रस्तुत बंद में गुरु कलगीधर पातशाह उस परमेश्वर के असीम गुणों का वर्णन करते हुए फरमान करते हैं कि वह परमेश्वर पावन हस्ती है, वह पूर्णतया निःकलंक है। उसकी शक्ति का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि वह **'ब्रह्म'** जिसे सृष्टि का रचयिता **'सृजनहार'** माना जाता है उसे बनाने वाला भी वह परमेश्वर ही है तथा **'शिव'** जिसे सृष्टि का संहार करने वाला माना जाता है उसका भी विनाश करने वाला प्रभु आप ही है।

उसकी रचना में कितने ही ब्रह्मा हैं, यथा **'जपु जी साहिब'** में श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है :

केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस।।
(पन्ना 7)

यही नहीं पंचम पातशाह का पावन फरमान है कि वही परमेश्वर सब कुछ करने–कराने में समर्थ है, यथा :

करन करावन करनै जोगु॥
जो तिसु भावै सोई होगु॥
खिन महि थापि उथापनहारा॥
अंतु नही किछु पारावारा॥

(पन्ना 276)

परमातम हैं॥ सरबातम हैं॥
आतम बस हैं॥ जस के जस हैं॥184॥

हे करतार ! तू सबसे ऊंची आत्मा वाला है। अतः तू ही चेतना का मूल स्त्रोत है। सरबातम अर्थात् सरब+आत्म अर्थात् सबमें मौजूद चेतना सत्ता तू ही है। तू स्वयं के अधीन है। तुझे कोई वश में नहीं कर सकता। तू स्वयं ही स्वयं के वश में है।

वस्तुतः वह परमेश्वर सबमें मौजूद है, जैसा कि भक्त नामदेव जी की पावन बाणी है :

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै॥
राम बिना को बोलै रे॥1॥रहाउ॥
एकल माटी कुंजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे॥
असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु समाना रे॥1॥
एकल चिंता राखु अनंता अउर तजहु सभ आसा रे॥
प्रणवै नामा भए निहकामा को ठाकरु को दासा रे॥

(पन्ना 988)

भुजंग प्रयास छंद॥

नमो सूरज सूरजे नमो चंद्र चद्रे॥
नमो राज राजे नमो इंद्र इंद्रे॥
नमो अंधकारे नमो तेज तेजे॥
नमो ब्रिंद ब्रिंदे नमो बीज बीजे॥185॥

हे सूर्यों के प्रखर सूर्य ! तूझे नमस्कार है। अर्थात् सूर्य को जलाल (तेज, प्रकाश) देने वाले हे प्रभु ! तुझे नमस्कार है। चन्द्रमा को शीतलता (ठंडक) देने वाले (प्रभु) तुझे नमस्कार है। वह परमेश्वर तेजस्विता एवं शीतलता दोनों ही रूपों का प्रदाता है। तू राजाओं का राजा है अर्थात् बादशाहों का बादशाह, देवताओं के देवता (इन्द्र) का भी बादशाह है। अतः देवताओं के देव तुझे नमन है। हे प्रभु ! तुझे नमस्कार है, तू ही गहन (गहरा) अंधकार है और तू ही तेज प्रकाश है अर्थात् महान चमक **'नूर'** का मूल स्त्रोत भी तू है। इस बंद में **'बीज बीजे'** का अर्थ भाई जोगिंदर सिंघ तलवाड़ा जी ने इस प्रकार किया है : "बीजों के बीज अर्थात् बीजों को अंकुरित होने की शक्ति देने वाला भी तू ही है।"

वस्तुतः संसार के प्रत्येक रूप में ईश्वर स्वयं ही विद्यमान है। इसी भाव को गुरु कलगीधर पातशाह जी ने अपनी बाणी चौपई साहिब में भी उजागर किया है, यथा :

कहूं फूल राजा है बैठा॥
कहूं सिमटि भियो संकर इकैठा॥
सगरी स्रिसटि दिखाइ अचंभव॥
आदि जुगादि सरूप सुयंभव॥19॥

(चौपई पा. 10)

नमो राजसं तामसं सांत रूपे।।
नमो परम तत्तं अतत्तं सरूपे।।
नमो जोग जोगे नमो गिआन गिआने।।
नमो मंत्र मंत्रे नमो धिआन धिआने।।186।।

हे अकाल पुरख ! तुझे नमस्कार है। माया के तीनों ही गुण तेरे द्वारा निर्मित हैं। पर तू सृष्टि–रचना के इन तीनों गुणों से परे है अर्थात् तू परम आत्मा है। तेरा स्वरूप जगत–रचना के तीनों ही गुणों से निर्मित नहीं है। माया के तीन गुण इस प्रकार माने गए हैं – **'राजस'**, माया का वह गुण जिसकी प्रेरणा से संसार के सभी व्यक्ति अपने–अपने कार्यों में लगे हैं। इसे मनीषिओं ने मानव जीवन का प्रमुख गुण माना है। **'तामस'** अर्थात् मन का अंधकार, नाम से ही स्पष्ट है अज्ञानता। अतः यह गुण जीव को रसातल की ओर धकेलता है। जहां इंसान को अपने स्वार्थ के आगे कुछ भी दिखाई नहीं देता, जहां इंसानियत का जज्बा खत्म हो जाता है। **'सांत'**, यह माया का तीसरा गुण है, यह तीनों में श्रेष्ठ है। इसका अर्थ है परहित (दूसरों की भलाई) में जीवन लगाना अर्थात् हृदय की निर्मलता तथा पवित्रता। वह ईश्वर माया के तीनों रूपों से दूर है!

तुझे नमस्कार है। सबसे कठिन तपस्या, सबसे बड़ा ज्ञान तू ही है। तू ही महामंत्र है तथा तू ही सबसे कठिन समाधि है। अतः हे प्रभु ! तेरा पावन नाम ही हमारे लिए जप, तप, मंत्र, तंत्र, कठिन योग, समाधि आदि सब कुछ है। पंचम पातशाह ने भी प्रभु–प्राप्ति के समस्त साधनों में से प्रभु–सुमिरन को सिरमौर माना है, यथा :

प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा॥
प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा॥

(पन्ना 263)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रमुख उपदेश **'नाम'** है। गुरु–कृपा से नाम की प्राप्ति होती है और इसी की बरकतों से उस परमेश्वर के चरणों की सांझ बनती है। अतः गुरबाणी आशयानुसार **'नाम'** ही सबसे श्रेष्ठ है, यथा :

नाम तुलि कछु अवरु न होइ॥
नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ॥

(पन्ना 265)

नाम तथा परमेश्वर अभेद हैं। नाम जपने वाला नर्कों में नहीं डाला जाता यथा :

नाउ तेरा निरंकारु है नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ॥

(पन्ना 465)

अतः उस परमेश्वर के चरणों में हर वक्त जीव की यही अरदास विनती होनी चाहिए :

सतिगुरु सिख को नामु धन दे॥

(पन्ना 286)

नमो जुध जुधे नमो गिआन गिआने॥
नमो भोज भोजे नमो पान पाने॥
नमो कलह करता नमो सांत रूपे॥
नमो इंद्र इंद्रे अनादं बिभूते॥187॥

हे वाहिगुरु ! तू युद्धों में श्रेष्ठ युद्ध अर्थात् धर्म–युद्ध है, तुझे नमस्कार है। ज्ञान में सर्वोत्तम ज्ञान अर्थात् ब्रह्मज्ञान, तुझे नमस्कार है। हे भोजनों में सर्वोत्तम भोजन अर्थात् आध्यात्मिक खुराक, पीने योग्य पदार्थों में सबसे उत्तम पेय पदार्थ अर्थात् अमृत रस, तुझे नमस्कार है।

अद्वैत रूप में तू जगत के समस्त झगड़ों का कारण तू ही है। द्वैत रूप मे उन समस्त झगड़ों को शांत करने वाला भी तू ही है। अतः सभी विवादों को निपटा कर पुनः शांति स्थापित करने वाला भी तू ही है। तुझे नमस्कार है। इंद्रों के इंद्र, राजाओं के राजा प्रभु तुझे नमस्कार है। हे आदि रहित (अनादि) स्वरूप पारब्रह्म अनंत सम्पदा के मालिक प्रभु, तुझे नमस्कार है।

प्रस्तुत बंद में कलगीधर पिता उस बादशाहों के बादशाह प्रभु के समस्त रूपों, नामों पर कुर्बान जाते हैं, जैसा कि गुरबाणी में अन्यत्र भी यही भाव स्पष्ट होता है, यथा :

बलिहारी जाउ जेते तेरे नाव है।।

(पन्ना 1168।।

कलंकार रूपे अलंकार अलंके।।
नमो आस आसे नमो बांक बंके ।।
अभंगी सरूपे अनंगी अनामे।।
त्रिभंगी त्रिकाले अनंगी अकामे।।188।।

हे वाहिगुरु ! तेरा स्वरूप बेदाग है अर्थात् कलंक से रहित है। सुंदर व्यक्तियों को सुंदरता देने वाला प्रभु, तुझे नमस्कार है। समस्त जीवों की आशाएं पूर्ण करने वाला भी तू ही है। अतः तू ही सबकी आशा का आधार है। तू सबसे सुन्दर है, तुझे नमस्कार है।

हे मालिक ! तेरी हस्ती सदा सलामत है अर्थात् तेरा वजूद कभी भी नष्ट होने वाला नहीं है। तू अंग रहित है, तेरा कोई एक विशेष नाम नहीं है अर्थात् तू समस्त नामों से जाना जाता है। तू तीनों लोकों का विनाश करने वाला है। तू तीनों कालों (भूत काल, वर्तमान काल तथा भविष्य काल) में सदा कायम रहने वाला है। तेरा कोई अंग नहीं है। तू समस्त कामनाओं से रहित है अर्थात् कोई इच्छा तुझे मोह नहीं सकती।

एक अछरी छंद॥

अजै॥ अलै॥ अभै॥ अबै॥189॥

हे प्रभु ! तू अविजित है, अतः तुझे कोई हरा नहीं सकता। तू अविनाशी है अर्थात् तुझे कोई नाश नहीं कर सकता। तुझे किसी से भी डर नहीं है। तू भय से मुक्त है। तू मौत रहित है, अतः तुझे मृत्यु का भी भय नहीं है।

वस्तुतः उस अभय प्रभु का भय–अदब जिस मनुष्य के हृदय में बसा रहता है उसे भी दुनिया का कोई भय नहीं सता सकता। ऐसा प्राणी उस सर्वशक्तिशाली प्रभु का सुमिरन करता हुआ समस्त चिंताओं से मुक्त हो जाता है।

अभू॥ अजू॥ अनास॥ अकास॥190॥

हे प्रभु ! तू अजन्मा है अर्थात् आवागमन से सर्वथा मुक्त है। तू अचल है अर्थात् तेरे सिंहासन को कोई हिला नहीं सकता। तेरी हस्ती सदैव स्थिर है। तू नाश रहित है, तू आकाश की तरह सर्वत्र मौजूद है अर्थात् तू सर्वव्यापी है।

अगंज॥ अभंज॥ अलक्ख॥ अभक्ख॥191॥

हे प्रभु ! तुझे कोई जीत नहीं सकता। तुझे कोई छिन्न–छिन्न नहीं कर सकता। तुझे कोई तोड़ नहीं सकता। तू अदृश्य है अर्थात् इन ज्ञान इंद्रियों की तेरे तक पहुंच नहीं है। वस्तुतः तू जीव की समझ से परे है। तू निराहारी है अर्थात् तेरी कोई खुराक नहीं है। **'अभक्ख'** शब्द का अर्थ कुछ विद्वानों द्वारा (काल–ग्रसित) होने से मुक्त किया गया है अर्थात् काल तुझे अपना ग्रास नहीं बना सकता।

अकाल ॥ दिआल ॥ अलेख ॥ अभेख ॥192 ॥

हे प्रभु ! तू काल रहित है। तू मौत से परे है। तू दया का घर है अर्थात् तू बड़ा दयालु है। तू कर्म–रेखाओं से रहित है। तेरा कोई विशेष पहरावा नहीं है।

अनाम ॥ अकाम ॥ अगाह ॥ अढाह ॥193 ॥

हे वाहिगुरु ! तू किसी विशेष नाम से रहित है अर्थात् तेरा कोई एक नाम नहीं है। तुझे कोई कामना नहीं है। तू अथाह है अर्थात् तेरा पार नहीं पाया जा सकता। तुझे कोई गिरा नहीं सकता।

अनाथे ॥ प्रमाथे ॥ अजोनी ॥ अमोनी ॥194 ॥

हे प्रभु ! तेरे ऊपर कोई स्वामी नहीं है अर्थात् तू पूर्णतया आवागमन से मुक्त है, क्योंकि जहां जन्म ही नहीं वहां मृत्यु का सवाल ही नहीं उठता। तू मौन धारण करके नहीं बैठा अर्थात् तू स्वयं सब जीवों से सब तरह के क्रिया–कलाप कर रहा है।

न रागे ॥ न रंगे ॥ न रूपे ॥ न रेखे ॥195 ॥

हे परमेश्वर ! तुझे किसी से किसी तरह का मोह नहीं है अर्थात् तू मोह–बंधन से मुक्त है। तेरा न कोई विशेष रंग है, न रूप (आकृति) और न ही कोई विशेष चिह्न है।

अकरमं ।। अभरमं ।। अगंजे ।। अलेखे ।।196 ।।

हे प्रभु ! तू समस्त कर्मों के बंधन से स्वतन्त्र है, न ही तुझे किसी किस्म का भ्रम-भुलेखा है तथा न ही तुझे किसी धार्मिक रस्मों (रीति-रिवाजों) की आवश्यकता है। तुझे कोई जीत नहीं सकता, क्योंकि तुझे कोई हराने वाला है ही नहीं और न ही तेरी कोई तस्वीर बनाई जा सकती है।

भुजंग प्रयात छंद ।।
नमसतुल प्रणामे समसतुल प्रणासे ।।
अगंजुल अनामे समसतुल निवासे ।।
त्रिकामं बिभूते समसतुल सरूपे ।।
कुकरमं प्रणासी सुधरमं बिभूते ।।197 ।।

उपरोक्त बंद में कलगीधर पातशाह उस नमस्कारयोग प्रभु को नमस्कार करते हैं कि हे वंदनीय प्रभु ! तुझे नमन है। जो सब जीवों का नाश करने वाला है उसे नमस्कार है, जो नाश रहित है। सर्वत्र तथा समस्त जीवों में जिसका निवास है उसे नमस्कार है, उस वाहिगुरु को, जिसके प्रताप के समक्ष कोई कामना अपना प्रभाव नहीं डाल सकती। संसार के सभी प्राणी उसी निराकार का आकार है। नमस्कार है उस प्रभु को जो कुकर्मों अथवा बुरी ताकतों का विनाशकर्त्ता है। जिसके प्रताप के ये लक्षण हैं कि वह अपने समस्त कर्त्तव्यों (फर्जों) को भली-भांति निभा रहा है अर्थात् वह प्रभु अपने सभी कर्त्तव्यों को समग्रता से पूर्ण कर रहा है।

वस्तुतः वह ईश्वर समस्त बुराइयों का समूल नाश करने वाला है तथा संसार के सभी दायित्वों को बाखूबी निभा रहा है।

सदा सच्चिदानंद सत्रं प्रणासी।।
करीमुल बिभूते गजाइब गनीमे।।
हरीअं करीअं करीमुल रहीमे।।198।।

हे वाहिगुरु ! तू सदैव सद-चित्त-आनंद-स्वरूप है। हे प्रभु ! तुझे नमस्कार है, तू सदा सचमुच मौजूद है तथा आनंद देने वाला है। तू शत्रुओं का नाश करने वाला है, सब जीवों पर कृपा करने वाला है, सब जीवों को उत्पन्न करने वाला है तथा सब प्राणियों में तेरा ही निवास है।

हे ईश्वर ! तू आलौकिक (दिव्य) सम्पदा वाला है। तेरा प्रताप आश्चर्यजनक है। तू शत्रुओं पर कहर बरसाने वाला है अर्थात् वैरियों के जीवन में कोहराम मचाने वाला है। तू स्वयं ही निर्माण करने वाला तथा स्वयं ही विनाश का कारण है अर्थात् समस्त उत्पत्ति तथा संहार तेरे अधीन है। तू कृपालु तथा दयालु है। वस्तुतः हे परवरदिगार ! तू रहमतों का सागर है।

चत्त्र चक्क्र वरती चत्त्र चक्क्र भुगते।।
सुयंभव सुभं सरबदा सरब ज़ुगते।।
दुकालं प्रणासी दिआलं सरूपे।।
सदा अंग संगे अभंगं बिभूते।।199।।

हे वाहिगुरु ! तुझे नमस्कार है। तू तीनों लोकों (आकाश, पाताल तथा मातलोक) में मौजूद है अर्थात् समस्त दिशाओं में जर्रे-जर्रे में तू ही समाया हुआ है। हे प्रभु ! सारे जगत में तेरा ही हुक्म चल रहा है। तू स्वयं से प्रकट हुआ है अर्थात् तू स्वयं से ही प्रकाशवान है, जो सुन्दर स्वरूप है।

हे वाहिगुरु ! **'दुकालं'** (दोनों समय के) अर्थात् प्रभु दोनों समय के (जन्म-मृत्यु) के दुखों का नाश करने वाला है। तू दयालु स्वरूप है। तू सदैव सब जीवों के अंग-संग है अर्थात् तू हर वक्त प्रत्येक जीव के साथ है। तेरा प्रताप कदाचित नाश होने वाला नहीं है अर्थात् तू युगों-युग अटल एवं अविनाशी है।

गुरु कलगीधर पातशाह के पावन मुखारबिंद से उच्चारण की गई पावन बाणी **'जापु साहिब'** में परमेश्वर के अनंत गुणों का ओजस्वी शैली, वीर रस में गुणगान किया गया है। पूर्ण श्रद्धा एवं एकाग्रता से इस बाणी का पाठ हृदय में आलौकिक शक्ति का संचार करता है। आत्मिक जीवन देने वाले नाम रूपी अमृत को जो पीता हैं उसका जीवन धन्य हो जाता है, जैसा कि गुरबाणी का प्रमाण है :

अंम्रित बचन सतिगुर की बाणी
जो बोलै सो मुखि अंम्रितु पावै॥

(पन्ना 494)

वस्तुतः सबसे बड़ा परोपकारी वह प्रभु स्वयं है जिसकी रहमत का सदका मानव जीवन मिला है। जो गुणहीनों को भी दातें बख्श रहा है उस सतिगुरु ने पावन बाणी से जोड़कर समस्त वहमों-भ्रमों से मुक्त कर दिया है :

परउपकारी सरब सधारी सफल दरसन सहजइआ॥
कहु नानक निरगुण कउ दाता चरण कमल उर धरिआ॥

(पन्ना 533)

वस्तुतः वीर रस से परिपूर्ण ओजस्वी शैली में रचित पावन बाणी **"जापु साहिब"** को पढ़-सुन कर हृदय में यही भाव उदित होते हैं जैसा कि गुरुबाणी का निर्मल संदेश है :-

हरि इको दाता सेवीऐ हरि इक धिआइऐ॥
हरि इको दाता मंगीऐ मन चिंदिआ पाईऐ॥

(पन्ना 590)

वाहिगुरु रहमत करे ! गुरु कलगीधर पातशाह के मुखारबिंद से उच्चारण की गई पावन बाणी **"जापु साहिब"** को पढ़-सुन कर अकाल पुरख पारब्रह्म परमेश्वर के चरण-कमलों से हमारी भी प्रीत बने और हमारा लोक-परलोक सफल हो जाए।

वाहिगुरु जी का खालसा॥
वाहिगुरु जी की फतह॥